

गिनती

इसराईलियों की पहली मर्दमशुमारी

1 इसराईलियों को मिसर से निकले हुए एक साल से ज़्यादा अरसा गुज़र गया था। अब तक वह दशते-सीना में थे। दूसरे साल के दूसरे महीने के पहले दिन रब मुलाकात के ख़ैमे में मूसा से हमकलाम हुआ। उसने कहा,

2 “तू और हारून तमाम इसराईलियों की मर्दमशुमारी कुंभों और आबाई घरानों के मुताबिक़ करना। उन तमाम मर्दों की फ़हरिस्त बनाना

3 जो कम अज़ कम बीस साल के और जंग लड़ने के काबिल हों।

4 इसमें हर क़बीले के एक ख़ानदान का सरपरस्त तुम्हारी मदद करे।

5 यह उनके नाम हैं :

रुबिन के क़बीले से इलीसूर बिन शदियूर,

6 शमौन के क़बीले से सलूमियेल बिन सूरीशद्दी,

7 यहदाह के क़बीले से नहसोन बिन अम्मीनदाब,

8 इशकार के क़बीले से नतनियेल बिन जुगर,

9 ज़बूलून के क़बीले से इलियाब बिन हेलोन,

10 यूसुफ़ के बेटे इफ़राईम के क़बीले से इलीसमा बिन अम्मीहद,

यूसुफ़ के बेटे मनस्सी के क़बीले से जमलियेल बिन फ़दाहसूर,

11 बिनयमीन के क़बीले से अबिदान बिन जिदौनी,

12 दान के क़बीले से अखियज़र बिन अम्मीशद्दी,

13 आशर के क़बीले से फ़जियेल बिन अकरान,

14 ज़द के क़बीले से इलियासफ़ बिन दऊएल,

15 नफ़ताली के क़बीले से अखीरा बिन एनान।”

16 यही मर्द ज़मात से इस काम के लिए बुलाए गए। वह अपने क़बीलों के राहनुमा और कुंभों के सरपरस्त थे।

17 इनकी मदद से मूसा और हारून ने

18 उसी दिन पूरी जमात को इकट्ठा किया। हर इसराईली मर्द जो कम अज़ कम 20 साल का था रजिस्टर में दर्ज किया गया। रजिस्टर की तरतीब उनके कुंभों और आबाई घरानों के मुताबिक थी।

19 सब कुछ वैसा ही किया गया जैसा रब ने हुक्म दिया था। मूसा ने सीना के रेगिस्तान में लोगों की मर्दमशुमारी की। नतीजा यह निकला :

20-21 रुबिन के कबीले के 46,500 मर्द,

22-23 शमौन के कबीले के 59,300 मर्द,

24-25 जद के कबीले के 45,650 मर्द,

26-27 यहदाह के कबीले के 74,600 मर्द,

28-29 इशकार के कबीले के 54,400 मर्द,

30-31 ज़बूलून के कबीले के 57,400 मर्द,

32-33 यूसुफ के बेटे इफराईम के कबीले के 40,500 मर्द,

34-35 यूसुफ के बेटे मनस्सी के कबीले के 32,200 मर्द,

36-37 बिनयमीन के कबीले के 35,400 मर्द,

38-39 दान के कबीले के 62,700 मर्द,

40-41 आशर के कबीले के 41,500 मर्द,

42-43 नफ़ताली के कबीले के 53,400 मर्द।

44 मूसा, हारून और कबीलों के बारह राहनुमाओं ने इन तमाम आदमियों को गिना।

45-46 उनकी पूरी तादाद 6,03,550 थी।

47 लेकिन लावियों की मर्दमशुमारी न हुई,

48 क्योंकि रब ने मूसा से कहा था,

49 “इसराईलियों की मर्दमशुमारी में लावियों को शामिल न करना।

50 इसके बजाए उन्हें शरीअत की सुकूनतगाह और उसका सारा सामान सँभालने की जिम्मादारी देना। वह सफ़र करते वक़्त यह ख़ैमा और उसका सारा सामान उठाकर ले जाएँ, उस की खिदमत के लिए हाज़िर रहें और स्क़ते वक़्त उसे अपने ख़ैमों से घेरे रखें।

51 रवाना होते वक़्त वही ख़ैमे को समेटें और स्क़ते वक़्त वही उसे लगाएँ। अगर कोई और उसके करीब आए तो उसे सज़ाए-मौत दी जाएगी।

52 बाक़ी इसराईली ख़ैमागाह में अपने अपने दस्ते के मुताबिक़ और अपने अपने अलम के इर्दगिर्द अपने ख़ैमे लगाएँ।

53 लेकिन लावी अपने खैमों से शरीअत की सुकूनतगाह को घेर लें ताकि मेरा गजब किसी गलत शरख्स के नज़दीक आने से इसराईलियों की जमात पर नाज़िल न हो जाए। यों लावियों को शरीअत की सुकूनतगाह को सँभालना है।”

54 इसराईलियों ने वैसा ही किया जैसा रब ने मूसा को हुक्म दिया था।

2

खैमागाह में कबीलों की तरतीब

1 रब ने मूसा और हारून से कहा

2 कि इसराईली अपने खैमे कुछ फासले पर मुलाकात के खैमे के इर्दगिर्द लगाएँ। हर एक अपने अपने अलम और अपने अपने आबाई घराने के निशान के साथ खैमाज़न हो।

3 इन हिदायात के मुताबिक मक़दिस के मशरिफ़ में यहदाह का अलम था जिसके इर्दगिर्द तीन दस्ते खैमाज़न थे। पहले, यहदाह का कबीला जिसका कमाँडर नहसोन बिन अम्मीनदाब था,

4 और जिसके लशकर के 74,600 फ़ौजी थे।

5 दूसरे, इशकार का कबीला जिसका कमाँडर नतनियेल बिन जुगर था,

6 और जिसके लशकर के 54,400 फ़ौजी थे।

7 तीसरे, ज़बूलून का कबीला जिसका कमाँडर इलियाब बिन हेलोन था

8 और जिसके लशकर के 57,400 फ़ौजी थे।

9 तीनों कबीलों के फ़ौजियों की कुल तादाद 1,86,400 थी। खाना होते वक़्त यह आगे चलते थे।

10 मक़दिस के जुनूब में रुबिन का अलम था जिसके इर्दगिर्द तीन दस्ते खैमाज़न थे। पहले, रुबिन का कबीला जिसका कमाँडर इलीसूर बिन शदियूर था,

11 और जिसके 46,500 फ़ौजी थे।

12 दूसरे, शमौन का कबीला जिसका कमाँडर सलूमियेल बिन सूरीशद्दी था,

13 और जिसके 59,300 फ़ौजी थे।

14 तीसरे, ज़द का कबीला जिसका कमाँडर इलियासफ़ बिन दऊएल था,

15 और जिसके 45,650 फ़ौजी थे।

16 तीनों कबीलों के फ़ौजियों की कुल तादाद 1,51,450 थी। खाना होते वक़्त यह मशरिफ़ी कबीलों के पीछे चलते थे।

17 इन जुनूबी कबीलों के बाद लावी मुलाकात का खैमा उठाकर कबीलों के ऐन बीच में चलते थे। कबीले उस तरतीब से रवाना होते थे जिस तरतीब से वह अपने खैमे लगाते थे। हर कबीला अपने अलम के पीछे चलता था।

18 मकदिस के मगरिब में इफराईम का अलम था जिसके इर्दगिर्द तीन दस्ते खैमाजन थे। पहले, इफराईम का कबीला जिसका कमाँडर इलीसमा बिन अम्मीहद था,

19 और जिसके 40,500 फ़ौजी थे।

20 दूसरे, मनस्सी का कबीला जिसका कमाँडर जमलियेल बिन फ़दाहसूर था,

21 और जिसके 32,200 फ़ौजी थे।

22 तीसरे, बिनयमीन का कबीला जिसका कमाँडर अबिदान बिन जिदौनी था,

23 और जिसके 35,400 फ़ौजी थे।

24 तीनों कबीलों के फ़ौजियों की कुल तादाद 1,08,100 थी। रवाना होते वक़्त यह जुनूबी कबीलों के पीछे चलते थे।

25 मकदिस के शिमाल में दान का अलम था जिसके इर्दगिर्द तीन दस्ते खैमाजन थे। पहले, दान का कबीला जिसका कमाँडर अखियज़र बिन अम्मीशद था,

26 और जिसके 62,700 फ़ौजी थे।

27 दूसरे, आशर का कबीला जिसका कमाँडर फ़जियेल बिन अकरान था,

28 और जिसके 41,500 फ़ौजी थे।

29 तीसरे, नफ़ताली का कबीला जिसका कमाँडर अखीरा बिन एनान था,

30 और जिसके 53,400 फ़ौजी थे।

31 तीनों कबीलों की कुल तादाद 1,57,600 थी। वह आखिर में अपना अलम उठाकर रवाना होते थे।

32 पूरी खैमागाह के फ़ौजियों की कुल तादाद 6,03,550 थी।

33 सिर्फ़ लावी इस तादाद में शामिल नहीं थे, क्योंकि रब ने मूसा को हुक्म दिया था कि उनकी भरती न की जाए।

34 यों इसराईलियों ने सब कुछ उन हिदायात के मुताबिक़ किया जो रब ने मूसा को दी थीं। उनके मुताबिक़ ही वह अपने झंडों के इर्दगिर्द अपने खैमे लगाते थे और उनके मुताबिक़ ही अपने कुंबों और आबाई घरानों के साथ रवाना होते थे।

3

हारून के बेटे

1 यह हारून और मूसा के खानदान का बयान है। उस वक्त का जिक्र है जब रब ने सीना पहाड़ पर मूसा से बात की।

2 हारून के चार बेटे थे। बड़ा बेटा नदब था, फिर अबीह, इलियज़र और इतमर।

3 यह इमाम थे जिनको मसह करके इस खिदमत का इख्तियार दिया गया था।

4 लेकिन नदब और अबीह उस वक्त मर गए जब उन्होंने दशते-सीना में रब के हुज़ूर नाजायज़ आग पेश की। चूँकि वह बेऔलाद थे इसलिए हारून के जीते-जी सिर्फ़ इलियज़र और इतमर इमाम की खिदमत संरंजाम देते थे।

लावियों की मक़दिस में ज़िम्मादारी

5 रब ने मूसा से कहा,

6 “लावी के क़बीले को लाकर हारून की खिदमत करने की ज़िम्मादारी दे।

7 उन्हें उसके लिए और पूरी जमात के लिए मुलाक़ात के ख़ैमे की खिदमात सँभालना है।

8 वह मुलाक़ात के ख़ैमे का सामान सँभालें और तमाम इसराइलियों के लिए मक़दिस के फ़रायज़ अदा करें।

9 तमाम इसराइलियों में से सिर्फ़ लावियों को हारून और उसके बेटों की खिदमत के लिए मुक़र्रर कर।

10 लेकिन सिर्फ़ हारून और उसके बेटों को इमाम की हैसियत हासिल है। जो भी बाक़ियों में से उनकी ज़िम्मादारियाँ उठाने की कोशिश करेगा उसे सज़ाए-मौत दी जाएगी।”

11 रब ने मूसा से यह भी कहा,

12 “मैंने इसराइलियों में से लावियों को चुन लिया है। वह तमाम इसराइली पहलौठों के एवज़ मेरे लिए मख़सूस हैं,

13 क्योंकि तमाम पहलौठे मेरे ही हैं। जिस दिन मैंने मिसर में तमाम पहलौठों को मार दिया उस दिन मैंने इसराइल के पहलौठों को अपने लिए मख़सूस किया, खाह वह इनसान के थे या हैवान के। वह मेरे ही हैं। मैं रब हूँ।”

लावियों की मर्दमशुमारी

14 रब ने सीना के रेगिस्तान में मूसा से कहा,

15 “लावियों को गिनकर उनके आबाई घरानों और कुंबों के मुताबिक़ रजिस्टर में दर्ज करना। हर बेटे को गिनना है जो एक माह या इससे ज़ायद का है।”

16 मूसा ने ऐसा ही किया।

- 17 लावी के तीन बेटे जैरसोन, क्रिहात और मिरारी थे।
 18 जैरसोन के दो कुंबे उसके बेटों लिबनी और सिमई के नाम रखते थे।
 19 क्रिहात के चार कुंबे उसके बेटों अमराम, इज़हार, हबस्न और उज्जियेल के नाम रखते थे।
 20 मिरारी के दो कुंबे उसके बेटों महली और मूशी के नाम रखते थे। गरज़ लावी के कबीले के कुंबे उसके पोतों के नाम रखते थे।
 21 जैरसोन के दो कुंबों बनाम लिबनी और सिमई
 22 के 7,500 मर्द थे जो एक माह या इससे जायद के थे।
 23 उन्हें अपने ख़ैमे मगरिब में मकदिस के पीछे लगाने थे।
 24 उनका राहनुमा इलियासफ़ बिन लाएल था,
 25 और वह ख़ैमे को सँभालते थे यानी उस की पोशिशें, ख़ैमे के दरवाज़े का परदा,
 26 ख़ैमे और कुरबानगाह की चारदीवारी के परदे, चारदीवारी के दरवाज़े का परदा और तमाम रस्से। इन चीज़ों से मुताल्लिक सारी ख़िदमत उनकी जिम्मादारी थी।
 27 क्रिहात के चार कुंबों बनाम अमराम, इज़हार, हबस्न और उज्जियेल
 28 के 8,600 मर्द थे जो एक माह या इससे जायद के थे और जिनको मकदिस की ख़िदमत करनी थी।
 29 उन्हें अपने डेरे मकदिस के जुनूब में डालने थे।
 30 उनका राहनुमा इलीसफ़न बिन उज्जियेल था,
 31 और वह यह चीज़ें सँभालते थे : अहद का संदूक, मेज़, शमादान, कुरबानगाहें, वह बरतन और साज़ो-सामान जो मकदिस में इस्तेमाल होता था और मुकद्दसतरीन कमरे का परदा। इन चीज़ों से मुताल्लिक सारी ख़िदमत उनकी जिम्मादारी थी।
 32 हास्न इमाम का बेटा इलियज़र लावियों के तमाम राहनुमाओं पर मुक़रर था। वह उन तमाम लोगों का इंचार्ज था जो मकदिस की देख-भाल करते थे।
 33 मिरारी के दो कुंबों बनाम महली और मूशी
 34 के 6,200 मर्द थे जो एक माह या इससे जायद के थे।
 35 उनका राहनुमा सूरियेल बिन अबीख़ैल था। उन्हें अपने डेरे मकदिस के शिमाल में डालने थे,

36 और वह यह चीजें सँभालते थे : खैमे के तख्ते, उसके शहतीर, खंबे, पाए और इस तरह का सारा सामान। इन चीजों से मुताल्लिक सारी खिदमत उनकी ज़िम्मादारी थी।

37 वह चारदीवारी के खंबे, पाए, मेखें और रस्से भी सँभालते थे।

38 मूसा, हारून और उनके बेटों को अपने डेरे मशरिक़ में मक़दिस के सामने डालने थे। उनकी ज़िम्मादारी मक़दिस में बनी इसराईल के लिए खिदमत करना थी। उनके अलावा जो भी मक़दिस में दाख़िल होने की कोशिश करता उसे सज़ाए-मौत देनी थी।

39 उन लावी मर्दों की कुल तादाद जो एक माह या इससे ज़ायद के थे 22,000 थी। रब के कहने पर मूसा और हारून ने उन्हें कुंभों के मुताबिक़ गिनकर रजिस्टर में दर्ज किया।

लावी के कबीले के मर्द पहलौठों के एवज़ी हैं

40 रब ने मूसा से कहा, “तमाम इसराईली पहलौठों को गिनना जो एक माह या इससे ज़ायद के हैं और उनके नाम रजिस्टर में दर्ज करना।

41 उन तमाम पहलौठों की जगह लावियों को मेरे लिए मख़सूस करना। इसी तरह इसराईलियों के मवेशियों के पहलौठों की जगह लावियों के मवेशी मेरे लिए मख़सूस करना। मैं रब हूँ।”

42 मूसा ने ऐसा ही किया जैसा रब ने उसे हुक्म दिया। उसने तमाम इसराईली पहलौठे

43 जो एक माह या इससे ज़ायद के थे गिन लिए। उनकी कुल तादाद 22,273 थी।

44 रब ने मूसा से कहा,

45 “मुझे तमाम इसराईली पहलौठों की जगह लावियों को पेश करना। इसी तरह मुझे इसराईलियों के मवेशियों की जगह लावियों के मवेशी पेश करना। लावी मेरे ही हैं। मैं रब हूँ।

46 लावियों की निसबत बाक़ी इसराईलियों के 273 पहलौठे ज़्यादा हैं। उनमें से

47 हर एक के एवज़ चाँदी के पाँच सिक्के ले जो मक़दिस के वज़न के मुताबिक़ हों (फ़ी सिक्का तक़रीबन 11 ग्राम)।

48 यह पैसे हारून और उसके बेटों को देना।”

49 मूसा ने ऐसा ही किया।

50 यों उसने चाँदी के 1,365 सिक्के (तकरीबन 16 किलोग्राम) जमा करके
51 हासून और उसके बेटों को दिए, जिस तरह रब ने उसे हुक्म दिया था।

4

क्रिहातियों की जिम्मादारियाँ

- 1 रब ने मूसा और हासून से कहा,
- 2 “लावी के कबीले में से क्रिहातियों की मर्दमशुमारी उनके कुंभों और आबाई घरानों के मुताबिक करना।
- 3 उन तमाम मर्दों को रजिस्टर में दर्ज करना जो 30 से लेकर 50 साल के हैं और मुलाकात के खैमे में खिदमत करने के लिए आ सकते हैं।
- 4 क्रिहातियों की खिदमत मुकद्दसतरीन कमरे की देख-भाल है।
- 5 जब खैमे को सफ़र के लिए समेटना है तो हासून और उसके बेटे दाखिल होकर मुकद्दसतरीन कमरे का परदा उतारें और उसे शरीअत के संदूक पर डाल दें।
- 6 इस पर वह तख़स की खालों का गिलाफ़ और आखिर में पूरी तरह नीले रंग का कपड़ा बिछाएँ। इसके बाद वह संदूक को उठाने की लकडियाँ लगाएँ।
- 7 वह उस मेज़ पर भी नीले रंग का कपड़ा बिछाएँ जिस पर रब को रोटी पेश की जाती है। उस पर थाल, प्याले, मै की नज़रें पेश करने के बरतन और मरतबान रखे जाएँ। जो रोटी हमेशा मेज़ पर होती है वह भी उस पर रहे।
- 8 हासून और उसके बेटे इन तमाम चीज़ों पर क्रिरमिज़ी रंग का कपड़ा बिछाकर आखिर में उनके ऊपर तख़स की खालों का गिलाफ़ डालें। इसके बाद वह मेज़ को उठाने की लकडियाँ लगाएँ।
- 9 वह शमादान और उसके सामान पर यानी उसके चराग़, बत्ती कतरने की कैचियों, जलते कोयले के छोटे बरतनों और तेल के बरतनों पर नीले रंग का कपड़ा रखें।
- 10 यह सब कुछ वह तख़स की खालों के गिलाफ़ में लपेटें और उसे उठाकर ले जाने के लिए एक चौखटे पर रखें।
- 11 वह बखूर जलाने की सोने की कुरबानगाह पर भी नीले रंग का कपड़ा बिछाकर उस पर तख़स की खालों का गिलाफ़ डालें और फिर उसे उठाने की लकडियाँ लगाएँ।

12 वह सारा सामान जो मुकद्दस कमरे में इस्तेमाल होता है लेकर नीले रंग के कपड़े में लपेटें, उस पर तखस की खालों का गिलाफ़ डालें और उसे उठाकर ले जाने के लिए एक चौखटे पर रखें।

13 फिर वह जानवरों को जलाने की कुरबानगाह को राख से साफ़ करके उस पर अरगवानी रंग का कपड़ा बिछाएँ।

14 उस पर वह कुरबानगाह की खिदमत के लिए सारा ज़रूरी सामान रखें यानी छिड़काव के कटोरे, जलते हुए कोयले के बरतन, बेलचे और काँटे। इस सामान पर वह तखस की खालों का गिलाफ़ डालकर कुरबानगाह को उठाने की लकड़ियाँ लगाएँ।

15 सफ़र के लिए रवाना होते वक़्त यह सब कुछ उठाकर ले जाना किहातियों की ज़िम्मादारी है। लेकिन लाज़िम है कि पहले हास्न और उसके बेटे यह तमाम मुकद्दस चीज़ें ढँपें। किहाती इनमें से कोई भी चीज़ न छुएँ वरना मर जाएंगे।

16 हास्न इमाम का बेटा इलियज़र पूरे मुकद्दस ख़ैमे और उसके सामान का इंचार्ज हो। इसमें चरागों का तेल, बखूर, गल्ला की रोज़ाना नज़र और मसह का तेल भी शामिल है।”

17 रब ने मूसा और हास्न से कहा,

18 “ख़बरदार रहो कि किहात के कुंभे लावी के क़बीले में से मिटने न पाएँ।

19 चुनौचे जब वह मुकद्दसतरिन चीज़ों के पास आएँ तो हास्न और उसके बेटे हर एक को उस सामान के पास ले जाएँ जो उसे उठाकर ले जाना है ताकि वह न मरें बल्कि जीते रहें।

20 किहाती एक लमहे के लिए भी मुकद्दस चीज़ें देखने के लिए अंदर न जाएँ, वरना वह मर जाएंगे।”

ज़ैरसोनियों की ज़िम्मादारियाँ

21 फिर रब ने मूसा से कहा,

22 “ज़ैरसोन की औलाद की मर्दुमशुमारी भी उनके आबाई घरानों और कुंभों के मुताबिक़ करना।

23 उन तमाम मर्दों को रजिस्टर में दर्ज करना जो 30 से लेकर 50 साल के हैं और मुलाक़ात के ख़ैमे में खिदमत के लिए आ सकते हैं।

24 वह यह चीज़ें उठाकर ले जाने के ज़िम्मादार हैं :

25 मुलाकात का खैमा, उस की छत, छत पर रखी हुई तखस की खाल की पोशिश, खैमे के दरवाजे का परदा,

26 खैमे और कुरबानगाह की चारदीवारी के परदे, चारदीवारी के दरवाजे का परदा, उसके रस्से और उसे लगाने का बाक्री सामान। वह उन तमाम कामों के ज़िम्मादार हैं जो इन चीज़ों से मुंसलिक हैं।

27 जैरसोनियों की पूरी खिदमत हासून और उसके बेटों की हिदायात के मुताबिक़ हो। ख़बरदार रहो कि वह सब कुछ ऐन हिदायात के मुताबिक़ उठाकर ले जाएं।

28 यह सब मुलाकात के खैमे में जैरसोनियों की ज़िम्मादारियाँ हैं। इस काम में हासून इमाम का बेटा इतमर उन पर मुकर्रर है।”

मिरारियों की ज़िम्मादारियाँ

29 रब ने कहा, “मिरारी की औलाद की मर्दुमशुमारी भी उनके आबाई घरानों और कुंबों के मुताबिक़ करना।

30 उन तमाम मर्दों को रजिस्टर में दर्ज करना जो 30 से लेकर 50 साल के हैं और मुलाकात के खैमे में खिदमत के लिए आ सकते हैं।

31 वह मुलाकात के खैमे की यह चीज़ें उठाकर ले जाने के ज़िम्मादार हैं: दीवार के तख़्ते, शहतीर, खंबे और पाए,

32 फिर खैमे की चारदीवारी के खंबे, पाए, मेखें, रस्से और यह चीज़ें लगाने का सामान। हर एक को तफ़सील से बताना कि वह क्या क्या उठाकर ले जाए।

33 यह सब कुछ मिरारियों की मुलाकात के खैमे में ज़िम्मादारियों में शामिल है। इस काम में हासून इमाम का बेटा इतमर उन पर मुकर्रर हो।”

लावियों की मर्दुमशुमारी

34 मूसा, हासून और जमात के राहनुमाओं ने किहातियों की मर्दुमशुमारी उनके कुंबों और आबाई घरानों के मुताबिक़ की।

35-37 उन्होंने उन तमाम मर्दों को रजिस्टर में दर्ज किया जो 30 से लेकर 50 साल के थे और जो मुलाकात के खैमे में खिदमत कर सकते थे। उनकी कुल तादाद 2,750 थी। मूसा और हासून ने सब कुछ वैसा ही किया जैसा रब ने मूसा की मारिफ़त फ़रमाया था।

38-41 फिर जैरसोनियों की मर्दमशुमारी उनके कुंबों और आबाई घरानों के मुताबिक हुई। खिदमत के लायक मर्दों की कुल तादाद 2,630 थी। मूसा और हास्न ने सब कुछ वैसा ही किया जैसा रब ने मूसा के ज़रीए फ़रमाया था।

42-45 फिर मिरारियों की मर्दमशुमारी उनके कुंबों और आबाई घरानों के मुताबिक हुई। खिदमत के लायक मर्दों की कुल तादाद 3,200 थी। मूसा और हास्न ने सब कुछ वैसा ही किया जैसा रब ने मूसा के ज़रीए फ़रमाया था।

46-48 लावियों के उन मर्दों की कुल तादाद 8,580 थी जिन्हें मुलाकात के ख़ैमे में खिदमत करना और सफ़र करते वक़्त उसे उठाकर ले जाना था।

49 मूसा ने रब के हुक्म के मुताबिक हर एक को उस की अपनी अपनी जिम्मादारी सौंपी और उसे बताया कि उसे क्या क्या उठाकर ले जाना है। यों उनकी मर्दमशुमारी रब के उस हुक्म के ऐन मुताबिक की गई जो उसने मूसा की मारिफ़त दिया था।

5

नापाक लोग ख़ैमागाह में नहीं रह सकते

1 रब ने मूसा से कहा,

2 “इसराईलियों को हुक्म दे कि हर उस शख्स को ख़ैमागाह से बाहर कर दो जिसको वबाई जिल्दी बीमारी है, जिसके ज़ख़मों से माए निकलता रहता है या जो किसी लाश को छूने से नापाक है।

3 खाह मर्द हो या औरत, सबको ख़ैमागाह के बाहर भेज देना ताकि वह ख़ैमागाह को नापाक न करें जहाँ मैं तुम्हारे दरमियान सुकूनत करता हूँ।”

4 इसराईलियों ने वैसा ही किया जैसा रब ने मूसा को कहा था। उन्होंने रब के हुक्म के ऐन मुताबिक इस तरह के तमाम लोगों को ख़ैमागाह से बाहर कर दिया।

ग़लत काम का मुआवज़ा

5 रब ने मूसा से कहा,

6 “इसराईलियों को हिदायत देना कि जो भी किसी से ग़लत सुलूक करे वह मेरे साथ बेवफ़ाई करता है और क़ूस्रवार है, खाह मर्द हो या औरत।

7 लाज़िम है कि वह अपना गुनाह तसलीम करे और उसका पूरा मुआवज़ा दे बल्कि मुतअस्सिरा शख्स का नुक़सान पूरा करने के अलावा 20 फ़ीसद ज़्यादा दे।

8 लेकिन अगर वह शख्स जिसका कुसूर किया गया था मर चुका हो और उसका कोई वारिस न हो जो यह मुआवज़ा वसूल कर सके तो फिर उसे रब को देना है। इमाम को यह मुआवज़ा उस मेंढे के अलावा मिलेगा जो कुसूरवार अपने कफ़फ़ारा के लिए देगा।

9-10 नीज़ इमाम को इसराईलियों की कुरबानियों में से वह कुछ मिलना है जो उठानेवाली कुरबानी के तौर पर उसे दिया जाता है। यह हिस्सा सिर्फ़ इमामों को ही मिलना है।”

ज़िना के शक पर अल्लाह का फ़ैसला

11 रब ने मूसा से कहा,

12 “इसराईलियों को बताना, हो सकता है कि कोई शादीशुदा औरत भटककर अपने शौहर से बेवफ़ा हो जाए और

13 किसी और से हमबिसतर होकर नापाक हो जाए। उसके शौहर ने उसे नहीं देखा, क्योंकि यह पोशीदगी में हुआ है और न किसी ने उसे पकड़ा, न इसका कोई गवाह है।

14 अगर शौहर को अपनी बीवी की वफ़ादारी पर शक हो और वह ग़ैरत खाने लगे, लेकिन यक़ीन से नहीं कह सकता कि मेरी बीवी कुसूरवार है कि नहीं

15 तो वह अपनी बीवी को इमाम के पास ले आए। साथ साथ वह अपनी बीवी के लिए कुरबानी के तौर पर जौ का डेढ़ किलोग्राम बेहतरिन मैदा ले आए। इस पर न तेल उंडेला जाए, न बख़ूर डाला जाए, क्योंकि ग़ल्ला की यह नज़र ग़ैरत की नज़र है जिसका मक़सद है कि पोशीदा कुसूर जाहिर हो जाए।

16 इमाम औरत को करीब आने दे और रब के सामने खड़ा करे।

17 वह मिट्टी का बरतन मुक़द्दस पानी से भरकर उसमें मक़दिस के फ़र्श की कुछ खाक डाले।

18 फिर वह औरत को रब को पेश करके उसके बाल खुलवाए और उसके हाथों पर मैदे की नज़र रखे। इमाम के अपने हाथ में कड़वे पानी का वह बरतन हो जो लानत का बाइस है।

19 फिर वह औरत को कसम खिलाकर कहे, ‘अगर कोई और आदमी आपसे हमबिसतर नहीं हुआ है और आप नापाक नहीं हुई हैं तो इस कड़वे पानी की लानत का आप पर कोई असर न हो।

20 लेकिन अगर आप भटककर अपने शौहर से बेवफ़ा हो गई हैं और किसी और से हमबिसतर होकर नापाक हो गई हैं

21 तो रब आपको आपकी क़ौम के सामने लानती बनाए। आप बाँझ हो जाएँ और आपका पेट फूल जाए।

22 जब लानत का यह पानी आपके पेट में उतरे तो आप बाँझ हो जाएँ और आपका पेट फूल जाए।’ इस पर औरत कहे, ‘आमीन, ऐसा ही हो।’

23 फिर इमाम यह लानत लिखकर कागज़ को बरतन के पानी में यों धो दे कि उस पर लिखी हुई बातें पानी में घुल जाएँ।

24 बाद में वह औरत को यह पानी पिलाए ताकि वह उसके जिस्म में जाकर उसे लानत पहुँचाए।

25 लेकिन पहले इमाम उसके हाथों में से गैरत की कुरबानी लेकर उसे गल्ला की नज़र के तौर पर रब के सामने हिलाए और फिर कुरबानगाह के पास ले आए।

26 उस पर वह मुठी-भर यादगारी की कुरबानी के तौर पर जलाए। इसके बाद वह औरत को पानी पिलाए।

27 अगर वह अपने शौहर से बेवफ़ा थी और नापाक हो गई है तो वह बाँझ हो जाएगी, उसका पेट फूल जाएगा और वह अपनी क़ौम के सामने लानती ठहरेगी।

28 लेकिन अगर वह पाक-साफ़ है तो उसे सज़ा नहीं दी जाएगी और वह बच्चे जन्म देने के काबिल रहेगी।

29-30 चुनौचे ऐसा ही करना है जब शौहर गैरत खाए और उसे अपनी बीवी पर ज़िना का शक हो। बीवी को कुरबानगाह के सामने खड़ा किया जाए और इमाम यह सब कुछ करे।

31 इस सूत में शौहर बेक़ुसूर ठहरेगा, लेकिन अगर उस की बीवी ने वाक़ई ज़िना किया हो तो उसे अपने गुनाह के नतीजे बरदाश्त करने पड़ेंगे।”

6

जो अपने आपको मख़सूस करते हैं

1 रब ने मूसा से कहा,

2 “इसराईलियों को हिदायत देना कि अगर कोई आदमी या औरत मन्त मानकर अपने आपको एक मुकर्ररा वक़्त के लिए रब के लिए मख़सूस करे

3 तो वह मै या कोई और नशा-आवर चीज़ न पिए। न वह अंगूर या किसी और चीज़ का सिरका पिए, न अंगूर का रस। वह अंगूर या किशमिश न खाए।

4 जब तक वह मखसूस है वह अंगूर की कोई भी पैदावार न खाए, यहाँ तक कि अंगूर के बीज या छिलके भी न खाए।

5 जब तक वह अपनी मन्नत के मुताबिक मखसूस है वह अपने बाल न कटवाए। जितनी देर के लिए उसने अपने आपको रब के लिए मखसूस किया है उतनी देर तक वह मुकद्दस है। इसलिए वह अपने बाल बढ़ने दे।

6 जब तक वह मखसूस है वह किसी लाश के करीब न जाए,

7 चाहे वह उसके बाप, माँ, भाई या बहन की लाश क्यों न हो। क्योंकि इससे वह नापाक हो जाएगा जबकि अभी तक उस की मखसूसियत लंबे बालों की सूरत में नज़र आती है।

8 वह अपनी मखसूसियत के दौरान रब के लिए मखसूसो-मुकद्दस है।

9 अगर कोई अचानक मर जाए जब मखसूस शख्स उसके करीब हो तो उसके मखसूस बाल नापाक हो जाएंगे। ऐसी सूरत में लाज़िम है कि वह अपने आपको पाक-साफ करके सातवें दिन अपने सर को मुँडवाए।

10 आठवें दिन वह दो कुम्रियाँ या दो जवान कबूतर लेकर मुलाक्रात के खैमे के दरवाज़े पर आए और इमाम को दे।

11 इमाम इनमें से एक को गुनाह की कुरबानी के तौर पर चढ़ाए और दूसरे को भस्म होनेवाली कुरबानी के तौर पर। यों वह उसके लिए कफ़फ़ारा देगा जो लाश के करीब होने से नापाक हो गया है। उसी दिन वह अपने सर को दुबारा मखसूस करे

12 और अपने आपको मुकर्ररा वक़्त के लिए दुबारा रब के लिए मखसूस करे। वह कुसूर की कुरबानी के तौर पर एक साल का भेड़ का बच्चा पेश करे। जितने दिन उसने पहले मखसूसियत की हालत में गुज़ारे हैं वह शुमार नहीं किए जा सकते क्योंकि वह मखसूसियत की हालत में नापाक हो गया था। वह दुबारा पहले दिन से शुरू करे।

13 शरीअत के मुताबिक जब मखसूस शख्स का मुकर्ररा वक़्त गुज़र गया हो तो पहले उसे मुलाक्रात के खैमे के दरवाज़े पर लाया जाए।

14 वहाँ वह रब को भस्म होनेवाली कुरबानी के लिए भेड़ का एक बेऐब यकसाला नर बच्चा, गुनाह की कुरबानी के लिए एक बेऐब यकसाला भेड़ और

सलामती की कुरबानी के लिए एक बेऐब मेंढा पेश करे।

15 इसके अलावा वह एक टोकरी में बेखमीरी रोटियाँ जिनमें बेहतरीन मैदा और तेल मिलाया गया हो और बेखमीरी रोटियाँ जिन पर तेल लगाया गया हो मुताल्लिका गल्ला की नज़र और मै की नज़र के साथ

16 रब को पेश करे। पहले इमाम गुनाह की कुरबानी और भस्म होनेवाली कुरबानी रब के हुज़ूर चढाए।

17 फिर वह मेंढे को बेखमीरी रोटियों के साथ सलामती की कुरबानी के तौर पर पेश करे। इमाम गल्ला की नज़र और मै की नज़र भी चढाए।

18 इस दौरान मखसूस शख्स मुलाकात के ख़ैमे पर अपने मखसूस किए गए सर को मुँडवाकर तमाम बाल सलामती की कुरबानी की आग में फेंके।

19 फिर इमाम मेंढे का एक पका हुआ शाना और टोकरी में से दोनों क्रिस्मों की एक एक रोटी लेकर मखसूस शख्स के हाथों पर रखे।

20 इसके बाद वह यह चीज़ें वापस लेकर उन्हें हिलाने की कुरबानी के तौर पर रब के सामने हिलाए। यह एक मुक़द्दस कुरबानी है जो इमाम का हिस्सा है। सलामती की कुरबानी का हिलाया हुआ सीना और उठाई हुई रान भी इमाम का हिस्सा हैं। कुरबानी के इख़िताम पर मखसूस किए हुए शख्स को मै पीने की इजाज़त है।

21 जो अपने आपको रब के लिए मखसूस करता है वह ऐसा ही करे। लाज़िम है कि वह इन हिदायात के मुताबिक़ तमाम कुरबानियाँ पेश करे। अगर गुंजाइश हो तो वह और भी पेश कर सकता है। बहरहाल लाज़िम है कि वह अपनी मन्त और यह हिदायात पूरी करे।”

इमाम की बरकत

22 रब ने मूसा से कहा,

23 “हास्न और उसके बेटों को बता देना कि वह इसराईलियों को यों बरकत दें,

24 ‘रब तुझे बरकत दे और तेरी हिफ़ाज़त करे।

25 रब अपने चेहरे का मेहरबान नूर तुझ पर चमकाए और तुझ पर रहम करे।

26 रब की नज़रे-करम तुझ पर हो, और वह तुझे सलामती बख़्शे।’

27 यों वह मेरा नाम लेकर इसराईलियों को बरकत दें। फिर मैं उन्हें बरकत दूँगा।”

7

मक़दिस की मख़सूसियत के हदिये

1 जिस दिन मक़दिस मुकम्मल हुआ उसी दिन मूसा ने उसे मख़सूसो-मुक़द़स किया। इसके लिए उसने ख़ैमे, उसके तमाम सामान, कुरबानगाह और उसके तमाम सामान पर तेल छिड़का।

2-3 फिर क़बीलों के बारह सरदार मक़दिस के लिए हदिये लेकर आए। यह वही राहनुमा थे जिन्होंने मर्दुमशुमारी के वक़्त मूसा की मदद की थी। उन्होंने छतवाली छः बैलगाड़ियाँ और बारह बैल ख़ैमे के सामने रब को पेश किए, दो दो सरदारों की तरफ़ से एक बैलगाड़ी और हर एक सरदार की तरफ़ से एक बैल।

4 रब ने मूसा से कहा,

5 “यह तोहफ़े क़बूल करके मुलाक़ात के ख़ैमे के काम के लिए इस्तेमाल कर। उन्हें लावियों में उनकी ख़िदमत की ज़रूरत के मुताबिक़ तक़सीम करना।”

6 चुनाँचे मूसा ने बैलगाड़ियाँ और बैल लावियों को दे दिए।

7 उसने दो बैलगाड़ियाँ चार बैलों समेत ज़ैरसोनियों को

8 और चार बैलगाड़ियाँ आठ बैलों समेत मिरारियों को दीं। मिरारी हारून इमाम के बेटे इतमर के तहत ख़िदमत करते थे।

9 लेकिन मूसा ने किहातियों को न बैलगाड़ियाँ और न बैल दिए। वजह यह थी कि जो मुक़द़स चीज़ें उनके सुपुर्द थीं वह उनको कंधों पर उठाकर ले जानी थीं।

10 बारह सरदार कुरबानगाह की मख़सूसियत के मौके पर भी हदिये ले आए। उन्होंने अपने हदिये कुरबानगाह के सामने पेश किए।

11 रब ने मूसा से कहा, “सरदार बारह दिन के दौरान बारी बारी अपने हदिये पेश करें।”

12 पहले दिन यहदाह के सरदार नहसोन बिन अम्मीनदाब की बारी थी। उसके हदिये यह थे :

13 चाँदी का थाल जिसका वज़न डेढ़ किलोग्राम था और छिड़काव का चाँदी का कटोरा जिसका वज़न 800 ग्राम था। दोनों गल्ला की नज़र के लिए तेल के साथ मिलाए गए बेहतरीन मैदे से भरे हुए थे।

14 इनके अलावा नहसोन ने यह चीज़ें पेश कीं : सोने का प्याला जिसका वज़न 110 ग्राम था और जो बख़ूर से भरा हुआ था,

15 एक जवान बैल, एक मेंढा, भस्म होनेवाली कुरबानी के लिए भेड़ का एक यकसाला बच्चा,

16 गुनाह की कुरबानी के लिए एक बकरा

17 और सलामती की कुरबानी के लिए दो बैल, पाँच मेंढे, पाँच बकरे और भेड़ के पाँच यकसाला बच्चे।

18-23 अगले ग्यारह दिन बाकी सरदार भी यही हदिये मक़दिस के पास ले आए। दूसरे दिन इशकार के सरदार नतनियेल बिन जुगर की बारी थी,

24-29 तीसरे दिन ज़बूलून के सरदार इलियाब बिन हेलोन की,

30-47 चौथे दिन रुबिन के सरदार इलीसूर बिन शदियूर की, पाँचवें दिन शमौन के सरदार सलूमियेल बिन सूरीशड़ी की, छठे दिन जद के सरदार इलियासफ़ बिन दऊएल की,

48-53 सातवें दिन इफ़राईम के सरदार इलीसमा बिन अम्मीहद की,

54-71 आठवें दिन मनस्सी के सरदार जमलियेल बिन फ़दाहसूर की, नवें दिन बिनयमीन के सरदार अबिदान बिन जिदौनी की, दसवें दिन दान के सरदार अखियज़र बिन अम्मीशड़ी की,

72-83 ग्यारहवें दिन आशर के सरदार फ़जियेल बिन अकरान की और बारहवें दिन नफ़ताली के सरदार अखीरा बिन एनान की बारी थी।

84 इसराईल के इन सरदारों ने मिलकर कुरबानगाह की मख़सूसियत के लिए चाँदी के 12 थाल, छिड़काव के चाँदी के 12 कटोरे और सोने के 12 प्याले पेश किए।

85 हर थाल का वज़न डेढ़ किलोग्राम और छिड़काव के हर कटोरे का वज़न 800 ग्राम था। इन चीज़ों का कुल वज़न तक्ररीबन 28 किलोग्राम था।

86 बखूर से भरे हुए सोने के प्यालों का कुल वज़न तक्ररीबन डेढ़ किलोग्राम था (फ़ी प्याला 110 ग्राम)।

87 सरदारों ने मिलकर भस्म होनेवाली कुरबानी के लिए 12 जवान बैल, 12 मेंढे और भेड़ के 12 यकसाला बच्चे उनकी ग़ल्ला की नज़रों समेत पेश किए। गुनाह की कुरबानी के लिए उन्होंने 12 बकरे पेश किए

88 और सलामती की कुरबानी के लिए 24 बैल, 60 मेंढे, 60 बकरे और भेड़ के 60 यकसाला बच्चे। इन तमाम जानवरों को कुरबानगाह की मख़सूसियत के मौक़े पर चढ़ाया गया।

89 जब मूसा मुलाक़ात के ख़ैमे में रब के साथ बात करने के लिए दाख़िल होता था तो वह रब की आवाज़ अहद के संदूक़ के ढकने पर से यानी दो कस्बी फ़रिशतों के दरमियान से सुनता था।

8

शमादान पर चराग

1 रब ने मूसा से कहा,

2 “हारून को बताना, ‘तुझे सात चरागों को शमादान पर यों रखना है कि वह शमादान का सामनेवाला हिस्सा रौशन करें।’”

3 हारून ने ऐसा ही किया। जिस तरह रब ने मूसा को हुक्म दिया था उसी तरह उसने चरागों को रख दिया ताकि वह सामनेवाला हिस्सा रौशन करें।

4 शमादान पाए से लेकर ऊपर की कलियों तक सोने के एक घड़े हुए टुकड़े का बना हुआ था। मूसा ने उसे उस नमूने के ऐन मुताबिक बनवाया जो रब ने उसे दिखाया था।

लावियों की मखसूसियत

5 रब ने मूसा से कहा,

6 “लावियों को दीगर इसराईलियों से अलग करके पाक-साफ करना।

7 इसके लिए गुनाह से पाक करनेवाला पानी उन पर छिड़ककर उन्हें हुक्म देना कि अपने जिस्म के पूरे बाल मुँडवाओ और अपने कपड़े धोओ। यों वह पाक-साफ हो जाएंगे।

8 फिर वह एक जवान बैल चुनें और साथ की गल्ला की नज़र के लिए तेल के साथ मिलाया गया बेहतरीन मैदा लें। तू खुद भी एक जवान बैल चुन। वह गुनाह की कुरबानी के लिए होगा।

9 इसके बाद लावियों को मुलाकात के खैमे के सामने खड़ा करके इसराईल की पूरी जमात को वहाँ जमा करना।

10 जब लावी रब के सामने खड़े हों तो बाकी इसराईली उनके सरों पर अपने हाथ रखें।

11 फिर हारून लावियों को रब के सामने पेश करे। उन्हें इसराईलियों की तरफ से हिलाई हुई कुरबानी की हैसियत से पेश किया जाए ताकि वह रब की खिदमत कर सकें।

12 फिर लावी अपने हाथ दोनों बैलों के सरों पर रखें। एक बैल को गुनाह की कुरबानी के तौर पर और दूसरे को भस्म होनेवाली कुरबानी के तौर पर चढाओ ताकि लावियों का कफ़ारा दिया जाए।

13 लावियों को इस तरीके से हासून और उसके बेटों के सामने खड़ा करके रब को हिलाई हुई कुरबानी के तौर पर पेश करना है।

14 उन्हें बाकी इसराइलियों से अलग करने से वह मेरा हिस्सा बनेंगे।

15 इसके बाद ही वह मुलाकात के खैमे में आकर खिदमत करें, क्योंकि अब वह खिदमत करने के लायक है। उन्हें पाक-साफ़ करके हिलाई हुई कुरबानी के तौर पर पेश करने का सबब यह है

16 कि लावी इसराइलियों में से वह हैं जो मुझे पूरे तौर पर दिए गए हैं। मैंने उन्हें इसराइलियों के तमाम पहलौठों की जगह ले लिया है।

17 क्योंकि इसराइल में हर पहलौठा मेरा है, खाह वह इनसान का हो या हैवान का। उस दिन जब मैंने मिसरियों के पहलौठों को मार दिया मैंने इसराइल के पहलौठों को अपने लिए मखसूसो-मुकद्दस किया।

18 इस सिलसिले में मैंने लावियों को इसराइलियों के तमाम पहलौठों की जगह लेकर

19 उन्हें हासून और उसके बेटों को दिया है। वह मुलाकात के खैमे में इसराइलियों की खिदमत करें और उनके लिए कफ़फ़ारा का इंतज़ाम कायम रखें ताकि जब इसराइली मक़दिस के करीब आएँ तो उनको वबा से मारा न जाए।”

20 मूसा, हासून और इसराइलियों की पूरी जमात ने एहतियात से रब की लावियों के बारे में हिदायात पर अमल किया।

21 लावियों ने अपने आपको गुनाहों से पाक-साफ़ करके अपने कपड़ों को धोया। फिर हासून ने उन्हें रब के सामने हिलाई हुई कुरबानी के तौर पर पेश किया और उनका कफ़फ़ारा दिया ताकि वह पाक हो जाएँ।

22 इसके बाद लावी मुलाकात के खैमे में आए ताकि हासून और उसके बेटों के तहत खिदमत करें। यों सब कुछ वैसा ही किया गया जैसा रब ने मूसा को हुक्म दिया था।

23 रब ने मूसा से यह भी कहा,

24 “लावी 25 साल की उम्र में मुलाकात के खैमे में अपनी खिदमत शुरू करें

25 और 50 साल की उम्र में रिटायर हो जाएँ।

26 इसके बाद वह मुलाकात के खैमे में अपने भाइयों की मदद कर सकते हैं, लेकिन खुद खिदमत नहीं कर सकते। तुझे लावियों को इन हिदायात के मुताबिक़ उनकी अपनी अपनी जिम्मादारियाँ देनी हैं।”

9

रेगिस्तान में ईदे-फसह

1 इसराईलियों को मिसर से निकले एक साल हो गया था। दूसरे साल के पहले महीने में रब ने दशते-सीना में मूसा से बात की।

2 “लाज़िम है कि इसराईली ईदे-फसह को मुकर्ररा वक़्त पर मनाएँ,

3 यानी इस महीने के चौधवें दिन, सूरज के गुरूब होने के ऐन बाद। उसे तमाम क़वायद के मुताबिक़ मनाना।”

4 चुनाँचे मूसा ने इसराईलियों से कहा कि वह ईदे-फसह मनाएँ,

5 और उन्होंने ऐसा ही किया। उन्होंने ईदे-फसह को पहले महीने के चौधवें दिन सूरज के गुरूब होने के ऐन बाद मनाया। उन्होंने सब कुछ वैसा ही किया जैसा रब ने मूसा को हुक्म दिया था।

6 लेकिन कुछ आदमी नापाक थे, क्योंकि उन्होंने लाश छू ली थी। इस वजह से वह उस दिन ईदे-फसह न मना सके। वह मूसा और हासून के पास आकर

7 कहने लगे, “हमने लाश छू ली है, इसलिए नापाक हैं। लेकिन हमें इस सबब से ईदे-फसह को मनाने से क्यों रोका जाए? हम भी मुकर्ररा वक़्त पर बाकी इसराईलियों के साथ रब की क़ुरबानी पेश करना चाहते हैं।”

8 मूसा ने जवाब दिया, “यहाँ मेरे इंतज़ार में खड़े रहो। मैं मालूम करता हूँ कि रब तुम्हारे बारे में क्या हुक्म देता है।”

9 रब ने मूसा से कहा,

10 “इसराईलियों को बता देना कि अगर तुम या तुम्हारी औलाद में से कोई ईदे-फसह के दौरान लाश छूने से नापाक हो या किसी दूर-दराज़ इलाके में सफ़र कर रहा हो, तो भी वह ईद मना सकता है।

11 ऐसा शख्स उसे ऐन एक माह के बाद मनाकर लेले के साथ बेख़मीरी रोटी और कड़वा साग-पात खाए।

12 खाने में से कुछ भी अगली सुबह तक बाकी न रहे। जानवर की कोई भी हड्डी न तोड़ना। मनानेवाला ईदे-फसह के पूरे फ़रायज़ अदा करे।

13 लेकिन जो पाक होने और सफ़र न करने के बावजूद भी ईदे-फसह को न मनाए उसे उस की क्रौम में से मिटाया जाए, क्योंकि उसने मुकर्ररा वक़्त पर रब को क़ुरबानी पेश नहीं की। उस शख्स को अपने गुनाह का नतीजा भुगतना पड़ेगा।

14 अगर कोई परदेसी तुम्हारे दरमियान रहते हुए रब के सामने ईदे-फसह मनाना चाहे तो उसे इजाज़त है। शर्त यह है कि वह पूरे फ़रायज़ अदा करे। परदेसी और देसी के लिए ईदे-फसह मनाने के फ़रायज़ एक जैसे हैं।”

मुलाकात के ख़ैमे पर बादल का सतून

15 जिस दिन शरीअत के मुक़द्दस ख़ैमे को खड़ा किया गया उस दिन बादल आकर उस पर छा गया। रात के वक़्त बादल आग की सूरत में नज़र आया।

16 इसके बाद यही सूरते-हाल रही कि बादल उस पर छाया रहता और रात के दौरान आग की सूरत में नज़र आता।

17 जब भी बादल ख़ैमे पर से उठता इसराईली रवाना हो जाते। जहाँ भी बादल उतर जाता वहाँ इसराईली अपने डेरे डालते।

18 इसराईली रब के हुक्म पर रवाना होते और उसके हुक्म पर डेरे डालते। जब तक बादल मक़दिस पर छाया रहता उस वक़्त तक वह वहीं ठहरते।

19 कभी कभी बादल बड़ी देर तक ख़ैमे पर ठहरा रहता। तब इसराईली रब का हुक्म मानकर रवाना न होते।

20 कभी कभी बादल सिर्फ़ दो-चार दिन के लिए ख़ैमे पर ठहरता। फिर वह रब के हुक्म के मुताबिक़ ही ठहरते और रवाना होते थे।

21 कभी कभी बादल सिर्फ़ शाम से लेकर सुबह तक ख़ैमे पर ठहरता। जब वह सुबह के वक़्त उठता तो इसराईली भी रवाना होते थे। जब भी बादल उठता वह भी रवाना हो जाते।

22 जब तक बादल मुक़द्दस ख़ैमे पर छाया रहता उस वक़्त तक इसराईली रवाना न होते, चाहे वह दो दिन, एक माह, एक साल या इससे ज़्यादा अरसा मक़दिस पर छाया रहता। लेकिन जब वह उठता तो इसराईली भी रवाना हो जाते।

23 वह रब के हुक्म पर ख़ैमे लगाते और उसके हुक्म पर रवाना होते थे। वह वैसा ही करते थे जैसा रब मूसा की मारिफ़त फ़रमाता था।

10

1 रब ने मूसा से कहा,

2 “चाँदी के दो बिगुल घड़कर बनवा ले। उन्हें जमात को जमा करने और कबीलों को रवाना करने के लिए इस्तेमाल कर।

3 जब दोनों को देर तक बजाया जाए तो पूरी जमात मुलाकात के ख़ैमे के दरवाज़े पर आकर तैरे सामने जमा हो जाए।

4 लेकिन अगर एक ही बजाया जाए तो सिर्फ कुंबों के बुजुर्ग तेरे सामने जमा हो जाएँ।

5 अगर उनकी आवाज़ सिर्फ थोड़ी देर के लिए सुनाई दे तो मकदिस के मशरिक में मौजूद कबीले रवाना हो जाएँ।

6 फिर जब उनकी आवाज़ दूसरी बार थोड़ी देर के लिए सुनाई दे तो मकदिस के जुनूब में मौजूद कबीले रवाना हो जाएँ। जब उनकी आवाज़ थोड़ी देर के लिए सुनाई दे तो यह रवाना होने का एलान होगा।

7 इसके मुकाबले में जब उनकी आवाज़ देर तक सुनाई दे तो यह इस बात का एलान होगा कि जमात जमा हो जाए।

8 बिगुल बजाने की जिम्मादारी हारून के बेटों यानी इमामों को दी जाए। यह तुम्हारे और आनेवाली नसलों के लिए दायमी उसूल हो।

9 उनकी आवाज़ उस वक़्त भी थोड़ी देर के लिए सुना दो जब तुम अपने मुल्क में किसी ज़ालिम दुश्मन से जंग लड़ने के लिए निकलोगे। तब रब तुम्हारा ख़ुदा तुम्हें याद करके दुश्मन से बचाएगा।

10 इसी तरह उनकी आवाज़ मकदिस में खुशी के मौक़ों पर सुनाई दे यानी मुकर्ररा ईदों और नए चाँद की ईदों पर। इन मौक़ों पर वह भस्म होनेवाली कुरबानियाँ और सलामती की कुरबानियाँ चढ़ाते वक़्त बजाए जाएँ। फिर तुम्हारा ख़ुदा तुम्हें याद करेगा। मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ।”

सीना पहाड़ से रवानगी

11 इसराईलियों को मिसर से निकले एक साल से ज़ायद अरसा हो चुका था। दूसरे महीने के बीसवें दिन बादल मुलाकात के ख़ैमे पर से उठा।

12 फिर इसराईली मुकर्ररा तरतीब के मुताबिक दशते-सीना से रवाना हुए। चलते चलते बादल फ़ारान के रेगिस्तान में उतर आया।

13 उस वक़्त वह पहली दफ़ा उस तरतीब से रवाना हुए जो रब ने मूसा की मारिफ़त मुकर्रर की थी।

14 पहले यहदाह के कबीले के तीन दस्ते अपने अलम के तहत चल पड़े। तीनों का कमाँडर नहसोन बिन अम्मीनदाब था।

15 साथ चलनेवाले कबीले इशकार का कमाँडर नतनियेल बिन जुगर था।

16 ज़बूलून का कबीला भी साथ चला जिसका कमाँडर इलियाब बिन हेलोन था।

17 इसके बाद मुलाकात का खैमा उतारा गया। जैरसोनी और मिरारी उसे उठाकर चल दिए।

18 इन लावियों के बाद रुबिन के कबीले के तीन दस्ते अपने अलम के तहत चलने लगे। तीनों का कमाँडर इलीसूर बिन शदियूर था।

19 साथ चलनेवाले कबीले शमौन का कमाँडर सलूमियेल बिन सूरीशद्दी था।

20 जद का कबीला भी साथ चला जिसका कमाँडर इलियासफ़ बिन दऊएल था।

21 फिर लावियों में से क्रिहाती मक़दिस का सामान उठाकर रवाना हुए। लाज़िम था कि उनके अगली मनज़िल पर पहुँचने तक मुलाकात का खैमा लगा दिया गया हो।

22 इसके बाद इफ़राईम के कबीले के तीन दस्ते अपने अलम के तहत चल दिए। उनका कमाँडर इलीसमा बिन अम्मीहद था।

23 इफ़राईम के साथ चलनेवाले कबीले मनस्सी का कमाँडर जमलियेल बिन फ़दाहसूर था।

24 बिनयमीन का कबीला भी साथ चला जिसका कमाँडर अबिदान बिन जिदौनी था।

25 आखिर में दान के तीन दस्ते अक़बी मुहाफ़िज़ के तौर पर अपने अलम के तहत रवाना हुए। उनका कमाँडर अखियज़र बिन अम्मीशद्दी था।

26 दान के साथ चलनेवाले कबीले आशर का कमाँडर फ़जियेल बिन अकरान था।

27 नफ़ताली का कबीला भी साथ चला जिसका कमाँडर अख़ीरा बिन एनान था।

28 इसराईली इसी तरतीब से रवाना हुए।

मूसा होबाब को साथ चलने पर मजबूर करता है

29 मूसा ने अपने मिदियानी सुसर रऊएल यानी यितरो के बेटे होबाब से कहा, “हम उस जगह के लिए रवाना हो रहे हैं जिसका वादा रब ने हमसे किया है। हमारे साथ चलें! हम आप पर एहसान करेंगे, क्योंकि रब ने इसराईल पर एहसान करने का वादा किया है।”

30 लेकिन होबाब ने जवाब दिया, “मैं साथ नहीं जाऊँगा बल्कि अपने मुल्क और रिश्तेदारों के पास वापस चला जाऊँगा।”

31 मूसा ने कहा, “मेहरबानी करके हमें न छोड़ें। क्योंकि आप ही जानते हैं कि हम रेगिस्तान में कहाँ कहाँ अपने डेरे डाल सकते हैं। आप रेगिस्तान में हमें रास्ता दिखा सकते हैं।

32 अगर आप हमारे साथ जाएँ तो हम आपको उस एहसान में शरीक करेंगे जो रब हम पर करेगा।”

अहद के संदूक का सफ़र

33 चुनौचे उन्होंने रब के पहाड़ से रवाना होकर तीन दिन सफ़र किया। इस दौरान रब का अहद का संदूक उनके आगे आगे चला ताकि उनके लिए आराम करने की जगह मालूम करे।

34 जब कभी वह रवाना होते तो रब का बादल दिन के वक़्त उनके ऊपर रहता।

35 संदूक के रवाना होते वक़्त मूसा कहता, “ऐ रब, उठ। तेरे दुश्मन तित्तर-बित्तर हो जाएँ। तुझसे नफ़रत करनेवाले तेरे सामने से फ़रार हो जाएँ।”

36 और जब भी वह रुक जाता तो मूसा कहता, “ऐ रब, इसराईल के हज़ारों खानदानों के पास वापस आ।”

11

तबएरा में रब की आग

1 एक दिन लोग ख़ूब शिकायत करने लगे। जब यह शिकायतें रब तक पहुँचीं तो उसे गुस्सा आया और उस की आग उनके दरमियान भड़क उठी। जलते जलते उसने खैमागाह का एक किनारा भस्म कर दिया।

2 लोग मदद के लिए मूसा के पास आकर चिल्लाने लगे तो उसने रब से दुआ की, और आग बुझ गई।

3 उस मक़ाम का नाम तबएरा यानी जलना पड़ गया, क्योंकि रब की आग उनके दरमियान जल उठी थी।

मूसा 70 राहनुमा चुनता है

4 इसराईलियों के साथ जो अजनबी सफ़र कर रहे थे वह गोशत खाने की शदीद आरज़ू करने लगे। तब इसराईली भी रो पड़े और कहने लगे, “कौन हमें गोशत खिलाएगा?”

5 मिसर में हम मछली मुफ़्त खा सकते थे। हाय, वहाँ के खीर, तरबूज़, गंदने, प्याज़ और लहसन कितने अच्छे थे!

6 लेकिन अब तो हमारी जान सूख गई है। यहाँ बस मन ही मन नज़र आता रहता है।”

7 मन धनिये के दानों की मानिंद था, और उसका रंग गूगल के गूँद की मानिंद था।

8-9 रात के वक्रत वह खैमागाह में ओस के साथ ज़मीन पर गिरता था। सुबह के वक्रत लोग इधर-उधर घुमते-फिरते हुए उसे जमा करते थे। फिर वह उसे चक्की में पीसकर या उखली में कूटकर उबालते या रोटी बनाते थे। उसका जायका ऐसी रोटी का-सा था जिसमें जैतून का तेल डाला गया हो।

10 तमाम खानदान अपने अपने खैमे के दरवाज़े पर रोने लगे तो रब को शदीद गुस्सा आया। उनका शोर मूसा को भी बहुत बुरा लगा।

11 उसने रब से पूछा, “तूने अपने ख़ादिम के साथ इतना बुरा सुलूक क्यों किया? मैंने किस काम से तुझे इतना नाराज़ किया कि तूने इन तमाम लोगों का बोझ मुझ पर डाल दिया?”

12 क्या मैंने हामिला होकर इस पूरी क्रौम को जन्म दिया कि तू मुझसे कहता है, ‘इसे उस तरह उठाकर ले चलना जिस तरह आया शीरखार बच्चे को उठाकर हर जगह साथ लिए फिरती है। इसी तरह इसे उस मुल्क में ले जाना जिसका वादा मैंने कसम खाकर इनके बापदादा से किया है।’

13 ऐ अल्लाह, मैं इन तमाम लोगों को कहाँ से गोशत मुहैया करूँ? वह मेरे सामने रोते रहते हैं कि हमें खाने के लिए गोशत दो।

14 मैं अकेला इन तमाम लोगों की ज़िम्मादारी नहीं उठा सकता। यह बोझ मेरे लिए हद से ज़्यादा भारी है।

15 अगर तू इस पर इसरार करे तो फिर बेहतर है कि अभी मुझे मार दे ताकि मैं अपनी तबाही न देखूँ।”

16 जवाब में रब ने मूसा से कहा, “मेरे पास इसराइल के 70 बुजुर्ग जमा कर। सिर्फ़ ऐसे लोग चुन जिनके बारे में तुझे मालूम है कि वह लोगों के बुजुर्ग और निगहबान हैं। उन्हें मुलाकात के खैमे के पास ले आ। वहाँ वह तेरे साथ खड़े हो जाएँ,

17 तो मैं उतरकर तेरे साथ हमकलाम हूँगा। उस वक्रत मैं उस रूह में से कुछ लूँगा जो मैंने तुझ पर नाज़िल किया था और उसे उन पर नाज़िल करूँगा। तब वह क्रौम का बोझ उठाने में तेरी मदद करेंगे और तू इसमें अकेला नहीं रहेगा।

18 लोगों को बताना, 'अपने आपको मखसूसो-मुकद्दस करो, क्योंकि कल तुम गोश्त खाओगे। रब ने तुम्हारी सुनी जब तुम रो पड़े कि कौन हमें गोश्त खिलाएगा, मिसर में हमारी हालत बेहतर थी। अब रब तुम्हें गोश्त मुहैया करेगा और तुम उसे खाओगे।

19 तुम उसे न सिर्फ एक, दो या पाँच दिन खाओगे बल्कि 10 या 20 दिन से भी ज्यादा अरसे तक।

20 तुम एक पूरा महीना खूब गोश्त खाओगे, यहाँ तक कि वह तुम्हारी नाक से निकलेगा और तुम्हें उससे घिन आएगी। और यह इस सबब से होगा कि तुमने रब को जो तुम्हारे दरमियान है रद्द किया और रोते रोते उसके सामने कहा कि हम क्यों मिसर से निकले'।"

21 लेकिन मूसा ने एतराज़ किया, "अगर क्रौम के पैदल चलनेवाले गिने जाएँ तो छः लाख हैं। तू किस तरह हमें एक माह तक गोश्त मुहैया करेगा?"

22 क्या गाय-बैलों या भेड़-बकरियों को इतनी मिक्कदार में ज़बह किया जा सकता है कि काफ़ी हो? अगर समुंदर की तमाम मछलियाँ उनके लिए पकड़ी जाएँ तो क्या काफ़ी होंगी?"

23 रब ने कहा, "क्या रब का इख्तियार कम है? अब तू खुद देख लेगा कि मेरी बातें दुस्त हैं कि नहीं।"

24 चुनौचे मूसा ने वहाँ से निकलकर लोगों को रब की यह बातें बताईं। उसने उनके बुजुर्गों में से 70 को चुनकर उन्हें मुलाकात के खैमे के इर्दगिर्द खड़ा कर दिया।

25 तब रब बादल में उतरकर मूसा से हमकलाम हुआ। जो रूह उसने मूसा पर नाज़िल किया था उसमें से उसने कुछ लेकर उन 70 बुजुर्गों पर नाज़िल किया। जब रूह उन पर आया तो वह नबुव्वत करने लगे। लेकिन ऐसा फिर कभी न हुआ।

26 अब ऐसा हुआ कि इन सत्तर बुजुर्गों में से दो खैमागाह में रह गए थे। उनके नाम इलदाद और मेदाद थे। उन्हें चुना तो गया था लेकिन वह मुलाकात के खैमे के पास नहीं आए थे। इसके बावजूद रूह उन पर भी नाज़िल हुआ और वह खैमागाह में नबुव्वत करने लगे।

27 एक नौजवान भागकर मूसा के पास आया और कहा, "इलदाद और मेदाद खैमागाह में ही नबुव्वत कर रहे हैं।"

28 यशुअ बिन नून जो जवानी से मूसा का मददगार था बोल उठा, "मूसा मेरे आका, उन्हें रोक दें!"

29 लेकिन मूसा ने जवाब दिया, “क्या तू मेरी खातिर गैरत खा रहा है? काश रब के तमाम लोग नबी होते और वह उन सब पर अपना रूह नाज़िल करता!”

30 फिर मूसा और इसराईल के बुजुर्ग खैमागाह में वापस आए।

31 तब रब की तरफ से जोरदार हवा चलने लगी जिसने समुंद्र को पार करनेवाले बटेरों के गोल धकेलकर खैमागाह के इर्दगिर्द ज़मीन पर फेंक दिए। उनके गोल तीन फुट ऊँचे और खैमागाह के चारों तरफ 30 किलोमीटर तक पड़े रहे।

32 उस पूरे दिन और रात और अगले पूरे दिन लोग निकलकर बटेरें जमा करते रहे। हर एक ने कम अज़ कम दस बड़ी टोकरियाँ भर लीं। फिर उन्होंने उनका गोशत खैमे के इर्दगिर्द ज़मीन पर फैला दिया ताकि वह खुशक हो जाए।

33 लेकिन गोशत के पहले टुकड़े अभी मुँह में थे कि रब का गज़ब उन पर आन पड़ा, और उसने उनमें सख्त वबा फैलने दी।

34 चुनौचे मक़ाम का नाम क़ब्रोट-हत्तावा यानी ‘लालच की क़ब्रें’ रखा गया, क्योंकि वहाँ उन्होंने उन लोगों को दफ़न किया जो गोशत के लालच में आ गए थे।

35 इसके बाद इसराईली क़ब्रोट-हत्तावा से रवाना होकर हसीरात पहुँच गए। वहाँ वह खैमाज़न हुए।

12

मरियम और हारून की मुख़ालफ़त

1 एक दिन मरियम और हारून मूसा के खिलाफ़ बातें करने लगे। वजह यह थी कि उसने कूश की एक औरत से शादी की थी।

2 उन्होंने पूछा, “क्या रब सिर्फ़ मूसा की मारिफ़त बात करता है? क्या उसने हमसे भी बात नहीं की?” रब ने उनकी यह बातें सुनीं।

3 लेकिन मूसा निहायत हलीम था। दुनिया में उस जैसा हलीम कोई नहीं था।

4 अचानक रब मूसा, हारून और मरियम से मुखातिब हुआ, “तुम तीनों बाहर निकलकर मुलाकात के खैमे के पास आओ।”

तीनों वहाँ पहुँचे।

5 तब रब बादल के सतून में उतरकर मुलाकात के खैमे के दरवाज़े पर खड़ा हुआ। उसने हारून और मरियम को बुलाया तो दोनों आए।

6 उसने कहा, “मेरी बात सुनो। जब तुम्हारे दरमियान नबी होता है तो मैं अपने आपको रोया में उस पर ज़ाहिर करता हूँ या ख़ाब में उससे मुखातिब होता हूँ।

7 लेकिन मेरे खादिम मूसा की और बात है। उसे मैंने अपने पूरे घराने पर मुकर्रर किया है।

8 उससे मैं रूबरू हमकलाम होता हूँ। उससे मैं मुअम्मों के ज़रीए नहीं बल्कि साफ़ साफ़ बात करता हूँ। वह रब की सूरत देखता है। तो फिर तुम मेरे खादिम के खिलाफ़ बातें करने से क्यों न डरे?”

9 रब का गज़ब उन पर आन पड़ा, और वह चला गया।

10 जब बादल का सतून खैमे से दूर हुआ तो मरियम की जिल्द बर्फ़ की मानिंद सफ़ेद थी। वह कोढ़ का शिकार हो गई थी। हारून उस की तरफ़ मुड़ा तो उस की हालत देखी

11 और मूसा से कहा, “मेरे आका, मेहरबानी करके हमें इस गुनाह की सज़ा न दें जो हमारी हमाक़त के बाइस सरज़द हुआ है।

12 मरियम को इस हालत में न छोड़ें। वह तो ऐसे बच्चे की मानिंद है जो मुरदा पैदा हुआ हो, जिसके जिस्म का आधा हिस्सा गल चुका हो।”

13 तब मूसा ने पुकारकर रब से कहा, “ऐ अल्लाह, मेहरबानी करके उसे शफ़ा दे।”

14 रब ने जवाब में मूसा से कहा, “अगर मरियम का बाप उसके मुँह पर थूकता तो क्या वह पूरे हफ़ते तक शर्म महसूस न करती? उसे एक हफ़ते के लिए खैमागाह के बाहर बंद रख। इसके बाद उसे वापस लाया जा सकता है।”

15 चुनौचे मरियम को एक हफ़ते के लिए खैमागाह के बाहर बंद रखा गया। लोग उस वक़्त तक सफ़र के लिए रवाना न हुए जब तक उसे वापस न लाया गया।

16 जब वह वापस आई तो इसराईली हसीरात से रवाना होकर फ़ारान के रेगिस्तान में खैमाज़न हुए।

13

मुल्के-कनान में इसराईली जासूस

1 फिर रब ने मूसा से कहा,

2 “कुछ आदमी मुल्के-कनान का जायज़ा लेने के लिए भेज दे, क्योंकि मैं उसे इसराईलियों को देने को हूँ। हर क़बीले में से एक राहनुमा को चुनकर भेज दे।”

3 मूसा ने रब के कहने पर उन्हें दशते-फ़ारान से भेजा। सब इसराईली राहनुमा थे।

4 उनके नाम यह हैं :

- रुबिन के कबीले से सम्मुअ बिन जक्कूर,
 5 शमौन के कबीले से साफ़त बिन होरी,
 6 यहदाह के कबीले से कालिब बिन यफुन्ना,
 7 इशकार के कबीले से इजाल बिन यूसुफ,
 8 इफ़राईम के कबीले से होसेअ बिन नून,
 9 बिनयमीन के कबीले से फ़लती बिन रफू,
 10 ज़बूलून के कबीले से ज़दियेल बिन सोदी,
 11 यूसुफ़ के बेटे मनस्सी के कबीले से जिड़ी बिन सूसी,
 12 दान के कबीले से अम्मियेल बिन जमल्ली,
 13 आशर के कबीले से सतूर बिन मीकाएल,
 14 नफ़ताली के कबीले से नखबी बिन वुफ़सी,
 15 ज़द के कबीले से जियुएल बिन माकी।
 16 मूसा ने इन्हीं बारह आदमियों को मुल्क का जायज़ा लेने के लिए भेजा।
 उसने होसेअ का नाम यशुअ यानी 'रब नजात है' में बदल दिया।
 17 उन्हें सूखसत करने से पहले उसने कहा, "दशते-नजब से गुज़रकर पहाड़ी
 इलाके तक पहुँचो।
 18 मालूम करो कि यह किस तरह का मुल्क है और उसके बाशिदे कैसे हैं। क्या
 वह ताकतवर हैं या कमज़ोर, तादाद में कम हैं या ज़्यादा?
 19 जिस मुल्क में वह बसते हैं क्या वह अच्छा है कि नहीं? वह किस किस्म
 के शहरों में रहते हैं? क्या उनकी चारदीवारियाँ हैं कि नहीं?
 20 मुल्क की ज़मीन ज़रखेज़ है या बंजर? उसमें दरख़्त हैं कि नहीं? और
 ज़रत करके मुल्क का कुछ फल चुनकर ले आओ।" उस वक़्त पहले अंगूर पक
 गए थे।
 21 चुनौचे इन आदमियों ने सफ़र करके दशते-सीन से रहोब तक मुल्क का
 जायज़ा लिया। रहोब लबो-हमात के करीब है।
 22 वह दशते-नजब से गुज़रकर हबस्न पहुँचे जहाँ अनाक के बेटे अख़ीमान,
 सीसी और तलमी रहते थे। (हबस्न को मिसर के शहर जुअन से सात साल पहले
 तामीर किया गया था)।
 23 जब वह वादीए-इसकाल तक पहुँचे तो उन्होंने एक डाली काट ली जिस पर
 अंगूर का गुच्छा लगा हुआ था। दो आदमियों ने यह अंगूर, कुछ अनार और कुछ
 अंजीर लाठी पर लटकाए और उसे उठाकर चल पड़े।

24 उस जगह का नाम उस गुच्छे के सबब से जो इसराईलियों ने वहाँ से काट लिया इसकाल यानी गुच्छा रखा गया।

25 चालीस दिन तक मुल्क का खोज लगाते लगाते वह लौट आए।

26 वह मूसा, हारून और इसराईल की पूरी जमात के पास आए जो दशते-फारान में कादिस की जगह पर इंतज़ार कर रहे थे। वहाँ उन्होंने सब कुछ बताया जो उन्होंने मालूम किया था और उन्हें वह फल दिखाए जो लेकर आए थे।

27 उन्होंने मूसा को रिपोर्ट दी, “हम उस मुल्क में गए जहाँ आपने हमें भेजा था। वाकई उस मुल्क में दूध और शहद की कसरत है। यहाँ हमारे पास उसके कुछ फल भी हैं।

28 लेकिन उसके बाशिंदे ताकतवर हैं। उनके शहरों की फसीलें हैं, और वह निहायत बड़े हैं। हमने वहाँ अनाक की औलाद भी देखी।

29 अमालीकी दशते-नजब में रहते हैं जबकि हिती, यबूसी और अमोरी पहाड़ी इलाके में आबाद हैं। कनानी साहिली इलाके और दरियाए-यरदन के किनारे किनारे बसते हैं।”

30 कालिब ने मूसा के सामने जमाशुदा लोगों को इशारा किया कि वह खामोश हो जाएँ। फिर उसने कहा, “आएँ, हम मुल्क में दाखिल हो जाएँ और उस पर कब्ज़ा कर लें, क्योंकि हम यकीनन यह करने के काबिल हैं।”

31 लेकिन दूसरे आदमियों ने जो उसके साथ मुल्क को देखने गए थे कहा, “हम उन लोगों पर हमला नहीं कर सकते, क्योंकि वह हमसे ताकतवर हैं।”

32 उन्होंने इसराईलियों के दरमियान उस मुल्क के बारे में गलत अफ़वाहें फैलाई जिसकी तफ़तीश उन्होंने की थी। उन्होंने कहा, “जिस मुल्क में से हम गुज़रे ताकि उसका जायज़ा लें वह अपने बाशिंदों को हड़प कर लेता है। जो भी उसमें रहता है निहायत दराज़क़द है।

33 हमने वहाँ देवक़ामत अफ़राद भी देखे। (अनाक के बेटे देवक़ामत के अफ़राद की औलाद थे)। उनके सामने हम अपने आपको टिड्डी जैसा महसूस कर रहे थे, और हम उनकी नज़र में ऐसे थे भी।”

14

लोग कनान में दाखिल नहीं होना चाहते

1 उस रात तमाम लोग चीखें मार मारकर रोते रहे।

2 सब मूसा और हारून के खिलाफ बुडबुडाने लगे। पूरी जमात ने उनसे कहा, “काश हम मिसर या इस रेगिस्तान में मर गए होते!

3 रब हमें क्यों उस मुल्क में ले जा रहा है? क्या इसलिए कि दुश्मन हमें तलवार से क़त्ल करे और हमारे बाल-बच्चों को लूट ले? क्या बेहतर नहीं होगा कि हम मिसर वापस जाएँ?”

4 उन्होंने एक दूसरे से कहा, “आओ, हम राहनुमा चुनकर मिसर वापस चले जाएँ।”

5 तब मूसा और हारून पूरी जमात के सामने मुँह के बल गिरे।

6 लेकिन यशुअ बिन नून और कालिब बिन यफुन्ना बाक्री दस जासूसों से फ़रक थे। परेशानी के आलम में उन्होंने अपने कपड़े फाड़कर

7 पूरी जमात से कहा, “जिस मुल्क में से हम गुज़रे और जिसकी तफ़तीश हमने की वह निहायत ही अच्छा है।

8 अगर रब हमसे खुश है तो वह ज़रूर हमें उस मुल्क में ले जाएगा जिसमें दूध और शहद की कसरत है। वह हमें ज़रूर यह मुल्क देगा।

9 रब से बगावत मत करना। उस मुल्क के रहनेवालों से न डरें। हम उन्हें हड़प कर जाएंगे। उनकी पनाह उनसे जाती रही है जबकि रब हमारे साथ है। चुनाँचे उनसे मत डरें।”

10 यह सुनकर पूरी जमात उन्हें संगसार करने के लिए तैयार हुई। लेकिन अचानक रब का जलाल मुलाक़ात के ख़ैमे पर जाहिर हुआ, और तमाम इसराईलियों ने उसे देखा।

11 रब ने मूसा से कहा, “यह लोग मुझे कब तक हकीर जानेंगे? वह कब तक मुझ पर इमान रखने से इनकार करेंगे अगरचे मैंने उनके दरमियान इतने मोज़िजे किए हैं?”

12 मैं उन्हें वबा से मार डालूँगा और उन्हें रूप-ज़मीन पर से मिटा दूँगा। उनकी जगह मैं तुझसे एक क़ौम बनाऊँगा जो उनसे बड़ी और ताक़तवर होगी।”

13 लेकिन मूसा ने रब से कहा, “फिर मिसरी यह सुन लेंगे! क्योंकि तूने अपनी क्रुदरत से इन लोगों को मिसर से निकालकर यहाँ तक पहुँचाया है।

14 मिसरी यह बात कनान के बाशिंदों को बताएँगे। यह लोग पहले से सुन चुके हैं कि रब इस क़ौम के साथ है, कि तुझे रूबरू देखा जाता है, कि तेरा बादल उनके

ऊपर ठहरा रहता है, और कि तू दिन के वक़्त बादल के सतून में और रात को आग के सतून में इनके आगे आगे चलता है।

15 अगर तू एकदम इस पूरी क्रौम को तबाह कर डाले तो बाकी क्रौमों यह सुनकर कहेंगी,

16 'रब इन लोगों को उस मुल्क में ले जाने के काबिल नहीं था जिसका वादा उसने उनसे कसम खाकर किया था। इसी लिए उसने उन्हें रेगिस्तान में हलाक कर दिया।'

17 ऐ रब, अब अपनी कुदरत यों ज़ाहिर कर जिस तरह तूने फ़रमाया है। क्योंकि तूने कहा,

18 'रब तहम्मूल और शफ़क़त से भरपूर है। वह गुनाह और नाफ़रमानी मुआफ़ करता है, लेकिन हर एक को उस की मुनासिब सज़ा भी देता है। जब वालिदैन गुनाह करें तो उनकी औलाद को भी तीसरी और चौथी पुश्त तक सज़ा के नतायज भुगतने पड़ेंगे।'

19 इन लोगों का कुसूर अपनी अज़ीम शफ़क़त के मुताबिक़ मुआफ़ कर। उन्हें उस तरह मुआफ़ कर जिस तरह तू उन्हें मिसर से निकलते वक़्त अब तक मुआफ़ करता रहा है।"

20 रब ने जवाब दिया, "तेरे कहने पर मैंने उन्हें मुआफ़ कर दिया है।

21 इसके बावुजूद मेरी हयात की कसम और मेरे जलाल की कसम जो पूरी दुनिया को मामूर करता है,

22 इन लोगों में से कोई भी उस मुल्क में दाख़िल नहीं होगा। उन्होंने मेरा जलाल और मेरे मोजिज़े देखे हैं जो मैंने मिसर और रेगिस्तान में कर दिखाए हैं। तो भी उन्होंने दस दफ़ा मुझे आज़माया और मेरी न सुनी।

23 उनमें से एक भी उस मुल्क को नहीं देखेगा जिसका वादा मैंने कसम खाकर उनके बापदादा से किया था। जिसने भी मुझे हक़ीर जाना है वह कभी उसे नहीं देखेगा।

24 सिर्फ़ मेरा खादिम कालिब मुख्तलिफ़ है। उस की रूह फ़रक़ है। वह पूरे दिल से मेरी पैरवी करता है, इसलिए मैं उसे उस मुल्क में ले जाऊँगा जिसमें उसने सफ़र किया है। उस की औलाद मुल्क मीरास में पाएगी।

25 लेकिन फ़िलहाल अमालीकी और कनानी उस की वादियों में आबाद रहेंगे। चुनाँचे कल मुड़कर वापस चलो। रेगिस्तान में बहरे-कुलजुम की तरफ़ रवाना हो

जाओ।”

26 रब ने मूसा और हारून से कहा,

27 “यह शरीर जमात कब तक मेरे खिलाफ बुडबुडाती रहेगी? उनके गिले-शिकवे मुझ तक पहुँच गए हैं।

28 इसलिए उन्हें बताओ, ‘रब फ़रमाता है कि मेरी हयात की कसम, मैं तुम्हारे साथ वही कुछ करूँगा जो तुमने मेरे सामने कहा है।

29 तुम इस रेगिस्तान में मरकर यहीं पड़े रहोगे, हर एक जो 20 साल या इससे जायद का है, जो मर्दमशुमारी में गिना गया और जो मेरे खिलाफ बुडबुडाया।

30 गो मैंने हाथ उठाकर कसम खाई थी कि मैं तुझे उसमें बसाऊँगा तुममें से कोई भी उस मुल्क में दाखिल नहीं होगा। सिर्फ कालिब बिन यफुन्ना और यशुअ बिन नून दाखिल होंगे।

31 तुमने कहा था कि दुश्मन हमारे बच्चों को लूट लेंगे। लेकिन उन्हीं को मैं उस मुल्क में ले जाऊँगा जिसे तुमने रद्द किया है।

32 लेकिन तुम खुद दाखिल नहीं होगे। तुम्हारी लाशें इस रेगिस्तान में पड़ी रहेंगी।

33 तुम्हारे बच्चे 40 साल तक यहाँ रेगिस्तान में गल्लाबान होंगे। उन्हीं तुम्हारी बेवफ़ाई के सबब से उस वक़्त तक तकलीफ़ उठानी पड़ेगी जब तक तुममें से आखिरी शख्स मर न गया हो।

34 तुमने चालीस दिन के दौरान उस मुल्क का जायज़ा लिया। अब तुम्हें चालीस साल तक अपने गुनाहों का नतीजा भुगतना पड़ेगा। तब तुम्हें पता चलेगा कि इसका क्या मतलब है कि मैं तुम्हारी मुखालफ़त करता हूँ।

35 मैं, रब ने यह बात फ़रमाई है। मैं यकीनन यह सब कुछ उस सारी शरीर जमात के साथ करूँगा जिसने मिलकर मेरी मुखालफ़त की है। इसी रेगिस्तान में वह ख़त्म हो जाएंगे, यहीं मर जाएंगे।”

36-37 जिन आदमियों को मूसा ने मुल्क का जायज़ा लेने के लिए भेजा था, रब ने उन्हें फ़ौरन मोहलक वबा से मार डाला, क्योंकि उनके ग़लत अफ़वाहें फैलाने से पूरी जमात बुडबुडाने लगी थी।

38 सिर्फ़ यशुअ बिन नून और कालिब बिन यफुन्ना ज़िंदा रहे।

39 जब मूसा ने रब की यह बातें इसराईलियों को बताई तो वह ख़ूब मातम करने लगे।

40 अगली सुबह-सवेरे वह उठे और यह कहते हुए ऊँचे पहाड़ी इलाके के लिए रवाना हुए कि हमसे गलती हुई है, लेकिन अब हम हाज़िर हैं और उस जगह की तरफ जा रहे हैं जिसका जिक्र रब ने किया है।

41 लेकिन मूसा ने कहा, “तुम क्यों रब की खिलाफ़रज़ी कर रहे हो? तुम कामयाब नहीं होगे।

42 वहाँ न जाओ, क्योंकि रब तुम्हारे साथ नहीं है। तुम दुश्मनों के हाथों शिकस्त खाओगे,

43 क्योंकि वहाँ अमालीकी और कनानी तुम्हारा सामना करेंगे। चूँकि तुमने अपना मुँह रब से फेर लिया है इसलिए वह तुम्हारे साथ नहीं होगा, और दुश्मन तुम्हें तलवार से मार डालेगा।”

44 तो भी वह अपने गुस्से में ज़ुरत करके ऊँचे पहाड़ी इलाके की तरफ़ बढ़े, हालाँकि न मूसा और न अहद के संदूक ही ने ख़ैमागाह को छोड़ा।

45 फिर उस पहाड़ी इलाके में रहनेवाले अमालीकी और कनानी उन पर आन पड़े और उन्हें मारते मारते हुरमा तक तित्तर-बित्तर कर दिया।

15

कनान में कुरबानियाँ पेश करने का तरीका

1 रब ने मूसा से कहा,

2 “इसराईलियों को बताना कि जब तुम उस मुल्क में दाखिल होगे जो मैं तुम्हें दूँगा

3-4 तो जलनेवाली कुरबानियाँ यों पेश करना :

अगर तुम अपने गाय-बैलों या भेड़-बकरियों में से ऐसी कुरबानी पेश करना चाहो जिसकी खुशबू रब को पसंद हो तो साथ साथ डेढ किलोग्राम बेहतरीन मैदा भी पेश करो जो एक लिटर जैतून के तेल के साथ मिलाया गया हो। इसमें कोई फ़रक़ नहीं कि यह भस्म होनेवाली कुरबानी, मन्नत की कुरबानी, दिली खुशी की कुरबानी या किसी ईद की कुरबानी हो।

5 हर भेड़ को पेश करते वक़्त एक लिटर मै भी मै की नज़र के तौर पर पेश करना।

6 जब मेंढा कुरबान किया जाए तो 3 किलोग्राम बेहतरीन मैदा भी साथ पेश करना जो सवा लिटर तेल के साथ मिलाया गया हो।

7 सवा लिटर मै भी मै की नज़र के तौर पर पेश की जाए। ऐसी कुरबानी की खुशबू रब को पसंद आएगी।

8 अगर तू रब को भस्म होनेवाली कुरबानी, मन्नत की कुरबानी या सलामती की कुरबानी के तौर पर जवान बैल पेश करना चाहे

9 तो उसके साथ साठे 4 किलोग्राम बेहतरीन मैदा भी पेश करना जो दो लिटर तेल के साथ मिलाया गया हो।

10 दो लिटर मै भी मै की नज़र के तौर पर पेश की जाए। ऐसी कुरबानी की खुशबू रब को पसंद है।

11 लाज़िम है कि जब भी किसी गाय, बैल, भेड़, मेंढे, बकरी या बकरे को चढाया जाए तो ऐसा ही किया जाए।

12 अगर एक से ज़ायद जानवरों को कुरबान करना है तो हर एक के लिए मुकर्ररा गल्ला और मै की नज़रें भी साथ ही पेश की जाएँ।

13 लाज़िम है कि हर देसी इसराईली जलनेवाली कुरबानियाँ पेश करते वक़्त ऐसा ही करे। फिर उनकी खुशबू रब को पसंद आएगी।

14 यह भी लाज़िम है कि इसराईल में आरिज़ी या मुस्तक़िल तौर पर रहनेवाले परदेसी इन उसूलों के मुताबिक़ अपनी कुरबानियाँ चढाएँ। फिर उनकी खुशबू रब को पसंद आएगी।

15 मुल्के-कनान में रहनेवाले तमाम लोगों के लिए पाबंदियाँ एक जैसी हैं, खाह वह देसी हों या परदेसी, क्योंकि रब की नज़र में परदेसी तुम्हारे बराबर है। यह तुम्हारे और तुम्हारी औलाद के लिए दायमी उसूल है।

16 तुम्हारे और तुम्हारे साथ रहनेवाले परदेसी के लिए एक ही शरीअत है।”

फ़सल के लिए शुक्रगुज़ारी की कुरबानी

17 रब ने मूसा से कहा,

18 “इसराईलियों को बताना कि जब तुम उस मुल्क में दाख़िल होगे जिसमें मैं तुम्हें ले जा रहा हूँ

19 और वहाँ की पैदावार खाओगे तो पहले उसका एक हिस्सा उठानेवाली कुरबानी के तौर पर रब को पेश करना।

20 फ़सल के पहले ख़ालिस आटे में से मेरे लिए एक रोटी बनाकर उठानेवाली कुरबानी के तौर पर पेश करो। वह गाहने की जगह की तरफ़ से रब के लिए उठानेवाली कुरबानी होगी।

21 अपनी फसल के पहले खालिस आटे में से यह कुरबानी पेश किया करो। यह उसूल हमेशा तक लागू रहे।

नादानिस्ता गुनाहों के लिए कुरबानियाँ

22 हो सकता है कि गैरइरादी तौर पर तुमसे गलती हुई है और तुमने उन अहकाम पर पूरे तौर पर अमल नहीं किया जो रब मूसा को दे चुका है

23 या जो वह आनेवाली नसलों को देगा।

24 अगर जमात इस बात से नावाक़िफ़ थी और गैरइरादी तौर पर उससे गलती हुई तो फिर पूरी जमात एक जवान बैल भस्म होनेवाली कुरबानी के तौर पर पेश करे। साथ ही वह मुक़र्रा गल्ला और मै की नज़रें भी पेश करे। इसकी खुशबू रब को पसंद होगी। इसके अलावा जमात गुनाह की कुरबानी के लिए एक बकरा पेश करे।

25 इमाम इसराईल की पूरी जमात का कफ़ारा दे तो उन्हें मुआफ़ी मिलेगी, क्योंकि उनका गुनाह गैरइरादी था और उन्होंने रब को भस्म होनेवाली कुरबानी और गुनाह की कुरबानी पेश की है।

26 इसराईलियों की पूरी जमात को परदेसियों समेत मुआफ़ी मिलेगी, क्योंकि गुनाह गैरइरादी था।

27 अगर सिर्फ़ एक शख्स से गैरइरादी तौर पर गुनाह हुआ हो तो गुनाह की कुरबानी के लिए वह एक यकसाला बकरी पेश करे।

28 इमाम रब के सामने उस शख्स का कफ़ारा दे। जब कफ़ारा दे दिया गया तो उसे मुआफ़ी हासिल होगी।

29 यही उसूल परदेसी पर भी लागू है। अगर उससे गैरइरादी तौर पर गुनाह हुआ हो तो वह मुआफ़ी हासिल करने के लिए वही कुछ करे जो इसराईली को करना होता है।

दानिस्ता गुनाहों के लिए सज़ाए-मौत

30 लेकिन अगर कोई देसी या परदेसी जान-बूझकर गुनाह करता है तो ऐसा शख्स रब की इहानत करता है, इसलिए लाज़िम है कि उसे उस की क़ौम में से मिटाया जाए।

31 उसने रब का कलाम हकीर जानकर उसके अहकाम तोड़ डाले हैं, इसलिए उसे ज़रूर क़ौम में से मिटाया जाए। वह अपने गुनाह का ज़िम्मादार है।”

32 जब इसराईली रेगिस्तान में से गुज़र रहे थे तो एक आदमी को पकड़ा गया जो हफ़ते के दिन लकड़ियाँ जमा कर रहा था।

33 जिन्होंने उसे पकड़ा था वह उसे मूसा, हासून और पूरी जमात के पास ले आए।

34 चूँकि साफ़ मालूम नहीं था कि उसके साथ क्या किया जाए इसलिए उन्होंने उसे गिरफ़्तार कर लिया।

35 फिर रब ने मूसा से कहा, “इस आदमी को ज़रूर सज़ाए-मौत दी जाए। पूरी जमात उसे ख़ैमागाह के बाहर ले जाकर संगसार करे।”

36 चुनौचे जमात ने उसे ख़ैमागाह के बाहर ले जाकर संगसार किया, जिस तरह रब ने मूसा को हुक्म दिया था।

अहकाम की याद दिलानेवाले फ़ुँदने

37 रब ने मूसा से कहा,

38 “इसराईलियों को बताना कि तुम और तुम्हारे बाद की नसलें अपने लिबास के किनारों पर फ़ुँदने लगाएँ। हर फ़ुँदना एक किरमिज़ी डोरी से लिबास के साथ लगा हो।

39 इन फ़ुँदनों को देखकर तुम्हें रब के तमाम अहकाम याद रहेंगे और तुम उन पर अमल करोगे। फिर तुम अपने दिलों और आँखों की गलत ख़ाहिशों के पीछे नहीं पड़ोगे बल्कि जिनाकारी से दूर रहोगे।

40 फिर तुम मेरे अहकाम को याद करके उन पर अमल करोगे और अपने ख़ुदा के सामने मख़सूसो-मुक़द्दस रहोगे।

41 मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ जो तुम्हें मिसर से निकाल लाया ताकि तुम्हारा ख़ुदा हूँ। मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ।”

16

कोरह, दातन और अबीराम की सरकशी

1-2 एक दिन कोरह बिन इज़हार मूसा के खिलाफ़ उठा। वह लावी के कबीले का किहाती था। उसके साथ रुबिन के कबीले के तीन आदमी थे, इलियाब के बेटे दातन और अबीराम और ओन बिन पलत। उनके साथ 250 और आदमी भी थे जो जमात के सरदार और असरो-रसूखवाले थे, और जो कौंसल के लिए चुने गए थे।

3 वह मिलकर मूसा और हासून के पास आकर कहने लगे, “आप हमसे ज्यादाती कर रहे हैं। पूरी जमात मखसूसो-मुकद्दस है, और रब उसके दरमियान है। तो फिर आप अपने आपको क्यों रब की जमात से बढ़कर समझते हैं?”

4 यह सुनकर मूसा मुँह के बल गिरा।

5 फिर उसने क्रोरह और उसके तमाम साथियों से कहा, “कल सुबह रब जाहिर करेगा कि कौन उसका बंदा और कौन मखसूसो-मुकद्दस है। उसी को वह अपने पास आने देगा।

6 ऐ क्रोरह, कल अपने तमाम साथियों के साथ बखूरदान लेकर

7 रब के सामने उनमें अंगारे और बखूर डालो। जिस आदमी को रब चुनेगा वह मखसूसो-मुकद्दस होगा। अब तुम लावी खुद ज्यादाती कर रहे हो।”

8 मूसा ने क्रोरह से बात जारी रखी, “ऐ लावी की औलाद, सुनो!

9 क्या तुम्हारी नज़र में यह कोई छोटी बात है कि रब तुम्हें इसराईली जमात के बाकी लोगों से अलग करके अपने करीब ले आया ताकि तुम रब के मकदिस में और जमात के सामने खड़े होकर उनकी खिदमत करो?

10 वह तुझे और तेरे साथी लावियों को अपने करीब लाया है। लेकिन अब तुम इमाम का ओहदा भी अपनाना चाहते हो।

11 अपने साथियों से मिलकर तूने हासून की नहीं बल्कि रब की मुखालफत की है। क्योंकि हासून कौन है कि तुम उसके खिलाफ बुडबुडाओ?”

12 फिर मूसा ने इलियाब के बेटों दातन और अबीराम को बुलाया। लेकिन उन्होंने कहा, “हम नहीं आएँगे।

13 आप हमें एक ऐसे मुल्क से निकाल लाए हैं जहाँ दूध और शहद की कसरत है ताकि हम रेगिस्तान में हलाक हो जाएँ। क्या यह काफी नहीं है? क्या अब आप हम पर हुकूमत भी करना चाहते हैं?

14 न आपने हमें ऐसे मुल्क में पहुँचाया जिसमें दूध और शहद की कसरत है, न हमें खेतों और अंगूर के बागों के वारिस बनाया है। क्या आप इन आदमियों की आँखें निकाल डालेंगे? नहीं, हम हरगिज़ नहीं आएँगे।”

15 तब मूसा निहायत गुस्से हुआ। उसने रब से कहा, “उनकी कुरबानी को कबूल न कर। मैंने एक गधा तक उनसे नहीं लिया, न मैंने उनमें से किसी से बुरा सुलूक किया है।”

16 क्रोरह से उसने कहा, “कल तुम और तुम्हारे साथी रब के सामने हाज़िर हो जाओ। हासून भी आएगा।

17 हर एक अपना बखूरदान लेकर उसे रब को पेश करे।”

18 चुनाँचे हर आदमी ने अपना बखूरदान लेकर उसमें अंगारे और बखूर डाल दिया। फिर सब मूसा और हासून के साथ मुलाकात के खैमे के दरवाज़े पर खड़े हुए।

19 क्रोरह ने पूरी जमात को दरवाज़े पर मूसा और हासून के मुकाबले में जमा किया था।

अचानक पूरी जमात पर रब का जलाल ज़ाहिर हुआ।

20 रब ने मूसा और हासून से कहा,

21 “इस जमात से अलग हो जाओ ताकि मैं इसे फ़ौरन हलाक कर दूँ।”

22 मूसा और हासून मुँह के बल गिरे और बोल उठे, “ऐ अल्लाह, तू तमाम जानों का खुदा है। क्या तेरा ग़ज़ब एक ही आदमी के गुनाह के सबब से पूरी जमात पर आन पड़ेगा?”

23 तब रब ने मूसा से कहा,

24 “जमात को बता दे कि क्रोरह, दातन और अबीराम के डेरों से दूर हो जाओ।”

25 मूसा उठकर दातन और अबीराम के पास गया, और इसराईल के बुजुर्ग उसके पीछे चले।

26 उसने जमात को आगाह किया, “इन शरीरों के खैमों से दूर हो जाओ! जो कुछ भी उनके पास है उसे न छुओ, वरना तुम भी उनके साथ तबाह हो जाओगे जब वह अपने गुनाहों के बाइस हलाक होंगे।”

27 तब बाक़ी लोग क्रोरह, दातन और अबीराम के डेरों से दूर हो गए।

दातन और अबीराम अपने बाल-बच्चों समेत अपने खैमों से निकलकर बाहर खड़े थे।

28 मूसा ने कहा, “अब तुम्हें पता चलेगा कि रब ने मुझे यह सब कुछ करने के लिए भेजा है। मैं अपनी नहीं बल्कि उस की मरज़ी पूरी कर रहा हूँ।

29 अगर यह लोग दूसरों की तरह तबई मौत मरें तो फिर रब ने मुझे नहीं भेजा।

30 लेकिन अगर रब ऐसा काम करे जो पहले कभी नहीं हुआ और ज़मीन अपना मुँह खोलकर उन्हें और उनका पूरा माल हड़प कर ले और उन्हें जीते-जी दफ़ना दे तो इसका मतलब होगा कि इन आदमियों ने रब को हक़ीर जाना है।”

31 यह बात कहते ही उनके नीचे की ज़मीन फट गई।

32 उसने अपना मुँह खोलकर उन्हें, उनके खानदानों को, कोरह के तमाम लोगों को और उनका सारा सामान हड़प कर लिया।

33 वह अपनी पूरी मिलकियत समेत जीते-जी दफन हो गए। ज़मीन उनके ऊपर वापस आ गई। यों उन्हें जमात से निकाला गया और वह हलाक हो गए।

34 उनकी चीखें सुनकर उनके इर्दगिर्द खड़े तमाम इसराईली भाग उठे, क्योंकि उन्होंने सोचा, “ऐसा न हो कि ज़मीन हमें भी निगल ले।”

35 उसी लमहे रब की तरफ से आग उतर आई और उन 250 आदमियों को भस्म कर दिया जो बखूर पेश कर रहे थे।

36 रब ने मूसा से कहा,

37 “हासून इमाम के बेटे इलियज़र को इतला दे कि वह बखूरदानों को राख में से निकालकर रखे। उनके अंगारे वह दूर फेंके। बखूरदानों को रखने का सबब यह है कि अब वह मखसूसो-मुक़द्दस हैं।

38 लोग उन आदमियों के यह बखूरदान ले लें जो अपने गुनाह के बाइस जान-बहक हो गए। वह उन्हें कूटकर उनसे चादरें बनाएँ और उन्हें जलनेवाली कुरबानियों की कुरबानगाह पर चढाएँ। क्योंकि वह रब को पेश किए गए हैं, इसलिए वह मखसूसो-मुक़द्दस हैं। यों वह इसराईलियों के लिए एक निशान रहेंगे।”

39 चुनौचे इलियज़र इमाम ने पीतल के यह बखूरदान जमा किए जो भस्म किए हुए आदमियों ने रब को पेश किए थे। फिर लोगों ने उन्हें कूटकर उनसे चादरें बनाई और उन्हें कुरबानगाह पर चढा दिया।

40 हासून ने सब कुछ वैसा ही किया जैसा रब ने मूसा की मारिफ़त बताया था। मक़सद यह था कि बखूरदान इसराईलियों को याद दिलाते रहें कि सिर्फ़ हासून की औलाद ही को रब के सामने आकर बखूर जलाने की इजाज़त है। अगर कोई और ऐसा करे तो उसका हाल कोरह और उसके साथियों का-सा होगा।

41 अगले दिन इसराईल की पूरी जमात मूसा और हासून के खिलाफ़ बुड़बुड़ाने लगी। उन्होंने कहा, “आपने रब की क्रौम को मार डाला है।”

42 लेकिन जब वह मूसा और हासून के मुकाबले में जमा हुए और मुलाकात के ख़ैमे का सख़ किया तो अचानक उस पर बादल छा गया और रब का जलाल ज़ाहिर हुआ।

43 फिर मूसा और हासून मुलाकात के ख़ैमे के सामने आए,

44 और रब ने मूसा से कहा,

45 “इस जमात से निकल जाओ ताकि मैं इसे फ़ौरन हलाक कर दूँ।” यह सुनकर दोनों मुँह के बल गिरे।

46 मूसा ने हासून से कहा, “अपना बख़ूरदान लेकर उसमें कुरबानगाह के अंगारे और बख़ूर डालें। फिर भागकर जमात के पास चले जाएँ ताकि उनका कफ़फ़ारा दें। जल्दी करें, क्योंकि रब का ग़ज़ब उन पर टूट पड़ा है। वबा फैलने लगी है।”

47 हासून ने ऐसा ही किया। वह दौड़कर जमात के बीच में गया। लोगों में वबा शुरू हो चुकी थी, लेकिन हासून ने रब को बख़ूर पेश करके उनका कफ़फ़ारा दिया।

48 वह जिंदों और मुरदों के बीच में खड़ा हुआ तो वबा स्क गई।

49 तो भी 14,700 अफ़राद वबा से मर गए। इसमें वह शामिल नहीं हैं जो कोरह के सबब से मर गए थे।

50 जब वबा स्क गई तो हासून मूसा के पास वापस आया जो अब तक मुलाकात के ख़ैमे के दरवाज़े पर खड़ा था।

17

हासून की लाठी से कोंपलें निकलती हैं

1 रब ने मूसा से कहा,

2 “इसराईलियों से बात करके उनसे 12 लाठियाँ मँगवा ले, हर क़बीले के सरदार से एक लाठी। हर लाठी पर उसके मालिक का नाम लिखना।

3 लावी की लाठी पर हासून का नाम लिखना, क्योंकि हर क़बीले के सरदार के लिए एक लाठी होगी।

4 फिर उनको मुलाकात के ख़ैमे में अहद के संदूक के सामने रख जहाँ मेरी तुमसे मुलाकात होती है।

5 जिस आदमी को मैंने चुन लिया है उस की लाठी से कोंपलें फूट निकलेंगी। इस तरह मैं तुम्हारे खिलाफ़ इसराईलियों की बुडबुडाहट ख़त्म कर दूँगा।”

6 चुनाँचे मूसा ने इसराईलियों से बात की, और क़बीलों के हर सरदार ने उसे अपनी लाठी दी। इन 12 लाठियों में हासून की लाठी भी शामिल थी।

7 मूसा ने उन्हें मुलाकात के ख़ैमे में अहद के संदूक के सामने रखा।

8 अगले दिन जब वह मुलाकात के ख़ैमे में दाख़िल हुआ तो उसने देखा कि लावी के क़बीले के सरदार हासून की लाठी से न सिर्फ़ कोंपलें फूट निकली हैं बल्कि फूल और पके हुए बादाम भी लगे हैं।

9 मूसा तमाम लाठीयाँ रब के सामने से बाहर लाकर इसराईलियों के पास ले आया, और उन्होंने उनका मुआयना किया। फिर हर एक ने अपनी अपनी लाठी वापस ले ली।

10 रब ने मूसा से कहा, “हारून की लाठी अहद के संदूक के सामने रख दे। यह बागी इसराईलियों को याद दिलाएगी कि वह अपना बुडबुडाना बंद करें, वरना हलाक हो जाएंगे।”

11 मूसा ने ऐसा ही किया।

12 लेकिन इसराईलियों ने मूसा से कहा, “हाय, हम मर जाएंगे। हाय, हम हलाक हो जाएंगे, हम सब हलाक हो जाएंगे।

13 जो भी रब के मकदिस के करीब आए वह मर जाएगा। क्या हम सब ही हलाक हो जाएंगे?”

18

इमामों और लावियों की जिम्मादारियाँ

1 रब ने हारून से कहा, “मकदिस तेरी, तेरे बेटों और लावी के कबीले की जिम्मादारी है। अगर इसमें कोई गलती हो जाए तो तुम कुसूरवार ठहरोगे। इसी तरह इमामों की खिदमत सिर्फ तेरी और तेरे बेटों की जिम्मादारी है। अगर इसमें कोई गलती हो जाए तो तू और तेरे बेटे कुसूरवार ठहरेंगे।

2 अपने कबीले लावी के बाकी आदमियों को भी मेरे करीब आने दे। वह तेरे साथ मिलकर यों हिस्सा लें कि वह तेरी और तेरे बेटों की खिदमत करें जब तुम खैमे के सामने अपनी जिम्मादारियाँ निभाओगे।

3 तेरी खिदमत और खैमे में खिदमत उनकी जिम्मादारी है। लेकिन वह खैमे के मखसूसो-मुकद्दस सामान और कुरबानगाह के करीब न जाएँ, वरना न सिर्फ वह बल्कि तू भी हलाक हो जाएगा।

4 यों वह तेरे साथ मिलकर मुलाकात के खैमे के पूरे काम में हिस्सा लें। लेकिन किसी और को ऐसा करने की इजाजत नहीं है।

5 सिर्फ तू और तेरे बेटे मकदिस और कुरबानगाह की देख-भाल करें ताकि मेरा गजब दुबारा इसराईलियों पर न भडके।

6 मैं ही ने इसराईलियों में से तेरे भाइयों यानी लावियों को चुनकर तुझे तोहफे के तौर पर दिया है। वह रब के लिए मखसूस हैं ताकि खैमे में खिदमत करें।

7 लेकिन सिर्फ तू और तेरे बेटे इमाम की खिदमत संरंजाम दें। मैं तुम्हें इमाम का ओहदा तोहफे के तौर पर देता हूँ। कोई और कुरबानगाह और मुकद्दस चीजों के नज़दीक न आए, वरना उसे सज़ाए-मौत दी जाए।”

इमामों का हिस्सा

8 रब ने हास्न से कहा, “मैंने खुद मुकर्रर किया है कि तमाम उठानेवाली कुरबानियाँ तेरा हिस्सा हों। यह हमेशा तक कुरबानियों में से तेरा और तेरी औलाद का हिस्सा है।

9 तुम्हें मुकद्दसतरीन कुरबानियों का वह हिस्सा मिलना है जो जलाया नहीं जाता। हाँ, तुझे और तेरे बेटों को वही हिस्सा मिलना है, खाह वह मुझे गल्ला की नज़रें, गुनाह की कुरबानियाँ या कुसूर की कुरबानियाँ पेश करें।

10 उसे मुकद्दस जगह पर खाना। हर मर्द उसे खा सकता है। खयाल रख कि वह मखसूसो-मुकद्दस है।

11 मैंने मुकर्रर किया है कि तमाम हिलानेवाली कुरबानियों का उठाया हुआ हिस्सा तेरा है। यह हमेशा के लिए तेरे और तेरे बेटे-बेटियों का हिस्सा है। तेरे घराने का हर फ़रद उसे खा सकता है। शर्त यह है कि वह पाक हो।

12 जब लोग रब को अपनी फ़सलों का पहला फल पेश करेंगे तो वह तेरा ही हिस्सा होगा। मैं तुझे जैतून के तेल, नई मै और अनाज का बेहतरीन हिस्सा देता हूँ।

13 फ़सलों का जो भी पहला फल वह रब को पेश करेंगे वह तेरा ही होगा। तेरे घराने का हर पाक फ़रद उसे खा सकता है।

14 इसराईल में जो भी चीज़ रब के लिए मखसूसो-मुकद्दस की गई है वह तेरी होगी।

15 हर इनसान और हर हैवान का जो पहलौठा रब को पेश किया जाता है वह तेरा ही है। लेकिन लाज़िम है कि तू हर इनसान और हर नापाक जानवर के पहलौठे का फ़िघा देकर उसे छुड़ाए।

16 जब वह एक माह के हैं तो उनके एवज़ चाँदी के पाँच सिक्के देना। (हर सिक्के का वज़न मक़दिस के बाटों के मुताबिक 11 ग्राम हो)।

17 लेकिन गाय-बैलों और भेड़-बकरियों के पहले बच्चों का फ़िघा यानी मुआवज़ा न देना। वह मखसूसो-मुकद्दस हैं। उनका खून कुरबानगाह पर छिड़क देना और उनकी चरबी जला देना। ऐसी कुरबानी रब को पसंद होगी।

18 उनका गोशत वैसे ही तुम्हारे लिए हो, जैसे हिलानेवाली कुरबानी का सीना और दहनी रान भी तुम्हारे लिए हैं।

19 मुकद्दस कुरबानियों में से तमाम उठानेवाली कुरबानियाँ तेरा और तेरे बेटे-बेटियों का हिस्सा हैं। मैंने उसे हमेशा के लिए तुझे दिया है। यह नमक का दायमी अहद है जो मैंने तेरे और तेरी औलाद के साथ कायम किया है।”

लावियों का हिस्सा

20 रब ने हारून से कहा, “तू मीरास में ज़मीन नहीं पाएगा। इसराईल में तुझे कोई हिस्सा नहीं दिया जाएगा, क्योंकि इसराईलियों के दरमियान मैं ही तेरा हिस्सा और तेरी मीरास हूँ।

21 अपनी पैदावार का जो दसवाँ हिस्सा इसराईली मुझे देते हैं वह मैं लावियों को देता हूँ। यह उनकी विरासत है, जो उन्हें मुलाकात के ख़ैमे में ख़िदमत करने के बदले में मिलती है।

22 अब से इसराईली मुलाकात के ख़ैमे के करीब न आँ, वरना उन्हें अपनी खता का नतीजा बरदाश्त करना पड़ेगा और वह हलाक हो जाएंगे।

23 सिर्फ़ लावी मुलाकात के ख़ैमे में ख़िदमत करें। अगर इसमें कोई गलती हो जाए तो वही कुसूरवार ठहरेंगे। यह एक दायमी उसूल है। उन्हें इसराईल में मीरास में ज़मीन नहीं मिलेगी।

24 क्योंकि मैंने उन्हें वही दसवाँ हिस्सा मीरास के तौर पर दिया है जो इसराईली मुझे उठानेवाली कुरबानी के तौर पर पेश करते हैं। इस वजह से मैंने उनके बारे में कहा कि उन्हें बाकी इसराईलियों के साथ मीरास में ज़मीन नहीं मिलेगी।”

लावियों का दसवाँ हिस्सा

25 रब ने मूसा से कहा,

26 “लावियों को बताना कि तुम्हें इसराईलियों की पैदावार का दसवाँ हिस्सा मिलेगा। यह रब की तरफ़ से तुम्हारी विरासत होगी। लाज़िम है कि तुम इसका दसवाँ हिस्सा रब को उठानेवाली कुरबानी के तौर पर पेश करो।

27 तुम्हारी यह कुरबानी नए अनाज या नए अंगूर के रस की कुरबानी के बराबर करार दी जाएगी।

28 इस तरह तुम भी रब को इसराईलियों की पैदावार के दसवें हिस्से में से उठानेवाली कुरबानी पेश करोगे। रब के लिए यह कुरबानी हारून इमाम को देना।

29 जो भी तुम्हें मिला है उसमें से सबसे अच्छा और मुकद्दस हिस्सा रब को देना।

30 जब तुम इसका सबसे अच्छा हिस्सा पेश करोगे तो उसे नए अनाज या नए अंगूर के रस की कुरबानी के बराबर करार दिया जाएगा।

31 तुम अपने घरानों समेत इसका बाकी हिस्सा कहीं भी खा सकते हो, क्योंकि यह मुलाकात के ख़ैमे में तुम्हारी खिदमत का अन्न है।

32 अगर तुमने पहले इसका बेहतर हिस्सा पेश किया हो तो फिर इसे खाने में तुम्हारा कोई कुसूर नहीं होगा। फिर इसराईलियों की मखसूसो-मुकद्दस कुरबानियाँ तुमसे नापाक नहीं हो जाएँगी और तुम नहीं मरोगे।”

19

सुर्ख गाय की राख

1 रब ने मूसा और हारून से कहा,

2 “इसराईलियों को बताना कि वह तुम्हारे पास सुर्ख रंग की जवान गाय लेकर आएँ। उसमें नुक्स न हो और उस पर कभी जुआ न रखा गया हो।

3 तुम उसे इलियज़र इमाम को देना जो उसे ख़ैमे के बाहर ले जाए। वहाँ उसे उस की मौजूदगी में ज़बह किया जाए।

4 फिर इलियज़र इमाम अपनी उँगली से उसके खून से कुछ लेकर मुलाकात के ख़ैमे के सामनेवाले हिस्से की तरफ़ छिड़के।

5 उस की मौजूदगी में पूरी की पूरी गाय को जलाया जाए। उस की खाल, गोशत, खून और अंतड़ियों का गोबर भी जलाया जाए।

6 फिर वह देवदार की लकड़ी, जूफ़ा और किरमिज़ी रंग का धागा लेकर उसे जलती हुई गाय पर फेंके।

7 इसके बाद वह अपने कपड़ों को धोकर नहा ले। फिर वह ख़ैमागाह में आ सकता है लेकिन शाम तक नापाक रहेगा।

8 जिस आदमी ने गाय को जलाया वह भी अपने कपड़ों को धोकर नहा ले। वह भी शाम तक नापाक रहेगा।

9 एक दूसरा आदमी जो पाक है गाय की राख इकट्ठी करके ख़ैमागाह के बाहर किसी पाक जगह पर डाल दे। वहाँ इसराईल की जमात उसे नापाकी दूर करने का पानी तैयार करने के लिए महफूज़ रखे। यह गुनाह से पाक करने के लिए इस्तेमाल होगा।

10 जिस आदमी ने राख इकट्ठी की है वह भी अपने कपड़ों को धो ले। वह भी शाम तक नापाक रहेगा। यह इसराइलियों और उनके दरमियान रहनेवाले परदेसियों के लिए दायमी उसूल हो।

लाश छूने से पाक हो जाने का तरीका

11 जो भी लाश छुए वह सात दिन तक नापाक रहेगा।

12 तीसरे और सातवें दिन वह अपने आप पर नापाकी दूर करने का पानी छिड़ककर पाक-साफ हो जाए। इसके बाद ही वह पाक होगा। लेकिन अगर वह इन दोनों दिनों में अपने आपको यों पाक न करे तो नापाक रहेगा।

13 जो भी लाश छूकर अपने आपको यों पाक नहीं करता वह रब के मक़दिस को नापाक करता है। लाज़िम है कि उसे इसराइल में से मिटाया जाए। चूँकि नापाकी दूर करने का पानी उस पर छिड़का नहीं गया इसलिए वह नापाक रहेगा।

14 अगर कोई डेरे में मर जाए तो जो भी उस वक़्त उसमें मौजूद हो या दाखिल हो जाए वह सात दिन तक नापाक रहेगा।

15 हर खुला बरतन जो ढकने से बंद न किया गया हो वह भी नापाक होगा।

16 इसी तरह जो खुले मैदान में लाश छुए वह भी सात दिन तक नापाक रहेगा, खाह वह तलवार से या तबई मौत मरा हो। जो इनसान की कोई हड्डी या क़ब्र छुए वह भी सात दिन तक नापाक रहेगा।

17 नापाकी दूर करने के लिए उस सुर्ख रंग की गाय की राख में से कुछ लेना जो गुनाह दूर करने के लिए जलाई गई थी। उसे बरतन में डालकर ताज़ा पानी में मिलाना।

18 फिर कोई पाक आदमी कुछ जूफ़ा ले और उसे उस पानी में डुबोकर मरे हुए शख्स के खैमे, उसके सामान और उन लोगों पर छिड़के जो उसके मरते वक़्त वहाँ थे। इसी तरह वह पानी उस शख्स पर भी छिड़के जिसने तबई या गैरतबई मौत मरे हुए शख्स को, किसी इनसान की हड्डी को या कोई क़ब्र छूई हो।

19 पाक आदमी यह पानी तीसरे और सातवें दिन नापाक शख्स पर छिड़के। सातवें दिन वह उसे पाक करे। जिसे पाक किया जा रहा है वह अपने कपड़े धोकर नहा ले तो वह उसी शाम पाक होगा।

20 लेकिन जो नापाक शख्स अपने आपको पाक नहीं करता उसे जमात में से मिटाना है, क्योंकि उसने रब का मक़दिस नापाक कर दिया है। नापाकी दूर करने का पानी उस पर नहीं छिड़का गया, इसलिए वह नापाक रहा है।

21 यह उनके लिए दायमी उसूल है। जिस आदमी ने नापाकी दूर करने का पानी छिड़का है वह भी अपने कपड़े धोए। बल्कि जिसने भी यह पानी छुआ है शाम तक नापाक रहेगा।

22 और नापाक शरख्स जो भी चीज़ छुए वह नापाक हो जाती है। न सिर्फ यह बल्कि जो बाद में यह नापाक चीज़ छुए वह भी शाम तक नापाक रहेगा।”

20

चट्टान से पानी

1 पहले महीने में इसराईल की पूरी जमात दशते-सीन में पहुँचकर कादिस में रहने लगी। वहाँ मरियम ने वफ़ात पाई और वहीं उसे दफ़नाया गया।

2 कादिस में पानी दस्तयाब नहीं था, इसलिए लोग मूसा और हास्न के मुकाबले में जमा हुए।

3 वह मूसा से यह कहकर झगड़ने लगे, “काश हम अपने भाइयों के साथ रब के सामने मर गए होते!

4 आप रब की जमात को क्यों इस रेगिस्तान में ले आए? क्या इसलिए कि हम यहाँ अपने मवेशियों समेत मर जाएँ?

5 आप हमें मिसर से निकालकर उस नाखुशगवार जगह पर क्यों ले आए हैं? यहाँ न तो अनाज, न अंजीर, अंगूर या अनार दस्तयाब हैं। पानी भी नहीं है!”

6 मूसा और हास्न लोगों को छोड़कर मुलाकात के ख़ैमे के दरवाज़े पर गए और मुँह के बल गिरे। तब रब का जलाल उन पर ज़ाहिर हुआ।

7 रब ने मूसा से कहा,

8 “अहद के संदूक के सामने पड़ी लाठी पकड़कर हास्न के साथ जमात को इकट्ठा कर। उनके सामने चट्टान से बात करो तो वह अपना पानी देगी। यों तू चट्टान में से जमात के लिए पानी निकालकर उन्हें उनके मवेशियों समेत पानी पिलाएगा।”

9 मूसा ने ऐसा ही किया। उसने अहद के संदूक के सामने पड़ी लाठी उठाई

10 और हास्न के साथ जमात को चट्टान के सामने इकट्ठा किया। मूसा ने उनसे कहा, “ऐ बगावत करनेवालो, सुनो! क्या हम इस चट्टान में से तुम्हारे लिए पानी निकालें?”

11 उसने लाठी को उठाकर चट्टान को दो मरतबा मारा तो बहुत-सा पानी फूट निकला। जमात और उनके मवेशियों ने ख़ूब पानी पिया।

12 लेकिन रब ने मूसा और हास्न से कहा, “तुम्हारा मुझ पर इतना ईमान नहीं था कि मेरी कुदूसियत को इसराईलियों के सामने कायम रखते। इसलिए तुम उस जमात को उस मुल्क में नहीं ले जाओगे जो मैं उन्हें दूँगा।”

13 यह वाकिया मरीबा यानी ‘झगड़ना’ के पानी पर हुआ। वहाँ इसराईलियों ने रब से झगड़ा किया, और वहाँ उसने उन पर ज़ाहिर किया कि वह कुदूस है।

अदोम इसराईल को गुज़रने नहीं देता

14 कादिस से मूसा ने अदोम के बादशाह को इतला भेजी, “आपके भाई इसराईल की तरफ से एक गुज़ारिश है। आपको उन तमाम मुसीबतों के बारे में इल्म है जो हम पर आन पड़ी हैं।

15 हमारे बापदादा मिसर गए थे और वहाँ हम बहुत अरसे तक रहे। मिसरियों ने हमारे बापदादा और हमसे बुरा सुलूक किया।

16 लेकिन जब हमने चिल्लाकर रब से मिन्नत की तो उसने हमारी सुनी और फ़रिश्ता भेजकर हमें मिसर से निकाल लाया। अब हम यहाँ कादिस शहर में हैं जो आपकी सरहद पर है।

17 मेहरबानी करके हमें अपने मुल्क में से गुज़रने दें। हम किसी खेत या अंगूर के बाग़ में नहीं जाएंगे, न किसी कुएँ का पानी पीएँगे। हम शाहराह पर ही रहेंगे। आपके मुल्क में से गुज़रते हुए हम उससे न दाईं और न बाईं तरफ़ हटेंगे।”

18 लेकिन अदोमियों ने जवाब दिया, “यहाँ से न गुज़रना, वरना हम निकलकर आपसे लड़ेंगे।”

19 इसराईल ने दुबारा खबर भेजी, “हम शाहराह पर रहते हुए गुज़रेंगे। अगर हमें या हमारे जानवरों को पानी की ज़रूरत हुई तो पैसे देकर खरीद लेंगे। हम पैदल ही गुज़रना चाहते हैं, और कुछ नहीं चाहते।”

20 लेकिन अदोमियों ने दुबारा इनकार किया। साथ ही उन्होंने उनके साथ लड़ने के लिए एक बड़ी और ताक़तवर फ़ौज भेजी।

21 चूँकि अदोम ने उन्हें गुज़रने की इजाज़त न दी इसलिए इसराईली मुडकर दूसरे रास्ते से चले गए।

हास्न की वफ़ात

22 इसराईल की पूरी जमात कादिस से खाना होकर होर पहाड़ के पास पहुँची।

23 यह पहाड़ अदोम की सरहद पर वाक़े था। वहाँ रब ने मूसा और हास्न से कहा,

24 “हासून अब कूच करके अपने बापदादा से जा मिलेगा। वह उस मुल्क में दाखिल नहीं होगा जो मैं इसराईलियों को दूँगा, क्योंकि तुम दोनों ने मरीबा के पानी पर मेरे हुक्म की खिलाफ़वरज़ी की।

25 हासून और उसके बेटे इलियज़र को लेकर होर पहाड़ पर चढ़ जा।

26 हासून के कपड़े उतारकर उसके बेटे इलियज़र को पहना देना। फिर हासून कूच करके अपने बापदादा से जा मिलेगा।”

27 मूसा ने ऐसा ही किया जैसा रब ने कहा। तीनों पूरी जमात के देखते देखते होर पहाड़ पर चढ़ गए।

28 मूसा ने हासून के कपड़े उतरवाकर उसके बेटे इलियज़र को पहना दिए। फिर हासून वहाँ पहाड़ की चोटी पर फ़ौत हुआ, और मूसा और इलियज़र नीचे उतर गए।

29 जब पूरी जमात को मालूम हुआ कि हासून इंतकाल कर गया है तो सबने 30 दिन तक उसके लिए मातम किया।

21

कनानी मुल्के-अराद पर फ़तह

1 दशते-नजब के कनानी मुल्क अराद के बादशाह को खबर मिली कि इसराईली अथारिम की तरफ़ बढ़ रहे हैं। उसने उन पर हमला किया और कई एक को पकड़कर कैद कर लिया।

2 तब इसराईलियों ने रब के सामने मन्नत मानकर कहा, “अगर तू हमें उन पर फ़तह देगा तो हम उन्हें उनके शहरों समेत तबाह कर देंगे।”

3 रब ने उनकी सुनी और कनानियों पर फ़तह बरख़्शी। इसराईलियों ने उन्हें उनके शहरों समेत पूरी तरह तबाह कर दिया। इसलिए उस जगह का नाम हुरमा यानी तबाही पड़ गया।

पीतल का साँप

4 होर पहाड़ से रवाना होकर वह बहरे-कुलज़ुम की तरफ़ चल दिए ताकि अदोम के मुल्क में से गुज़रना न पड़े। लेकिन चलते चलते लोग बेसबर हो गए।

5 वह रब और मूसा के खिलाफ़ बातें करने लगे, “आप हमें मिसर से निकालकर रेगिस्तान में मरने के लिए क्यों ले आए हैं? यहाँ न रोटी दस्तयाब है न पानी। हमें इस घटिया किस्म की ख़ुराक से घिन आती है।”

6 तब रब ने उनके दरमियान ज़हरीले साँप भेज दिए जिनके काटने से बहुत-से लोग मर गए।

7 फिर लोग मूसा के पास आए। उन्होंने कहा, “हमने रब और आपके खिलाफ़ बातें करते हुए गुनाह किया। हमारी सिफ़ारिश करें कि रब हमसे साँप दूर कर दे।”

मूसा ने उनके लिए दुआ की

8 तो रब ने मूसा से कहा, “एक साँप बनाकर उसे खंबे से लटका दे। जो भी डसा गया हो वह उसे देखकर बच जाएगा।”

9 चुनौचे मूसा ने पीतल का एक साँप बनाया और खंबा खड़ा करके साँप को उससे लटका दिया। और ऐसा हुआ कि जिसे भी डसा गया था वह पीतल के साँप पर नज़र करके बच गया।

मोआब की तरफ़ सफ़र

10 इसराईली रवाना हुए और ओबोत में अपने ख़ैमे लगाए।

11 फिर वहाँ से कूच करके ऐये-अबारीम में डेरे डाले, उस रेगिस्तान में जो मशरिक् की तरफ़ मोआब के सामने है।

12 वहाँ से रवाना होकर वह वादीए-ज़िरद में ख़ैमाज़न हुए।

13 जब वादीए-ज़िरद से रवाना हुए तो दरियाए-अरनोन के परले यानी जुनूबी किनारे पर ख़ैमाज़न हुए। यह दरिया रेगिस्तान में है और अमोरियों के इलाक़े से निकलता है। यह अमोरियों और मोआबियों के दरमियान की सरहद है।

14 इसका ज़िक्र किताब ‘रब की जंगें’ में भी है,

“वाहेब जो सूफ़ा में है, दरियाए-अरनोन की वादियाँ

15 और वादियों का वह ढलान जो आर शहर तक जाता है और मोआब की सरहद पर वाक़े है।”

16 वहाँ से वह बैर यानी ‘कुआँ’ पहुँचे। यह वही बैर है जहाँ रब ने मूसा से कहा, “लोगों को इक़ठा कर तो मैं उन्हें पानी दूँगा।”

17 उस वक़्त इसराईलियों ने यह गीत गाया,

“ऐ कुएँ, फूट निकल! उसके बारे में गीत गाओ,

18 उस कुएँ के बारे में जिसे सरदारों ने खोदा, जिसे क्रौम के राहनुमाओं ने असाए-शाही और अपनी लाठियों से खोदा।”

फिर वह रेगिस्तान से मन्तना को गए,

19 मन्तना से नहलियेल को और नहलियेल से बामात को।

20 बामात से वह मोआबियों के इलाके की उस वादी में पहुँचे जो पिसगा पहाड़ के दामन में है। इस पहाड़ की चोटी से वादीए-यरदन का जुनूबी हिस्सा यशीमोन खूब नज़र आता है।

सीहोन और ओज की शिकस्त

21 इसराईल ने अमोरियों के बादशाह सीहोन को इतला भेजी,

22 “हमें अपने मुल्क में से गुज़रने दें। हम सीधे सीधे गुज़र जाएंगे। न हम कोई खेत या अंगूर का बाग़ छेड़ेंगे, न किसी कुएँ का पानी पिँएँगे। हम आपके मुल्क में से सीधे गुज़रते हुए शाहराह पर ही रहेंगे।”

23 लेकिन सीहोन ने उन्हें गुज़रने न दिया बल्कि अपनी फ़ौज जमा करके इसराईल से लड़ने के लिए रेगिस्तान में चल पड़ा। यहज़ पहुँचकर उसने इसराईलियों से जंग की।

24 लेकिन इसराईलियों ने उसे कत्ल किया और दरियाए-अरनोन से लेकर दरियाए-यब्बोक तक यानी अम्मोनियों की सरहद तक उसके मुल्क पर क़ब्ज़ा कर लिया। वह इससे आगे न जा सके क्योंकि अम्मोनियों ने अपनी सरहद की हिसारबंदी कर रखी थी।

25 इसराईली तमाम अमोरी शहरों पर क़ब्ज़ा करके उनमें रहने लगे। उनमें हसबोन और उसके इर्दगिर्द की आबादियाँ शामिल थीं।

26 हसबोन अमोरी बादशाह सीहोन का दास्त-हुकूमत था। उसने मोआब के पिछले बादशाह से लड़कर उससे यह इलाका दरियाए-अरनोन तक छीन लिया था।

27 उस वाकिये का ज़िक्र शायरी में यों किया गया है,

“हसबोन के पास आकर उसे अज़ सरे-नौ तामीर करो, सीहोन के शहर को अज़ सरे-नौ कायम करो।

28 हसबोन से आग निकली, सीहोन के शहर से शोला भड़का। उसने मोआब के शहर आर को जला दिया, अरनोन की बुलंदियों के मालिकों को भस्म किया।

29 ऐ मोआब, तुझ पर अफ़सोस! ऐ क़मोस देवता की क़ौम, तू हलाक हुई है। क़मोस ने अपने बेटों को मफ़रूर और अपनी बेटियों को अमोरी बादशाह सीहोन की कैदी बना दिया है।

30 लेकिन जब हमने अमोरियों पर तीर चलाए तो हसबोन का इलाका दीबोन तक बरबाद हुआ। हमने नुफ़ह तक सब कुछ तबाह किया, वह नुफ़ह जिसका इलाका मीदबा तक है।”

31 यों इसराईल अमोरियों के मुल्क में आबाद हुआ।

32 वहाँ से मूसा ने अपने जासूस याज़ेर शहर भेजे। वहाँ भी अमोरी रहते थे। इसराईलियों ने याज़ेर और उसके इर्दगिर्द के शहरों पर भी कब्ज़ा किया और वहाँ के अमोरियों को निकाल दिया।

33 इसके बाद वह मुडकर बसन की तरफ बढ़े। तब बसन का बादशाह ओज अपनी तमाम फ़ौज लेकर उनसे लड़ने के लिए शहर इदरई आया।

34 उस वक़्त रब ने मूसा से कहा, “ओज से न डरना। मैं उसे, उस की तमाम फ़ौज और उसका मुल्क तेरे हवाले कर चुका हूँ। उसके साथ वही सुलूक कर जो तूने अमोरियों के बादशाह सीहोन के साथ किया, जिसका दास्ल-हुकूमत हसबोन था।”

35 इसराईलियों ने ओज, उसके बेटों और तमाम फ़ौज को हलाक कर दिया। कोई भी न बचा। फिर उन्होंने बसन के मुल्क पर कब्ज़ा कर लिया।

22

बलक बिलाम को इसराईल पर लानत भेजने के लिए बुलाना है

1 इसके बाद इसराईली मोआब के मैदानों में पहुँचकर दरियाए-यरदन के मशरिक्की किनारे पर यरीह के आमने-सामने ख़ैमाज़न हुए।

2 मोआब के बादशाह बलक बिन सफ़ोर को मालूम हुआ कि इसराईलियों ने अमोरियों के साथ क्या कुछ किया है।

3 मोआबियों ने यह भी देखा कि इसराईली बहुत ज़्यादा हैं, इसलिए उन पर दहशत छा गई।

4 उन्होंने मिदियानियों के बुज़ुर्गों से बात की, “अब यह हज़ूम उस तरह हमारे इर्दगिर्द का इलाका चट कर जाएगा जिस तरह बैल मैदान की घास चट कर जाता है।”

5 तब बलक ने अपने कासिद फ़तोर शहर को भेजे जो दरियाए-फ़ुरात पर वाके था और जहाँ बिलाम बिन बओर अपने वतन में रहता था। कासिद उसे बुलाने के लिए उसके पास पहुँचे और उसे बलक का पैगाम सुनाया, “एक कौम मिसर से निकल आई है जो रूप-ज़मीन पर छाकर मेरे करीब ही आबाद हुई है।

6 इसलिए आएँ और इन लोगों पर लानत भेजें, क्योंकि वह मुझसे ज़्यादा ताकतवर हैं। फिर शायद मैं उन्हें शिकस्त देकर मुल्क से भगा सकूँ। क्योंकि मैं

जानता हूँ कि जिन्हें आप बरकत देते हैं उन्हें बरकत मिलती है और जिन पर आप लानत भेजते हैं उन पर लानत आती है।”

7 यह पैगाम लेकर मोआब और मिदियान के बुजुर्ग रवाना हुए। उनके पास इनाम के पैसे थे। बिलाम के पास पहुँचकर उन्होंने उसे बलक का पैगाम सुनाया।

8 बिलाम ने कहा, “रात यहाँ गुज़ारें। कल मैं आपको बता दूँगा कि रब इसके बारे में क्या फ़रमाता है।” चुनौचे मोआबी सरदार उसके पास ठहर गए।

9 रात के वक़्त अल्लाह बिलाम पर ज़ाहिर हुआ। उसने पूछा, “यह आदमी कौन है जो तेरे पास आए है?”

10 बिलाम ने जवाब दिया, “मोआब के बादशाह बलक बिन सफ़ोर ने मुझे पैगाम भेजा है,

11 ‘जो क़ौम मिसर से निकल आई है वह रूए-ज़मीन पर छा गई है। इसलिए आएँ और मेरे लिए उन पर लानत भेजें। फिर शायद मैं उनसे लड़कर उन्हें भगा देने में कामयाब हो जाऊँ।’”

12 रब ने बिलाम से कहा, “उनके साथ न जाना। तुझे उन पर लानत भेजने की इजाज़त नहीं है, क्योंकि उन पर मेरी बरकत है।”

13 अगली सुबह बिलाम जाग उठा तो उसने बलक के सरदारों से कहा, “अपने वतन वापस चले जाएँ, क्योंकि रब ने मुझे आपके साथ जाने की इजाज़त नहीं दी।”

14 चुनौचे मोआबी सरदार ख़ाली हाथ बलक के पास वापस आए। उन्होंने कहा, “बिलाम हमारे साथ आने से इनकार करता है।”

15 तब बलक ने और सरदार भेजे जो पहलेवालों की निसबत तादाद और ओहदे के लिहाज़ से ज़्यादा थे।

16 वह बिलाम के पास जाकर कहने लगे, “बलक बिन सफ़ोर कहते हैं कि कोई भी बात आपको मेरे पास आने से न रोके,

17 क्योंकि मैं आपको बड़ा इनाम दूँगा। आप जो भी कहेंगे मैं करने के लिए तैयार हूँ। आएँ तो सही और मेरे लिए उन लोगों पर लानत भेजें।”

18 लेकिन बिलाम ने जवाब दिया, “अगर बलक अपने महल को चाँदी और सोने से भरकर भी मुझे दे तो भी मैं रब अपने खुदा के फ़रमान की खिलाफ़वर्ज़ी नहीं कर सकता, खाह बात छोटी हो या बड़ी।

19 आप दूसरे सरदारों की तरह रात यहाँ गुज़ारें। इतने में मैं मालूम करूँगा कि रब मुझे मज़ीद क्या कुछ बताता है।”

20 उस रात अल्लाह बिलाम पर ज़ाहिर हुआ और कहा, “चूँकि यह आदमी तुझे बुलाने आए है इसलिए उनके साथ चला जा। लेकिन सिर्फ़ वही कुछ करना जो मैं तुझे बताऊँगा।”

बिलाम की गधी

21 सुबह को बिलाम ने उठकर अपनी गधी पर ज़ीन कसा और मोआबी सरदारों के साथ चल पड़ा।

22 लेकिन अल्लाह निहायत गुस्से हुआ कि वह जा रहा है, इसलिए उसका फ़रिश्ता उसका मुकाबला करने के लिए रास्ते में खड़ा हो गया। बिलाम अपनी गधी पर सवार था और उसके दो नौकर उसके साथ चल रहे थे।

23 जब गधी ने देखा कि रब का फ़रिश्ता अपने हाथ में तलवार थामे हुए रास्ते में खड़ा है तो वह रास्ते से हटकर खेत में चलने लगी। बिलाम उसे मारते मारते रास्ते पर वापस ले आया।

24 फिर वह अंगूर के दो बाग़ों के दरमियान से गुज़रने लगे। रास्ता तंग था, क्योंकि वह दोनों तरफ़ बाग़ों की चारदीवारी से बंद था। अब रब का फ़रिश्ता वहाँ खड़ा हुआ।

25 गधी यह देखकर चारदीवारी के साथ साथ चलने लगी, और बिलाम का पाँव कुचला गया। उसने उसे दुबारा मारा।

26 रब का फ़रिश्ता आगे निकला और तीसरी मरतबा रास्ते में खड़ा हो गया। अब रास्ते से हट जाने की कोई गुंजाइश नहीं थी, न दाईं तरफ़ और न बाईं तरफ़।

27 जब गधी ने रब का फ़रिश्ता देखा तो वह लेट गई। बिलाम को गुस्सा आ गया, और उसने उसे अपनी लाठी से ख़ूब मारा।

28 तब रब ने गधी को बोलने दिया, और उसने बिलाम से कहा, “मैंने आपसे क्या ग़लत सुलूक किया है कि आप मुझे अब तीसरी दफ़ा पीट रहे हैं?”

29 बिलाम ने जवाब दिया, “तूने मुझे बेवकूफ़ बनाया है! काश मेरे हाथ में तलवार होती तो मैं अभी तुझे ज़बह कर देता!”

30 गधी ने बिलाम से कहा, “क्या मैं आपकी गधी नहीं हूँ जिस पर आप आज तक सवार होते रहे हैं? क्या मुझे कभी ऐसा करने की आदत थी?” उसने कहा, “नहीं।”

31 फिर रब ने बिलाम की आँखें खोलीं और उसने रब के फ़रिश्ते को देखा जो अब तक हाथ में तलवार थामे हुए रास्ते में खड़ा था। बिलाम ने मुँह के बल गिरकर सिजदा किया।

32 रब के फ़रिश्ते ने पूछा, “तूने तीन बार अपनी गधी को क्यों पीटा? मैं तेरे मुकाबले में आया हूँ, क्योंकि जिस तरफ तू बढ रहा है उसका अंजाम बुरा है।

33 गधी तीन मरतबा मुझे देखकर मेरी तरफ से हट गई। अगर वह न हटती तो तू उस वक़्त हलाक हो गया होता अगरचे मैं गधी को छोड़ देता।”

34 बिलाम ने रब के फ़रिश्ते से कहा, “मैंने गुनाह किया है। मुझे मालूम नहीं था कि तू मेरे मुकाबले में रास्ते में खड़ा है। लेकिन अगर मेरा सफ़र तुझे बुरा लगे तो मैं अब वापस चला जाऊँगा।”

35 रब के फ़रिश्ते ने कहा, “इन आदमियों के साथ अपना सफ़र जारी रख। लेकिन सिर्फ वही कुछ कहना जो मैं तुझे बताऊँगा।” चुनाँचे बिलाम ने बलक के सरदारों के साथ अपना सफ़र जारी रखा।

36 जब बलक को खबर मिली कि बिलाम आ रहा है तो वह उससे मिलने के लिए मोआब के उस शहर तक गया जो मोआब की सरहद दरियाए-अरनोन पर बाँके है।

37 उसने बिलाम से कहा, “क्या मैंने आपको इतला नहीं भेजी थी कि आप ज़रूर आएँ? आप क्यों नहीं आए? क्या आपने सोचा कि मैं आपको मुनासिब इनाम नहीं दे पाऊँगा?”

38 बिलाम ने जवाब दिया, “बहरहाल अब मैं पहुँच गया हूँ। लेकिन मैं सिर्फ वही कुछ कह सकता हूँ जो अल्लाह ने पहले ही मेरे मुँह में डाल दिया है।”

39 फिर बिलाम बलक के साथ किरियत-हुसात गया।

40 वहाँ बलक ने गाय-बैल और भेड़-बकरियाँ कुरबान करके उनके गोशत में से बिलाम और उसके साथवाले सरदारों को दे दिया।

41 अगली सुबह बलक बिलाम को साथ लेकर एक ऊँची जगह पर चढ गया जिसका नाम बामोत-बाल था। वहाँ से इसराईली खैमागाह का किनारा नज़र आता था।

23

बिलाम की पहली बरकत

1 बिलाम ने कहा, “यहाँ मेरे लिए सात कुरबानगाहें बनाएँ। साथ साथ मेरे लिए सात बैल और सात मेंढे तैयार कर रखें।”

2 बलक ने ऐसा ही किया, और दोनों ने मिलकर हर कुरबानगाह पर एक बैल और एक मेंढा चढ़ाया।

3 फिर बिलाम ने बलक से कहा, “यहाँ अपनी कुरबानी के पास खड़े रहें। मैं कुछ फासले पर जाता हूँ, शायद रब मुझसे मिलने आए। जो कुछ वह मुझ पर जाहिर करे मैं आपको बता दूँगा।”

यह कहकर वह एक ऊँचे मकाम पर चला गया जो हरियाली से बिलकुल महसूस था।

4 वहाँ अल्लाह बिलाम से मिला। बिलाम ने कहा, “मैंने सात कुरबानगाहें तैयार करके हर कुरबानगाह पर एक बैल और एक मेंढा कुरबान किया है।”

5 तब रब ने उसे बलक के लिए पैगाम दिया और कहा, “बलक के पास वापस जा और उसे यह पैगाम सुना।”

6 बिलाम बलक के पास वापस आया जो अब तक मोआबी सरदारों के साथ अपनी कुरबानी के पास खड़ा था।

7 बिलाम बोल उठा,

“बलक मुझे अराम से यहाँ लाया है, मोआबी बादशाह ने मुझे मशरिकी पहाड़ों से बुलाकर कहा, ‘आओ, याकूब पर मेरे लिए लानत भेजो। आओ, इसराइल को बददुआ दो।’

8 मैं किस तरह उन पर लानत भेजूँ जिन पर अल्लाह ने लानत नहीं भेजी? मैं किस तरह उन्हें बददुआ दूँ जिन्हें रब ने बददुआ नहीं दी?

9 मैं उन्हें चट्टानों की चोटी से देखता हूँ, पहाड़ियों से उनका मुशाहदा करता हूँ। वाकई यह एक ऐसी क्रौम है जो दूसरों से अलग रहती है। यह अपने आपको दूसरी क्रौमों से मुमताज़ समझती है।

10 कौन याकूब की औलाद को गिन सकता है जो गर्द की मानिंद बेशुमार है। कौन इसराइलियों का चौथा हिस्सा भी गिन सकता है? रब करे कि मैं रास्तबाज़ों की मौत मरूँ, कि मेरा अंजाम उनके अंजाम जैसा अच्छा हो।”

11 बलक ने बिलाम से कहा, “आपने मेरे साथ क्या किया है? मैं आपको अपने दुश्मनों पर लानत भेजने के लिए लाया और आपने उन्हें अच्छी-खासी बरकत दी है।”

12 बिलाम ने जवाब दिया, “क्या लाजिम नहीं कि मैं वही कुछ बोलूँ जो रब ने बताने को कहा है?”

बिलाम की दूसरी बरकत

13 फिर बलक ने उससे कहा, “आएँ, हम एक और जगह जाएँ जहाँ से आप इसराईली क्रौम को देख सकेंगे, गो उनकी खैमागाह का सिर्फ किनारा ही नज़र आएगा। आप सबको नहीं देख सकेंगे। वहीं से उन पर मेरे लिए लानत भेजें।”

14 यह कहकर वह उसके साथ पिसगा की चोटी पर चढ़कर पहरेदारों के मैदान तक पहुँच गया। वहाँ भी उसने सात कुरबानगाहें बनाकर हर एक पर एक बैल और एक मेंढा कुरबान किया।

15 बिलाम ने बलक से कहा, “यहाँ अपनी कुरबानगाह के पास खड़े रहें। मैं कुछ फासले पर जाकर रब से मिलूँगा।”

16 रब बिलाम से मिला। उसने उसे बलक के लिए पैगाम दिया और कहा, “बलक के पास वापस जा और उसे यह पैगाम सुना दे।”

17 वह वापस चला गया। बलक अब तक अपने सरदारों के साथ अपनी कुरबानी के पास खड़ा था। उसने उससे पूछा, “रब ने क्या कहा?”

18 बिलाम ने कहा, “ऐ बलक, उठो और सुनो। ऐ सफोर के बेटे, मेरी बात पर गौर करो।

19 अल्लाह आदमी नहीं जो झूट बोलता है। वह इनसान नहीं जो कोई फैसला करके बाद में पछताए। क्या वह कभी अपनी बात पर अमल नहीं करता? क्या वह कभी अपनी बात पूरी नहीं करता?

20 मुझे बरकत देने को कहा गया है। उसने बरकत दी है और मैं यह बरकत रोक नहीं सकता।

21 याकूब के घराने में खराबी नज़र नहीं आती, इसराईल में दुख दिखाई नहीं देता। रब उसका खुदा उसके साथ है, और क्रौम बादशाह की खुशी में नारे लगाती है।

22 अल्लाह उन्हें मिसर से निकाल लाया, और उन्हें जंगली बैल की ताकत हासिल है।

23 याकूब के घराने के खिलाफ जादूगरी नाकाम है, इसराईल के खिलाफ गैबदानी बेफायदा है। अब याकूब के घराने से कहा जाएगा, ‘अल्लाह ने कैसा काम किया है!’

24 इसराईली क्रौम शेरनी की तरह उठती और शेरबबर की तरह खड़ी हो जाती है। जब तक वह अपना शिकार न खा ले वह आराम नहीं करता, जब तक वह मारे हुए लोगों का खून न पी ले वह नहीं लेटता।”

25 यह सुनकर बलक ने कहा, “अगर आप उन पर लानत भेजने से इनकार करें, कम अज़ कम उन्हें बरकत तो न दें।”

26 बिलाम ने जवाब दिया, “क्या मैंने आपको नहीं बताया था कि जो कुछ भी रब कहेगा मैं वही करूँगा?”

बिलाम की तीसरी बरकत

27 तब बलक ने बिलाम से कहा, “आएँ, मैं आपको एक और जगह ले जाऊँ। शायद अल्लाह राज़ी हो जाए कि आप मेरे लिए वहाँ से उन पर लानत भेजें।”

28 वह उसके साथ फ़गूर पहाड़ पर चढ़ गया। उस की चोटी से यरदन की वादी का जुनूबी हिस्सा यशीमोन दिखाई दिया।

29 बिलाम ने उससे कहा, “मेरे लिए यहाँ सात कुरबानगाहें बनाकर सात बैल और सात मेंढे तैयार कर रखें।”

30 बलक ने ऐसा ही किया। उसने हर एक कुरबानगाह पर एक बैल और एक मेंढा कुरबान किया।

24

1 अब बिलाम को उस बात का पूरा यक़ीन हो गया कि रब को पसंद है कि मैं इसराईलियों को बरकत दूँ। इसलिए उसने इस मरतबा पहले की तरह जादूगरी का तरीका इस्तेमाल न किया बल्कि सीधा रेगिस्तान की तरफ़ सूख किया

2 जहाँ इसराईल अपने अपने क़बीलों की तरतीब से ख़ैमाज़न था। यह देखकर अल्लाह का रूह उस पर नाज़िल हुआ,

3 और वह बोल उठा,

“बिलाम बिन बओर का पैग़ाम सुनो, उसके पैग़ाम पर ग़ौर करो जो साफ़ साफ़ देखता है,

4 उसका पैग़ाम जो अल्लाह की बातें सुन लेता है, कादिरे-मुतलक की रोया को देख लेता है और ज़मीन पर गिरकर पोशीदा बातें देखता है।

5 ऐ याक़ूब, तेरे ख़ैमे कितने शानदार हैं! ऐ इसराईल, तेरे घर कितने अच्छे हैं!

6 वह दूर तक फैली हुई वादियों की मानिंद, नहर के किनारे लगे बागों की मानिंद, रब के लगाए हुए ऊद के दरख्तों की मानिंद, पानी के किनारे लगे देवदार के दरख्तों की मानिंद हैं।

7 उनकी बालटियों से पानी छलकता रहेगा, उनके बीज को कसरत का पानी मिलेगा। उनका बादशाह अजाज से ज़्यादा ताकतवर होगा, और उनकी सलतनत सरफ़राज़ होगी।

8 अल्लाह उन्हें मिसर से निकाल लाया, और उन्हें जंगली बैल की-सी ताकत हासिल है। वह मुखालिफ़ क्रौमों को हड़प करके उनकी हड्डियाँ चूर चूर कर देते हैं, वह अपने तीर चलाकर उन्हें मार डालते हैं।

9 इसराईल शेरबबर या शेरनी की मानिंद है। जब वह दबककर बैठ जाए तो कोई भी उसे छेड़ने की ज़रूरत नहीं करता। जो तुझे बरकत दे उसे बरकत मिले, और जो तुझ पर लानत भेजे उस पर लानत आए।”

10 यह सुनकर बलक आपे से बाहर हुआ। उसने ताली बजाकर अपनी हिकारत का इज़हार किया और कहा, “मैंने तुझे इसलिए बुलाया था कि तू मेरे दुश्मनों पर लानत भेजे। अब तूने उन्हें तीनों बार बरकत ही दी है।

11 अब दफ़ा हो जा! अपने घर वापस भाग जा! मैंने कहा था कि बड़ा इनाम दूँगा। लेकिन रब ने तुझे इनाम पाने से रोक दिया है।”

12 बिलाम ने जवाब दिया, “क्या मैंने उन लोगों को जिन्हें आपने मुझे बुलाने के लिए भेजा था नहीं बताया था

13 कि अगर बलक अपने महल को चाँदी और सोने से भरकर भी मुझे दे दे तो भी मैं रब की किसी बात की खिलाफ़रज़ी नहीं कर सकता, खाह मेरी नीयत अच्छी हो या बुरी। मैं सिर्फ़ वह कुछ कर सकता हूँ जो अल्लाह फ़रमाता है।

14 अब मैं अपने वतन वापस चला जाता हूँ। लेकिन पहले मैं आपको बता देता हूँ कि आखिरकार यह क्रौम आपकी क्रौम के साथ क्या कुछ करेगी।”

बिलाम की चौथी बरकत

15 वह बोल उठा,

“बिलाम बिन बओर का पैगाम सुनो, उसका पैगाम जो साफ़ साफ़ देखता है,

16 उसका पैगाम जो अल्लाह की बातें सुन लेता और अल्लाह तआला की मरज़ी को जानता है, जो क्रादिर-मुतलक की रोया को देख लेता और ज़मीन पर गिरकर पोशीदा बातें देखता है।

17 जिसे मैं देख रहा हूँ वह इस वक्त नहीं है। जो मुझे नज़र आ रहा है वह करीब नहीं है। याकूब के घराने से सितारा निकलेगा, और इसराईल से असाए-शाही उठेगा जो मोआब के माथों और सेत के तमाम बेटों की खोपड़ियों को पाश पाश करेगा।

18 अदोम उसके कब्जे में आएगा, उसका दुश्मन सईर उस की मिलकियत बनेगा जबकि इसराईल की ताकत बढ़ती जाएगी।

19 याकूब के घराने से एक हुक्मरान निकलेगा जो शहर के बचे हुआओं को हलाक कर देगा।”

बिलाम के आखिरी पैगाम

20 फिर बिलाम ने अमालीक को देखा और कहा,

“अमालीक क्रौमों में अक्वल था, लेकिन आखिरकार वह खत्म हो जाएगा।”

21 फिर उसने कीनियों को देखा और कहा,

“तेरी सुकूनतगाह मुस्तहकम है, तेरा चट्टान में बना घोंसला मज़बूत है।

22 लेकिन तू तबाह हो जाएगा जब असूर तुझे गिरिफ्तार करेगा।”

23 एक और दफ़ा उसने बात की,

“हाय, कौन ज़िंदा रह सकता है जब अल्लाह यों करेगा?

24 किन्तीम के साहिल से बहरी जहाज़ आएँगे जो असूर और इबर को ज़लील करेंगे, लेकिन वह ख़ुद भी हलाक हो जाएंगे।”

25 फिर बिलाम उठकर अपने घर वापस चला गया। बलक भी वहाँ से चला गया।

25

मोआब इसराईलियों की आजमाइश करता है

1 जब इसराईली शिन्तीम में रह रहे थे तो इसराईली मर्द मोआबी औरतों से ज़िनाकारी करने लगे।

2 यह ऐसा हुआ कि मोआबी औरतें अपने देवताओं को कुरबानियाँ पेश करते वक्त इसराईलियों को शरीक होने की दावत देने लगीं। इसराईली दावत कबूल करके कुरबानियों से खाने और देवताओं को सिजदा करने लगे।

3 इस तरीक़े से इसराईली मोआबी देवता बनाम बाल-फ़गूर की पूजा करने लगे, और रब का ग़ज़ब उन पर आन पड़ा।

4 उसने मूसा से कहा, “इस क्रौम के तमाम राहनुमाओं को सजाए-मौत देकर सूरज की रौशनी में रब के सामने लटका, वरना रब का इसराईलियों पर से गज़ब नहीं टलेगा।”

5 चुनौचे मूसा ने इसराईल के काज़ियों से कहा, “लाज़िम है कि तुममें से हर एक अपने उन आदमियों को जान से मार दे जो बाल-फ़गूर देवता की पूजा में शरीक हुए हैं।”

6 मूसा और इसराईल की पूरी जमात मुलाकात के ख़ैमे के दरवाज़े पर जमा होकर रोने लगे। इतफ़ाक़ से उसी वक़्त एक आदमी वहाँ से गुज़रा जो एक मिदियानी औरत को अपने घर ले जा रहा था।

7 यह देखकर हासून का पोता फ़ीनहास बिन इलियज़र जमात से निकला और नेज़ा पकड़कर

8 उस इसराईली के पीछे चल पड़ा। वह औरत समेत अपने ख़ैमे में दाख़िल हुआ तो फ़ीनहास ने उनके पीछे पीछे जाकर नेज़ा इतने ज़ोर से मारा कि वह दोनों में से गुज़र गया। उस वक़्त वबा फैलने लगी थी, लेकिन फ़ीनहास के इस अमल से वह स्क़ गई।

9 तो भी 24,000 अफ़राद मर चुके थे।

10 रब ने मूसा से कहा,

11 “हासून के पोते फ़ीनहास बिन इलियज़र ने इसराईलियों पर मेरा गुस्सा ठंडा कर दिया है। मेरी ग़ैरत अपनाकर वह इसराईल में दीगर माबूदों की पूजा को बरदाशत न कर सका। इसलिए मेरी ग़ैरत ने इसराईलियों को नेस्तो-नाबूद नहीं किया।

12 लिहाज़ा उसे बता देना कि मैं उसके साथ सलामती का अहद कायम करता हूँ।

13 इस अहद के तहत उसे और उस की औलाद को अबद तक इमाम का ओहदा हासिल रहेगा, क्योंकि अपने खुदा की खातिर ग़ैरत खाकर उसने इसराईलियों का कफ़ारा दिया।”

14 जिस आदमी को मिदियानी औरत के साथ मार दिया गया उसका नाम ज़िमरी बिन सलू था, और वह शमौन के क़बीले के एक आबाई घराने का सरपरस्त था।

15 मिदियानी औरत का नाम कज़बी था, और वह सूर की बेटी थी जो मिदियानियों के एक आबाई घराने का सरपरस्त था।

16 रब ने मूसा से कहा,

17 “मिदियानियों को दुश्मन करार देकर उन्हें मार डालना।

18 क्योंकि उन्होंने अपनी चालाकियों से तुम्हारे साथ दुश्मन का-सा सुलूक किया, उन्होंने तुम्हें बाल-फ़ागूर की पूजा करने पर उकसाया और तुम्हें अपनी बहन मिदियानी सरदार की बेटी कज़बी के ज़रीए जिसे वबा फैलते वक़्त मार दिया गया बहकाया।”

26

दूसरी मर्दमशुमारी

1 वबा के बाद रब ने मूसा और हारून के बेटे इलियज़र से कहा,

2 “पूरी इसराइली जमात की मर्दमशुमारी उनके आबाई घरानों के मुताबिक़ करना। उन तमाम मर्दों को गिनना जो 20 साल या इससे ज़ायद के हैं और जो जंग लड़ने के क़ाबिल हैं।”

3-4 मूसा और इलियज़र ने इसराइलियों को बताया कि रब ने उन्हें क्या हुक्म दिया है। चुनाँचे उन्होंने मोआब के मैदानी इलाक़े में यरीह के सामने, लेकिन दरियाए-यरदन के मशरिकी किनारे पर मर्दमशुमारी की। यह वह इसराइली आदमी थे जो मिसर से निकले थे।

5-7 इसराइल के पहलौठे रुबिन के क़बीले के 43,730 मर्द थे। क़बीले के चार कुंभे हनूकी, फ़ल्लुवी, हसरोनी और करमी रुबिन के बेटों हनूक, फ़ल्लू, हसरोन और करमी से निकले हुए थे।

8 रुबिन का बेटा फ़ल्लू इलियाब का बाप था

9 जिसके बेटे नमुएल, दातन और अबीराम थे।

दातन और अबीराम वही लोग थे जिन्हें जमात ने चुना था और जिन्होंने क्रोरह के गुरोह समेत मूसा और हारून से झगड़ते हुए ख़ुद रब से झगड़ा किया।

10 उस वक़्त ज़मीन ने अपना मुँह खोलकर उन्हें क्रोरह समेत हड़प कर लिया था। उसके 250 साथी भी मर गए थे जब आग ने उन्हें भस्म कर दिया। यों वह सब इसराइल के लिए इबरतअंगेज़ मिसाल बन गए थे।

11 लेकिन क्रोरह की पूरी नसल मिटाई नहीं गई थी।

12-14 शमौन के क़बीले के 22,200 मर्द थे। क़बीले के पाँच कुंभे नमुएली, यमीनी, यकीनी, ज़ारही और साऊली शमौन के बेटों नमुएल, यमीन, यकीन, ज़ारह और साऊल से निकले हुए थे।

15-18 जद के कबीले के 40,500 मर्द थे। कबीले के सात कुंभे सफोनी, हज्जी, सूनी, उज्जनी, एरी, अरूदी और अरेली जद के बेटों सफोन, हज्जी, सूनी, उज्जनी, एरी, अरूदी और अरेली से निकले हुए थे।

19-22 यहदाह के कबीले के 76,500 मर्द थे। यहदाह के दो बेटे एर और ओनान मिसर आने से पहले कनान में मर गए थे। कबीले के तीन कुंभे सेलानी, फ़ारसी और ज़ारही यहदाह के बेटों सेला, फ़ारस और ज़ारह से निकले हुए थे।

फ़ारस के दो बेटों हसरोन और हमूल से दो कुंभे हसरोनी और हमूली निकले हुए थे।

23-25 इशकार के कबीले के 64,300 मर्द थे। कबीले के चार कुंभे तोलई, फुव्वी, यसूबी और सिमरोनी इशकार के बेटों तोला, फुव्वा, यसूब और सिमरोन से निकले हुए थे।

26-27 ज़बूलून के कबीले के 60,500 मर्द थे। कबीले के तीन कुंभे सरदी, ऐलोनी और यहलियेली ज़बूलून के बेटों सरद, ऐलोन और यहलियेल से निकले हुए थे।

28 यूसुफ़ के दो बेटों मनस्सी और इफ़राईम के अलग अलग कबीले बने।

29-34 मनस्सी के कबीले के 52,700 मर्द थे। कबीले के आठ कुंभे मकीरी, जिलियादी, इयज़री, खलक्की, असरियेली, सिकमी, समीदाई और हिफ़री थे। मकीरी मनस्सी के बेटे मकीर से जबकि जिलियादी मकीर के बेटे जिलियाद से निकले हुए थे। बाक़ी कुंभे जिलियाद के छः बेटों इयज़र, खलक्क, असरियेल, सिकम, समीदा और हिफ़र से निकले हुए थे।

हिफ़र सिलाफ़िहाद का बाप था। सिलाफ़िहाद का कोई बेटा नहीं बल्कि पाँच बेटियाँ महलाह, नुआह, हजलाह, मिलकाह और तिरज़ा थीं।

35-37 इफ़राईम के कबीले के 32,500 मर्द थे। कबीले के चार कुंभे सूतलही, बकरी, तहनी और ईरानी थे। पहले तीन कुंभे इफ़राईम के बेटों सूतलह, बकर और तहन से जबकि ईरानी सूतलह के बेटे ईरान से निकले हुए थे।

38-41 बिनयमीन के कबीले के 45,600 मर्द थे। कबीले के सात कुंभे बालाई, अशबेली, अखीरामी, सूफ़ामी, हफ़ामी, अरदी और नामानी थे। पहले पाँच कुंभे बिनयमीन के बेटों बाला, अशबेल, अखीराम, सूफ़ाम और हफ़ाम से जबकि अरदी और नामानी बाला के बेटों से निकले हुए थे।

42-43 दान के कबीले के 64,400 मर्द थे। सब दान के बेटे सूहाम से निकले हुए थे, इसलिए सूहामी कहलाते थे।

44-47 आशर के कबीले के 53,400 मर्द थे। कबीले के पाँच कुंभे यिमनी, इसवी, बरीई, हिबरी और मलकियेली थे। पहले तीन कुंभे आशर के बेटों यिमना, इसवी और बरिया से जबकि बाकी बरिया के बेटों हिबर और मलकियेल से निकले हुए थे। आशर की एक बेटी बनाम सिरह भी थी।

48-50 नफताली के कबीले के 45,400 मर्द थे। कबीले के चार कुंभे यहसियेली, जूनी, यिसरी और सिल्लीमी नफताली के बेटों यहसियेल, जूनी, यिसर और सिल्लीम से निकले हुए थे।

51 इसराईली मर्दों की कुल तादाद 6,01,730 थी।

52 रब ने मूसा से कहा,

53 “जब मुल्के-कनान को तकसीम किया जाएगा तो ज़मीन इनकी तादाद के मुताबिक देना है।

54 बड़े कबीलों को छोटे की निसबत ज्यादा ज़मीन दी जाए। हर कबीले का इलाका उस की तादाद से मुताबिकत रखे।

55-56 कूरा डालने से फ़ैसला किया जाए कि हर कबीले को कहाँ ज़मीन मिलेगी। लेकिन हर कबीले के इलाके का रकबा इस पर मबनी हो कि कबीले के कितने अफ़राद हैं।”

57 लावी के कबीले के तीन कुंभे ज़ैरसोनी, क्रिहाती और मिरारी लावी के बेटों ज़ैरसोन, क्रिहात और मिरारी से निकले हुए थे।

58 इसके अलावा लिबनी, हिब्रूनी, महली, मूशी और कोरही भी लावी के कुंभे थे। क्रिहात अमराम का बाप था।

59 अमराम ने लावी औरत यूकबिद से शादी की जो मिसर में पैदा हुई थी। उनके दो बेटे हारून और मूसा और एक बेटी मरियम पैदा हुए।

60 हारून के बेटे नदब, अबीह, इलियज़र और इतमर थे।

61 लेकिन नदब और अबीह रब को बख़ूर की नाजायज़ कुरबानी पेश करने के बाइस मर गए।

62 लावियों के मर्दों की कुल तादाद 23,000 थी। इनमें वह सब शामिल थे जो एक माह या इससे जायद के थे। उन्हें दूसरे इसराईलियों से अलग गिना गया, क्योंकि उन्हें इसराईल में मीरास में ज़मीन नहीं मिलनी थी।

63 यों मूसा और इलियज़र ने मोआब के मैदानी इलाके में यरीह के सामने लेकिन दरियाए-यरदन के मशरिकी किनारे पर इसराइलियों की मर्दुमशुमारी की।

64 लोगों को गिनते गिनते उन्हें मालूम हुआ कि जो लोग दशते-सीन में मूसा और हारून की पहली मर्दुमशुमारी में गिने गए थे वह सब मर चुके हैं।

65 रब ने कहा था कि वह सबके सब रेगिस्तान में मर जाएंगे, और ऐसा ही हुआ था। सिर्फ कालिब बिन यफुन्ना और यशुअ बिन नून ज़िंदा रहे।

27

सिलाफ़िहाद की बेटियाँ

1 सिलाफ़िहाद की पाँच बेटियाँ महलाह, नुआह, हुजलाह, मिलकाह और तिरज़ा थीं। सिलाफ़िहाद यूसुफ़ के बेटे मनस्सी के कुंभे का था। उसका पूरा नाम सिलाफ़िहाद बिन हिफ़र बिन जिलियाद बिन मकीर बिन मनस्सी बिन यूसुफ़ था।

2 सिलाफ़िहाद की बेटियाँ मुलाक्रात के ख़ैमे के दरवाज़े पर आकर मूसा, इलियज़र इमाम और पूरी जमात के सामने खड़ी हुईं। उन्होंने कहा,

3 “हमारा बाप रेगिस्तान में फ़ौत हुआ। लेकिन वह कोरह के उन साथियों में से नहीं था जो रब के खिलाफ़ मुत्तहिद हुए थे। वह इस सबब से न मरा बल्कि अपने जाती गुनाह के बाइस। जब वह मर गया तो उसका कोई बेटा नहीं था।

4 क्या यह ठीक है कि हमारे खानदान में बेटा न होने के बाइस हमें ज़मीन न मिले और हमारे बाप का नामो-निशान मिट जाए? हमें भी हमारे बाप के दीगर रिश्तेदारों के साथ ज़मीन दें।”

5 मूसा ने उनका मामला रब के सामने पेश किया

6 तो रब ने उससे कहा,

7 “जो बात सिलाफ़िहाद की बेटियाँ कर रही हैं वह दुस्त है। उन्हें ज़रूर उनके बाप के रिश्तेदारों के साथ ज़मीन मिलनी चाहिए। उन्हें बाप का विरसा मिल जाए।

8 इसराइलियों को भी बताना कि जब भी कोई आदमी मर जाए जिसका बेटा न हो तो उस की बेटों को उस की मीरास मिल जाए।

9 अगर उस की बेटों भी न हो तो उसके भाइयों को उस की मीरास मिल जाए।

10 अगर उसके भाई भी न हों तो उसके बाप के भाइयों को उस की मीरास मिल जाए।

11 अगर यह भी न हों तो उसके सबसे करीबी रिश्तेदार को उस की मीरास मिल जाए। वह उस की जाती मिलकियत होगी। यह उसूल इसराईलियों के लिए कानूनी हैसियत रखता है। वह इसे वैसा मानें जैसा रब ने मूसा को हुक्म दिया है।”

यशुअ को मूसा का जा-नशीन मुकर्रर किया जाता है

12 फिर रब ने मूसा से कहा, “अबारीम के पहाड़ी सिलसिले के इस पहाड़ पर चढकर उस मुल्क पर निगाह डाल जो मैं इसराईलियों को दूँगा।

13 उसे देखने के बाद तू भी अपने भाई हारून की तरह कूच करके अपने बापदादा से जा मिलेगा,

14 क्योंकि तुम दोनों ने दशते-सीन में मेरे हुक्म की खिलाफवरजी की। उस वक्त जब पूरी जमात ने मरीबा में मेरे खिलाफ गिला-शिकवा किया तो तूने चट्टान से पानी निकालते वक्त लोगों के सामने मेरी कुदूसियत कायम न रखी।” (मरीबा दशते-सीन के कादिस में चश्मा है।)

15 मूसा ने रब से कहा,

16 “ऐ रब, तमाम जानों के खुदा, जमात पर किसी आदमी को मुकर्रर कर

17 जो उनके आगे आगे जंग के लिए निकले और उनके आगे आगे वापस आ जाए, जो उन्हें बाहर ले जाए और वापस ले आए। वरना रब की जमात उन भेड़ों की मानिंद होगी जिनका कोई चरवाहा न हो।”

18 जवाब में रब ने मूसा से कहा, “यशुअ बिन नून को चुन ले जिसमें मेरा रूह है, और अपना हाथ उस पर रख।

19 उसे इलियज़र इमाम और पूरी जमात के सामने खड़ा करके उनके रूबरू ही उसे राहनुमाई की जिम्मादारी दे।

20 अपने इख्तियार में से कुछ उसे दे ताकि इसराईल की पूरी जमात उस की इताअत करे।

21 रब की मरजी जानने के लिए वह इलियज़र इमाम के सामने खड़ा होगा तो इलियज़र रब के सामने ऊरीम और तुम्मीम इस्तेमाल करके उस की मरजी दरियाफ्त करेगा। उसी के हुक्म पर यशुअ और इसराईल की पूरी जमात खैमागाह से निकलेंगे और वापस आएँगे।”

22 मूसा ने ऐसा ही किया। उसने यशुअ को चुनकर इलियज़र और पूरी जमात के सामने खड़ा किया।

23 फिर उसने उस पर अपने हाथ रखकर उसे राहनुमाई की जिम्मादारी सौंपी जिस तरह रब ने उसे बताया था।

28

रोज़मर्रा की कुरबानियाँ

1 रब ने मूसा से कहा,

2 “इसराईलियों को बताना, खयाल रखो कि तुम मुकर्ररा औक्रात पर मुझे जलनेवाली कुरबानियाँ पेश करो। यह मेरी रोटी हैं और इनकी खुशबू मुझे पसंद है।

3 रब को जलनेवाली यह कुरबानी पेश करना :

रोज़ाना भेड़ के दो यकसाला बच्चे जो बेऐब हों पूरे तौर पर जला देना।

4 एक को सुबह के वक़्त पेश करना और दूसरे को सूरज के डूबने के ऐन बाद।

5 भेड़ के बच्चे के साथ गल्ला की नज़र भी पेश की जाए यानी डेढ किलोग्राम बेहतरीन मैदा जो एक लिटर जैतून के कूटकर निकाले हुए तेल के साथ मिलाया गया हो।

6 यह रोज़मर्रा की कुरबानी है जो पूरे तौर पर जलाई जाती है और पहली दफ़ा सीना पहाड़ पर चढ़ाई गई। इस जलनेवाली कुरबानी की खुशबू रब को पसंद है।

7-8 साथ ही एक लिटर शराब भी नज़र के तौर पर कुरबानगाह पर डाली जाए। सुबह और शाम की यह कुरबानियाँ दोनों ही इस तरीके से पेश की जाएँ।

सबत यानी हफ़ते की कुरबानी

9 सबत के दिन भेड़ के दो और बच्चे चढ़ाना। वह भी बेऐब और एक साल के हों। साथ ही मै और गल्ला की नज़रें भी पेश की जाएँ। गल्ला की नज़र के लिए 3 किलोग्राम बेहतरीन मैदा तेल के साथ मिलाया जाए।

10 भस्म होनेवाली यह कुरबानी हर हफ़ते के दिन पेश करनी है। यह रोज़मर्रा की कुरबानियों के अलावा है।

हर माह के पहले दिन की कुरबानी

11 हर माह के शुरू में रब को भस्म होनेवाली कुरबानी के तौर पर दो जवान बैल, एक मेंढा और भेड़ के सात यकसाला बच्चे पेश करना। सब बग़ैर नुक्स के हों।

12 हर जानवर के साथ गल्ला की नज़र पेश करना जिसके लिए तेल में मिलाया गया बेहतरीन मैदा इस्तेमाल किया जाए। हर बैल के साथ साढ़े 4 किलोग्राम, हर मेंढे के साथ 3 किलोग्राम

13 और भेड़ के हर बच्चे के साथ डेढ़ किलोग्राम मैदा पेश करना। भस्म होनेवाली यह कुरबानियाँ रब को पसंद हैं।

14 इन कुरबानियों के साथ मै की नज़र भी कुरबानगाह पर डालना यानी हर बैल के साथ दो लिटर, हर मेंढे के साथ सवा लिटर और भेड़ के हर बच्चे के साथ एक लिटर मै पेश करना। यह कुरबानी साल में हर महीने के पहले दिन के मौके पर पेश करनी है।

15 इस कुरबानी और रोज़मर्रा की कुरबानियों के अलावा रब को एक बकरा गुनाह की कुरबानी के तौर पर पेश करना।

फ़सह की कुरबानियाँ

16 पहले महीने के चौधवें दिन फ़सह की ईद मनाई जाए।

17 अगले दिन पूरे हफ़्ते की वह ईद शुरू होती है जिसके दौरान तुम्हें सिर्फ़ बेख़मीरी रोटी खानी है।

18 पहले दिन काम न करना बल्कि मुक़द्दस इजतिमा के लिए इकट्ठे होना।

19 रब के हज़ूर भस्म होनेवाली कुरबानी के तौर पर दो जवान बैल, एक मेंढा और भेड़ के सात तकसाला बच्चे पेश करना। सब बग़ैर नुक्स के हों।

20 हर जानवर के साथ गल्ला की नज़र भी पेश करना जिसके लिए तेल के साथ मिलाया गया बेहतरीन मैदा इस्तेमाल किया जाए। हर बैल के साथ साढ़े 4 किलोग्राम, हर मेंढे के साथ 3 किलोग्राम

21 और भेड़ के हर बच्चे के साथ डेढ़ किलोग्राम मैदा पेश करना।

22 गुनाह की कुरबानी के तौर पर एक बकरा भी पेश करना ताकि तुम्हारा कफ़ारा दिया जाए।

23-24 इन तमाम कुरबानियों को ईद के दौरान हर रोज़ पेश करना। यह रोज़मर्रा की भस्म होनेवाली कुरबानियों के अलावा हैं। इस ख़ुराक की ख़ुशबू रब को पसंद है।

25 सातवें दिन काम न करना बल्कि मुक़द्दस इजतिमा के लिए इकट्ठे होना।

फ़सल की कटाई की ईद की कुरबानियाँ

26 फ़सल की कटाई के पहले दिन की ईद पर जब तुम रब को अपनी फ़सल की पहली पैदावार पेश करते हो तो काम न करना बल्कि मुक़द्दस इजतिमा के लिए इकट्ठे होना।

27-29 उस दिन दो जवान बैल, एक मेंढा और भेड़ के सात यकसाला बच्चे कुरबानगाह पर पूरे तौर पर जला देना। इसके साथ गल्ला और मै की वही नज़रें पेश करना जो फ़सल की ईद पर भी पेश की जाती हैं।

30 इसके अलावा रब को एक बकरा गुनाह की कुरबानी के तौर पर चढाना।

31 यह तमाम कुरबानियाँ रोज़मर्रा की भस्म होनेवाली कुरबानियों और उनके साथवाली गल्ला और मै की नज़रों के अलावा हैं। वह बेऐब हों।

29

नए साल की ईद की कुरबानियाँ

1 सातवें माह के पंद्रहवें दिन भी काम न करना बल्कि मुक़द्दस इजतिमा के लिए इकट्ठे होना। उस दिन नरसिगे फूँके जाएँ।

2 रब को भस्म होनेवाली कुरबानी पेश की जाए जिसकी खुशबू उसे पसंद हो यानी एक जवान बैल, एक मेंढा और भेड़ के सात यकसाला बच्चे। सब नुक़स के बग़ैर हों।

3 हर जानवर के साथ गल्ला की नज़र भी पेश करना जिसके लिए तेल के साथ मिलाया गया बेहतरीन मैदा इस्तेमाल किया जाए। बैल के साथ साढ़े 4 किलोग्राम, मेंढे के साथ 3 किलोग्राम

4 और भेड़ के हर बच्चे के साथ डेढ़ किलोग्राम मैदा पेश करना।

5 एक बकरा भी गुनाह की कुरबानी के तौर पर पेश करना ताकि तुम्हारा कफ़फ़ारा दिया जाए।

6 यह कुरबानियाँ रोज़ाना और हर माह के पहले दिन की कुरबानियों और उनके साथ की गल्ला और मै की नज़रों के अलावा हैं। इनकी खुशबू रब को पसंद है।

कफ़फ़ारा के दिन की कुरबानियाँ

7 सातवें महीने के दसवें दिन मुक़द्दस इजतिमा के लिए इकट्ठे होना। उस दिन काम न करना और अपनी जान को दुख देना।

8-11 रब को वही कुरबानियाँ पेश करना जो इसी महीने के पहले दिन पेश की जाती हैं। सिर्फ़ एक फ़रक़ है, उस दिन एक नहीं बल्कि दो बकरे गुनाह की कुरबानी

के तौर पर पेश किए जाएँ ताकि तुम्हारा कफ़फ़ारा दिया जाए। ऐसी कुरबानियाँ रब को पसंद हैं।

झोंपड़ियों की ईद की कुरबानियाँ

12 सातवें महीने के पंद्रहवें दिन भी काम न करना बल्कि मुक़द्दस इजतिमा के लिए इकट्ठे होना। सात दिन तक रब की ताज़ीम में ईद मनाना।

13 ईद के पहले दिन रब को 13 जवान बैल, 2 मेंढे और 14 भेड़ के एकसाला बच्चे भस्म होनेवाली कुरबानी के तौर पर पेश करना। इनकी खुशबू उसे पसंद है। सब नुक्स के बग़ैर हों।

14 हर जानवर के साथ ग़ल्ला की नज़र भी पेश करना जिसके लिए तेल से मिलाया गया बेहतराइन मैदा इस्तेमाल किया जाए। हर बैल के साथ साढ़े 4 किलोग्राम, हर मेंढे के साथ 3 किलोग्राम

15 और भेड़ के हर बच्चे के साथ डेढ़ किलोग्राम मैदा पेश करना।

16 इसके अलावा एक बकरा भी गुनाह की कुरबानी के तौर पर पेश करना। यह कुरबानियाँ रोज़ाना की भस्म होनेवाली कुरबानियों और उनके साथवाली ग़ल्ला और मै की नज़रों के अलावा हैं।

17-34 ईद के बाकी छः दिन यही कुरबानियाँ पेश करनी हैं। लेकिन हर दिन एक बैल कम हो यानी दूसरे दिन 12, तीसरे दिन 11, चौथे दिन 10, पाँचवें दिन 9, छठे दिन 8 और सातवें दिन 7 बैल। हर दिन गुनाह की कुरबानी के लिए बकरा और मामूल की रोज़ाना की कुरबानियाँ भी पेश करना।

35 ईद के आठवें दिन काम न करना बल्कि मुक़द्दस इजतिमा के लिए इकट्ठे होना।

36 रब को एक जवान बैल, एक मेंढा और भेड़ के सात एकसाला बच्चे भस्म होनेवाली कुरबानी के तौर पर पेश करना। इनकी खुशबू रब को पसंद है। सब नुक्स के बग़ैर हों।

37-38 साथ ही वह तमाम कुरबानियाँ भी पेश करना जो पहले दिन पेश की जाती हैं।

39 यह सब वही कुरबानियाँ हैं जो तुम्हें रब को अपनी ईदों पर पेश करनी हैं। यह उन तमाम कुरबानियों के अलावा हैं जो तुम दिली खुशी से या मन्नत मानकर देते हो, चाहे वह भस्म होनेवाली, ग़ल्ला की, मै की या सलामती की कुरबानियाँ क्यों न हों।”

40 मूसा ने रब की यह तमाम हिदायात इसराईलियों को बता दीं।

30

मन्नत मानने के क़वायद

- 1 फिर मूसा ने क़बीलों के सरदारों से कहा, “रब फ़रमाता है,
- 2 अगर कोई आदमी रब को कुछ देने की मन्नत माने या किसी चीज़ से परहेज़ करने की क़सम खाए तो वह अपनी बात पर क़ायम रहकर उसे पूरा करे।
- 3 अगर कोई जवान औरत जो अब तक अपने बाप के घर में रहती है रब को कुछ देने की मन्नत माने या किसी चीज़ से परहेज़ करने की क़सम खाए
- 4 तो लाज़िम है कि वह अपनी मन्नत या क़सम की हर बात पूरी करे। शर्त यह है कि उसका बाप उसके बारे में सुनकर एतराज़ न करे।
- 5 लेकिन अगर उसका बाप यह सुनकर उसे ऐसा करने से मना करे तो उस की मन्नत या क़सम मनसूख़ है, और वह उसे पूरा करने से बरी है। रब उसे मुआफ़ करेगा, क्योंकि उसके बाप ने उसे मना किया है।
- 6 हो सकता है कि किसी ग़ैरशादीशुदा औरत ने मन्नत मानी या किसी चीज़ से परहेज़ करने की क़सम खाई, चाहे उसने दानिस्ता तौर पर या बेसोचे-समझे ऐसा किया। इसके बाद उस औरत ने शादी कर ली।
- 7 शादीशुदा हालत में भी लाज़िम है कि वह अपनी मन्नत या क़सम की हर बात पूरी करे। शर्त यह है कि उसका शौहर इसके बारे में सुनकर एतराज़ न करे।
- 8 लेकिन अगर उसका शौहर यह सुनकर उसे ऐसा करने से मना करे तो उस की मन्नत या क़सम मनसूख़ है, और वह उसे पूरा करने से बरी है। रब उसे मुआफ़ करेगा।
- 9 अगर किसी बेवा या तलाक़शुदा औरत ने मन्नत मानी या किसी चीज़ से परहेज़ करने की क़सम खाई तो लाज़िम है कि वह अपनी हर बात पूरी करे।
- 10 अगर किसी शादीशुदा औरत ने मन्नत मानी या किसी चीज़ से परहेज़ करने की क़सम खाई
- 11 तो लाज़िम है कि वह अपनी हर बात पूरी करे। शर्त यह है कि उसका शौहर उसके बारे में सुनकर एतराज़ न करे।

12 लेकिन अगर उसका शौहर उसे ऐसा करने से मना करे तो उस की मन्नत या कसम मनसूख है। वह उसे पूरा करने से बरी है। रब उसे मुआफ़ करेगा, क्योंकि उसके शौहर ने उसे मना किया है।

13 चाहे बीवी ने कुछ देने की मन्नत मानी हो या किसी चीज़ से परहेज़ करने की कसम खाई हो, उसके शौहर को उस की तसदीक या उसे मनसूख करने का इख्तियार है।

14 अगर उसने अपनी बीवी की मन्नत या कसम के बारे में सुन लिया और अगले दिन तक एतराज़ न किया तो लाज़िम है कि उस की बीवी अपनी हर बात पूरी करे। शौहर ने अगले दिन तक एतराज़ न करने से अपनी बीवी की बात की तसदीक की है।

15 अगर वह इसके बाद यह मन्नत या कसम मनसूख करे तो उसे इस कुसूर के नतायज भुगतने पड़ेंगे।”

16 रब ने मूसा को यह हिदायात दी। यह ऐसी औरतों की मन्नतों या कसमों के उसूल हैं जो गैरशादीशुदा हालत में अपने बाप के घर में रहती हैं या जो शादीशुदा हैं।

31

मिदियानियों से जंग

1 रब ने मूसा से कहा,

2 “मिदियानियों से इसराईलियों का बदला ले। इसके बाद तू कूच करके अपने बापदादा से जा मिलेगा।”

3 चुनाँचे मूसा ने इसराईलियों से कहा, “हथियारों से अपने कुछ आदमियों को लैस करो ताकि वह मिदियान से जंग करके रब का बदला लें।

4 हर कबीले के 1,000 मर्द जंग लड़ने के लिए भेजो।”

5 चुनाँचे हर कबीले के 1,000 मुसल्लह मर्द यानी कुल 12,000 आदमी चुने गए।

6 तब मूसा ने उन्हें जंग लड़ने के लिए भेज दिया। उसने इलियज़र इमाम के बेटे फ़ीनहास को भी उनके साथ भेजा जिसके पास मक़दिस की कुछ चीज़ें और एलान करने के बिगुल थे।

7 उन्होंने रब के हुक्म के मुताबिक़ मिदियानियों से जंग की और तमाम आदमियों को मौत के घाट उतार दिया।

8 इनमें मिदियानियों के पाँच बादशाह इवी, रकम, सूर, हर और रबा थे। बिलाम बिन बओर को भी जान से मार दिया गया।

9 इसराइलियों ने मिदियानी औरतों और बच्चों को गिरिफ्तार करके उनके तमाम गाय-बैल, भेड़-बकरियाँ और माल लूट लिया।

10 उन्होंने उनकी तमाम आबादियों को खैमागाहों समेत जलाकर राख कर दिया।

11-12 फिर वह तमाम लूटा हुआ माल कैदियों और जानवरों समेत मूसा, इलियज़र इमाम और इसराइल की पूरी जमात के पास ले आए जो खैमागाह में इंतज़ार कर रहे थे। अभी तक वह मोआब के मैदानी इलाके में दरियाए-यरदन के मशरिक्की किनारे पर यरीह के सामने ठहरे हुए थे।

13 मूसा, इलियज़र और जमात के तमाम सरदार उनका इस्तक्रबाल करने के लिए खैमागाह से निकले।

14 उन्हें देखकर मूसा को हज़ार हज़ार और सौ सौ अफ़राद पर मुकर्रर अफ़सरान पर गुस्सा आया।

15 उसने कहा, “आपने तमाम औरतों को क्यों बचाए रखा?”

16 उन्हीं ने बिलाम के मशवरे पर फ़ग़ूर में इसराइलियों को रब से दूर कर दिया था। उन्हीं के सबब से रब की वबा उसके लोगों में फैल गई।

17 चुनौचे अब तमाम लडकों को जान से मार दो। उन तमाम औरतों को भी मौत के घाट उतारना जो कुँवारियाँ नहीं हैं।

18 लेकिन तमाम कुँवारियों को बचाए रखना।

19 जिसने भी किसी को मार दिया या किसी लाश को लुआ है वह सात दिन तक खैमागाह के बाहर रहे। तीसरे और सातवें दिन अपने आपको अपने कैदियों समेत गुनाह से पाक-साफ़ करना।

20 हर लिबास और हर चीज़ को पाक-साफ़ करना जो चमड़े, बकरियों के बालों या लकड़ी की हो।”

21 फिर इलियज़र इमाम ने जंग से वापस आनेवाले मर्दों से कहा, “जो शरीअत रब ने मूसा को दी उसके मुताबिक़

22-23 जो भी चीज़ जल नहीं जाती उसे आग में से गुज़ार देना ताकि पाक-साफ़ हो जाए। उसमें सोना, चाँदी, पीतल, लोहा, टीन और सीसा शामिल है। फिर उस पर नापाकी दूर करने का पानी छिड़कना। बाक़ी तमाम चीज़ें पानी में से गुज़ार देना ताकि वह पाक-साफ़ हो जाएँ।

24 सातवें दिन अपने लिबास को धोना तो तुम पाक-साफ होकर खैमागाह में दाखिल हो सकते हो।”

लूटे हुए माल की तक्रसीम

25 रब ने मूसा से कहा,

26 “तमाम क़ैदियों और लूटे हुए जानवरों को गिन। इसमें इलियज़र इमाम और क़बायली कुंबों के सरपरस्त तेरी मदद करें।

27 सारा माल दो बराबर के हिस्सों में तक्रसीम करना, एक हिस्सा फ़ौजियों के लिए और दूसरा बाक़ी जमात के लिए हो।

28 फ़ौजियों के हिस्से के पाँच पाँच सौ क़ैदियों में से एक एक निकालकर रब को देना। इसी तरह पाँच पाँच सौ बैलों, गधों, भेड़ों और बकरियों में से एक एक निकालकर रब को देना।

29 उन्हें इलियज़र इमाम को देना ताकि वह उन्हें रब को उठानेवाली क़ुरबानी के तौर पर पेश करे।

30 बाक़ी जमात के हिस्से के पचास पचास क़ैदियों में से एक एक निकालकर रब को देना, इसी तरह पचास पचास बैलों, गधों, भेड़ों और बकरियों या दूसरे जानवरों में से भी एक एक निकालकर रब को देना। उन्हें उन लावियों को देना जो रब के मक़दिस को सँभालते हैं।”

31 मूसा और इलियज़र ने ऐसा ही किया।

32-34 उन्होंने 6,75,000 भेड़-बकरियाँ, 72,000 गाय-बैल और 61,000 गधे गिने।

35 इनके अलावा 32,000 क़ैदी कुँवारियाँ भी थीं।

36-40 फ़ौजियों को तमाम चीज़ों का आधा हिस्सा मिल गया यानी 3,37,500 भेड़-बकरियाँ, 36,000 गाय-बैल, 30,500 गधे और 16,000 क़ैदी कुँवारियाँ। इनमें से उन्होंने 675 भेड़-बकरियाँ, 72 गाय-बैल, 61 गधे और 32 लड़कियाँ रब को दीं।

41 मूसा ने रब का यह हिस्सा इलियज़र इमाम को उठानेवाली क़ुरबानी के तौर पर दे दिया, जिस तरह रब ने हुक्म दिया था।

42-47 बाक़ी जमात को भी लूटे हुए माल का आधा हिस्सा मिल गया। मूसा ने पचास पचास क़ैदियों और जानवरों में से एक एक निकालकर उन लावियों को दे

दिया जो रब का मक़दिस सँभालते थे। उसने वैसा ही किया जैसा रब ने हुक्म दिया था।

48 फिर वह अफ़सर मूसा के पास आए जो लशकर के हज़ार हज़ार और सौ सौ आदमियों पर मुक़रर थे।

49 उन्होंने उससे कहा, “आपके खादिमों ने उन फ़ौजियों को गिन लिया है जिन पर वह मुक़रर हैं, और हमें पता चल गया कि एक भी कम नहीं हुआ।

50 इसलिए हम रब को सोने का तमाम ज़ेवर कुरबान करना चाहते हैं जो हमें फतह पाने पर मिला था मसलन सोने के बाज़ूबंद, कंगन, मुहर लगाने की अंगूठियाँ, बालियाँ और हार। यह सब कुछ हम रब को पेश करना चाहते हैं ताकि रब के सामने हमारा कफ़ारा हो जाए।”

51 मूसा और इलियज़र इमाम ने सोने की तमाम चीज़ें उनसे ले लीं।

52 जो चीज़ें उन्होंने अफ़सरान के लूटे हुए माल में से रब को उठानेवाली कुरबानी के तौर पर पेश कीं उनका पूरा वज़न तक्रीबन 190 किलोग्राम था।

53 सिर्फ़ अफ़सरान ने ऐसा किया। बाक़ी फ़ौजियों ने अपना लूट का माल अपने लिए रख लिया।

54 मूसा और इलियज़र अफ़सरान का यह सोना मुलाकात के ख़ैमे में ले आए ताकि वह रब को उस की क़ौम की याद दिलाता रहे।

32

दरियाए-यरदन के मशरिकी किनारे पर आबाद कबीले

1 रुबिन और जद के कबीलों के पास बहुत-से मवेशी थे। जब उन्होंने देखा कि याज़ेर और जिलियाद का इलाका मवेशी पालने के लिए अच्छा है

2 तो उन्होंने मूसा, इलियज़र इमाम और जमात के राहनुमाओं के पास आकर कहा,

3-4 “जिस इलाके को रब ने इसराइल की जमात के आगे आगे शिकस्त दी है वह मवेशी पालने के लिए अच्छा है। अतारात, दीबोन, याज़ेर, निमरा, हसबोन, इलियाली, सबाम, नबू और बरून जो इसमें शामिल हैं हमारे काम आएँगे, क्योंकि आपके खादिमों के पास मवेशी हैं।

5 अगर आपकी नज़रे-करम हम पर हो तो हमें यह इलाका दिया जाए। यह हमारी मिलकियत बन जाए और हमें दरियाए-यरदन को पार करने पर मजबूर न किया जाए।”

6 मूसा ने जद और रूबिन के अफराद से कहा, “क्या तुम यहाँ पीछे रहकर अपने भाइयों को छोड़ना चाहते हो जब वह जंग लड़ने के लिए आगे निकलेंगे?”

7 इस वक़्त जब इसराईली दरियाए-यरदन को पार करके उस मुल्क में दाखिल होनेवाले हैं जो रब ने उन्हें दिया है तो तुम क्यों उनकी हौसलाशिकनी कर रहे हो?

8 तुम्हारे बापदादा ने भी यही कुछ किया जब मैंने उन्हें क्रादिस-बरनीअ से मुल्क के बारे में मालूमात हासिल करने के लिए भेजा।

9 इसकाल की वादी में पहुँचकर मुल्क की तफ़तीश करने के बाद उन्होंने इसराईलियों की हौसलाशिकनी की ताकि वह उस मुल्क में दाखिल न हों जो रब ने उन्हें दिया था।

10 उस दिन रब ने गुस्से में आकर क्रसम खाई,

11 ‘उन आदमियों में से जो मिसर से निकल आए हैं कोई उस मुल्क को नहीं देखेगा जिसका वादा मैंने क्रसम खाकर इब्राहीम, इसहाक और याकूब से किया था। क्योंकि उन्होंने पूरी वफ़ादारी से मेरी पैरवी न की। सिर्फ़ वह जिनकी उम्र उस वक़्त 20 साल से कम है दाखिल होंगे।’

12 बुजुर्गों में से सिर्फ़ कालिब बिन यफुन्ना कनिज्जी और यशुअ बिन नून मुल्क में दाखिल होंगे, इसलिए कि उन्होंने पूरी वफ़ादारी से मेरी पैरवी की।’

13 उस वक़्त रब का गज़ब उन पर आन पडा, और उन्हें 40 साल तक रेगिस्तान में मारे मारे फिरना पडा, जब तक कि वह तमाम नसल खत्म न हो गई जिसने उसके नज़दीक ग़लत काम किया था।

14 अब तुम गुनाहगारों की औलाद अपने बापदादा की जगह खड़े होकर रब का इसराईल पर गुस्सा मज़ीद बढ़ा रहे हो।

15 अगर तुम उस की पैरवी से हटोगे तो वह दुबारा इन लोगों को रेगिस्तान में रहने देगा, और तुम इनकी हलाकत का बाइस बनोगे।”

16 इसके बाद रूबिन और जद के अफ़राद दुबारा मूसा के पास आए और कहा, “हम यहाँ फ़िलहाल अपने मवेशी के लिए बाड़े और अपने बाल-बच्चों के लिए शहर बनाना चाहते हैं।

17 इसके बाद हम मुसल्लह होकर इसराईलियों के आगे आगे चलेंगे और हर एक को उस की अपनी जगह तक पहुँचाएँगे। इतने में हमारे बाल-बच्चे हमारे शहरों की फ़सीलों के अंदर मुल्क के मुखालिफ़ बाशिदों से महफूज़ रहेंगे।

18 हम उस वक़्त तक अपने घरों को नहीं लौटेंगे जब तक हर इसराईली को

उस की मौरूसी ज़मीन न मिल जाए।

19 दूसरे, हम खुद उनके साथ दरियाए-यरदन के मगरिब में मीरास में कुछ नहीं पाएँगे, क्योंकि हमें अपनी मौरूसी ज़मीन दरियाए-यरदन के मशरिकी किनारे पर मिल चुकी है।”

20 यह सुनकर मूसा ने कहा, “अगर तुम ऐसा ही करोगे तो ठीक है। फिर रब के सामने जंग के लिए तैयार हो जाओ

21 और सब हथियार बाँधकर रब के सामने दरियाए-यरदन को पार करो। उस वक़्त तक न लौटो जब तक रब ने अपने तमाम दुश्मनों को अपने आगे से निकाल न दिया हो।

22 फिर जब मुल्क पर रब का कब्ज़ा हो गया होगा तो तुम लौट सकोगे। तब तुमने रब और अपने हमवतन भाइयों के लिए अपने फ़रायज़ अदा कर दिए होंगे, और यह इलाका रब के सामने तुम्हारा मौरूसी हक़ होगा।

23 लेकिन अगर तुम ऐसा न करो तो फिर तुम रब ही का गुनाह करोगे। यकीन जानो तुम्हें अपने गुनाह की सज़ा मिलेगी।

24 अब अपने बाल-बच्चों के लिए शहर और अपने मवेशियों के लिए बाड़े बना लो। लेकिन अपने वादे को ज़रूर पूरा करना।”

25 जद और रूबिन के अफ़राद ने मूसा से कहा, “हम आपके खादिम हैं, हम अपने आका के हुक्म के मुताबिक़ ही करेंगे।

26 हमारे बाल-बच्चे और मवेशी यही जिलियाद के शहरों में रहेंगे।

27 लेकिन आपके खादिम मुसल्लह होकर दरिया को पार करेंगे और रब के सामने जंग करेंगे। हम सब कुछ वैसा ही करेंगे जैसा हमारे आका ने हमें हुक्म दिया है।”

28 तब मूसा ने इलियज़र इमाम, यशुअ बिन नून और कबायली कुंबों के सरपरस्तों को हिदायत दी,

29 “लाज़िम है कि जद और रूबिन के मर्द मुसल्लह होकर तुम्हारे साथ ही रब के सामने दरियाए-यरदन को पार करें और मुल्क पर कब्ज़ा करें। अगर वह ऐसा करें तो उन्हें मीरास में जिलियाद का इलाका दो।

30 लेकिन अगर वह ऐसा न करें तो फिर उन्हें मुल्के-कनान ही में तुम्हारे साथ मौरूसी ज़मीन मिले।”

31 जद और रुबिन के अफराद ने इसरार किया, “आपके खादिम सब कुछ करेंगे जो रब ने कहा है।

32 हम मुसल्लह होकर रब के सामने दरियाए-यरदन को पार करेंगे और कनान के मुल्क में दाखिल होंगे, अगरचे हमारी मौरूसी जमीन यरदन के मशरिकी किनारे पर होगी।”

33 तब मूसा ने जद, रुबिन और मनस्सी के आधे कबीले को यह इलाका दिया। उसमें वह पूरा मुल्क शामिल था जिस पर पहले अमोरियों का बादशाह सीहोन और बसन का बादशाह ओज हुकूमत करते थे। इन शिकस्तखुरदा ममालिक के देहातों समेत तमाम शहर उनके हवाले किए गए।

34 जद के कबीले ने दीबोन, अतारात, अरोईर,

35 अतरात-शोफान, याज़ेर, युगबहा,

36 बैत-निमरा और बैत-हारान के शहरों को दुबारा तामीर किया। उन्होंने उनकी फ़सीलें बनाईं और अपने मवेशियों के लिए बाड़े भी।

37 रुबिन के कबीले ने हसबोन, इलियाली, किरियतायम,

38 नबू, बाल-मऊन और सिबमाह दुबारा तामीर किए। नबू और बाल-मऊन के नाम बदल गए, क्योंकि उन्होंने उन शहरों को नए नाम दिए जो उन्होंने दुबारा तामीर किए।

39 मनस्सी के बेटे मकीर की औलाद ने जिलियाद जाकर उस पर कब्ज़ा कर लिया और उसके तमाम अमोरी बाशिंदों को निकाल दिया।

40 चुनौचे मूसा ने मकीरियों को जिलियाद की सरज़मीन दे दी, और वह वहाँ आबाद हुए।

41 मनस्सी के एक आदमी बनाम याईर ने उस इलाके में कुछ बस्तियों पर कब्ज़ा करके उन्हें हव्वोत-याईर यानी ‘याईर की बस्तियाँ’ का नाम दिया।

42 इसी तरह उस कबीले के एक और आदमी बनाम नूबह ने जाकर कनात और उसके देहातों पर कब्ज़ा कर लिया। उसने शहर का नाम नूबह रखा।

33

इसराईल के सफ़र के मरहले

1 ज़ैल में उन जगहों के नाम हैं जहाँ जहाँ इसराईली कबीले अपने दस्तों के मुताबिक मूसा और हारून की राहनुमाई में मिसर से निकलकर ख़ैमाज़न हुए थे।

2 रब के हुक्म पर मूसा ने हर जगह का नाम कलमबंद किया जहाँ उन्होंने अपने खैमे लगाए थे। उन जगहों के नाम यह हैं :

3 पहले महीने के पंद्रहवें दिन इसराईली रामसीस से रवाना हुए। यानी फसह के दिन के बाद के दिन वह बड़े इख्तियार के साथ तमाम मिसरियों के देखते देखते चले गए।

4 मिसरी उस वक़्त अपने पहलौठों को दफ़न कर रहे थे, क्योंकि रब ने पहलौठों को मारकर उनके देवताओं की अदालत की थी।

5 रामसीस से इसराईली सुक्कात पहुँच गए जहाँ उन्होंने पहली मरतबा अपने डेरे लगाए।

6 वहाँ से वह एताम पहुँचे जो रेगिस्तान के किनारे पर वाके है।

7 एताम से वह वापस मुडकर फ़ी-हख़ीरोत की तरफ़ बड़े जो बाल-सफ़ोन के मशरिक़ में है। वह मिजदाल के करीब ख़ैमाज़न हुए।

8 फिर वह फ़ी-हख़ीरोत से कूच करके समुंदर में से गुज़र गए। इसके बाद वह तीन दिन एताम के रेगिस्तान में सफ़र करते करते मारा पहुँच गए और वहाँ अपने खैमे लगाए।

9 मारा से वह एलीम चले गए जहाँ 12 चश्मे और खजूर के 70 दरख़्त थे। वहाँ ठहरने के बाद

10 वह बहरे-कुलज़ुम के साहिल पर ख़ैमाज़न हुए,

11 फिर दश्ते-सीन में पहुँच गए।

12 उनके अगले मरहले यह थे : दुफ़क्रा,

13-37 अलूस, रफ़ीदीम जहाँ पीने का पानी दस्तयाब न था, दश्ते-सीना, कब्रोत-हतावा, हसीरात, रितमा, रिम्मोन-फ़ारस, लिबना, रिस्सा, कहीलाता, साफ़र पहाड़, हरादा, मक़हीलोत, तहत, तारह, मितक्रा, हशमूना, मौसीरोत, बनी-याक़ान, होर-हज्जिदजाद, युतबाता, अबरूना, अस्यून-जाबर, दश्ते-सीन में वाके कादिस और होर पहाड़ जो अदोम की सरहद पर वाके है।

38 वहाँ रब ने हासून इमाम को हुक्म दिया कि वह होर पहाड़ पर चढ़ जाए। वहीं वह पाँचवें माह के पहले दिन फ़ौत हुआ। इसराईलियों को मिसर से निकले 40 साल गुज़र चुके थे।

39 उस वक़्त हासून 123 साल का था।

40 उन दिनों में अरद के कनानी बादशाह ने सुना कि इसराईली मेरे मुल्क की तरफ़ बढ़ रहे हैं। वह कनान के जुनूब में हुक्मत करता था।

41-47 होर पहाड़ से खाना होकर इसराईली जैल की जगहों पर ठहरे : जलमूना, फूनोन, ओबोत, ऐये-अबारीम जो मोआब के इलाके में था, दीबोन-जद, अलमून-दिबलातायम और नबू के करीब वाके अबारीम का पहाड़ी इलाका।

48 वहाँ से उन्होंने यरदन की वादी में उतरकर मोआब के मैदानी इलाके में अपने डेरे लगाए। अब वह दरियाए-यरदन के मशरिकी किनारे पर यरीह शहर के सामने थे।

49 उनके खैमे बैत-यसीमोत से लेकर अबील-शित्तीम तक लगे थे।

तमाम कनानी बाशिंदों को निकालने का हुक्म

50 वहाँ रब ने मूसा से कहा,

51 “इसराईलियों को बताना कि जब तुम दरियाए-यरदन को पार करके मुल्के-कनान में दाखिल होगे

52 तो लाज़िम है कि तुम तमाम बाशिंदों को निकाल दो। उनके तराशे और ढाले हुए बूतों को तोड़ डालो और उनकी ऊँची जगहों के मंदिरों को तबाह करो।

53 मुल्क पर कब्ज़ा करके उसमें आबाद हो जाओ, क्योंकि मैंने यह मुल्क तुम्हें दे दिया है। यह मेरी तरफ से तुम्हारी मौरूसी मिलकियत है।

54 मुल्क को मुख्तलिफ़ कबीलों और खानदानों में कुरा डालकर तकसीम करना। हर खानदान के अफ़राद की तादाद का लिहाज़ रखना। बड़े खानदान को निसबतन ज़्यादा ज़मीन देना और छोटे खानदान को निसबतन कम ज़मीन।

55 लेकिन अगर तुम मुल्क के बाशिंदों को नहीं निकालोगे तो बचे हुए तुम्हारी आँखों में ख़ार और तुम्हारे पहलुओं में काँटे बनकर तुम्हें उस मुल्क में तंग करेंगे जिसमें तुम आबाद होगे।

56 फिर मैं तुम्हारे साथ वह कुछ करूँगा जो उनके साथ करना चाहता हूँ।”

34

मुल्के-कनान की सरहदें

1 रब ने मूसा से कहा,

2 “इसराईलियों को बताना कि जब तुम उस मुल्क में दाखिल होगे जो मैं तुम्हें मीरास में दूँगा तो उस की सरहदें यह होंगी :

3 उस की जुनूबी सरहद दशते-सीन में अदोम की सरहद के साथ साथ चलेगी। मशरिक में वह बहीराए-मुरदार के जुनूबी साहिल से शुरू होगी, फिर इन जगहों से होकर मगरिब की तरफ गुजरेगी :

4 दराए-अक्रब्बीम के जुनूब में से, दशते-सीन में से, कादिस-बरनीअ के जुनूब में से हसर-अदर और अज़मून में से।

5 वहाँ से वह मुडकर मिसर की सरहद पर वाके वादीए-मिसर के साथ साथ बहीराए-रूम तक पहुँचेगी।

6 उस की मगरिबी सरहद बहीराए-रूम का साहिल होगा।

7 उस की शिमाली सरहद बहीराए-रूम से लेकर इन जगहों से होकर मशरिक की तरफ गुजरेगी : होर पहाड़,

8 लबो-हमात, सिदाद,

9 जिफरून और हसर-एनान। हसर-एनान शिमाली सरहद का सबसे मशरिकी मकाम होगा।

10 उस की मशरिकी सरहद शिमाल में हसर-एनान से शुरू होगी। फिर वह इन जगहों से होकर जुनूब की तरफ गुजरेगी : सिफ्राम,

11 रिबला जो ऐन के मशरिक में है और किन्नरत यानी गलील की झील के मशरिक में वाके पहाड़ी इलाका।

12 इसके बाद वह दरियाए-यरदन के किनारे किनारे गुजरती हुई बहीराए-मुरदार तक पहुँचेगी। यह तुम्हारे मुल्क की सरहदें होंगी।”

13 मूसा ने इसराईलियों से कहा, “यह वही मुल्क है जिसे तुम्हें कुरा डालकर तकसीम करना है। रब ने हुक्म दिया है कि उसे बाकी साढे नौ कबीलों को देना है।

14 क्योंकि अढाई कबीलों के खानदानों को उनकी मीरास मिल चुकी है यानी रूबिन और जद के पूरे कबीले और मनस्सी के आधे कबीले को।

15 उन्हें यहाँ, दरियाए-यरदन के मशरिक में यरीह के सामने ज़मीन मिल चुकी है।”

मुल्क तकसीम करने के ज़िम्मादार आदमी

16 रब ने मूसा से कहा,

17 “इलियज़र इमाम और यशुअ बिन नून लोगों के लिए मुल्क तकसीम करें।

18 हर कबीले के एक एक राहनुमा को भी चुनना ताकि वह तकसीम करने में मदद करे। जिनको तुम्हें चुनना है उनके नाम यह हैं :

- 19 यहूदाह के कबीले का कालिब बिन यफुन्ना,
 20 शमौन के कबीले का समुएल बिन अम्मीहद,
 21 बिनयमीन के कबीले का इलीदाद बिन किस्लोन,
 22 दान के कबीले का बुक्की बिन युगली,
 23 मनस्सी के कबीले का हन्नियेल बिन अफूद,
 24 इफराईम के कबीले का क्रमुएल बिन सिफतान,
 25 ज़बूलून के कबीले का इलीसफन बिन फरनाक,
 26 इशकार के कबीले का फलतियेल बिन अज्जान,
 27 आशर के कबीले का अखीहद बिन शलूमी,
 28 नफताली के कबीले का फिदाहेल बिन अम्मीहद।”
 29 रब ने इन्हीं आदमियों को मुल्क को इसराईलियों में तकसीम करने की जिम्मादारी दी।

35

लावियों के लिए शहर

- 1 इसराईली अब तक मोआब के मैदानी इलाके में दरियाए-यरदन के मशरिकी किनारे पर यरीह के सामने थे। वहाँ रब ने मूसा से कहा,
 2 “इसराईलियों को बता दे कि वह लावियों को अपनी मिली हुई ज़मीनों में से रहने के लिए शहर दें। उन्हें शहरों के इर्दगिर्द मवेशी चराने की ज़मीन भी मिले।
 3 फिर लावियों के पास रहने के लिए शहर और अपने जानवर चराने के लिए ज़मीन होगी।
 4 चराने के लिए ज़मीन शहर के इर्दगिर्द होगी, और चारों तरफ का फासला फ़सीलों से 1,500 फुट हो।
 5 चराने की यह ज़मीन मुरब्बा शक्ल की होगी जिसके हर पहलू का फासला 3,000 फुट हो। शहर इस मुरब्बा शक्ल के बीच में हो। यह रकबा शहर के बाशिंदों के लिए हो ताकि वह अपने मवेशी चरा सकें।

गैरइरादी खूनेज़ी के लिए पनाह के शहर

- 6-7 लावियों को कुल 48 शहर देना। इनमें से छः पनाह के शहर मुकर्रर करना। उनमें ऐसे लोग पनाह ले सकेंगे जिनके हाथों गैरइरादी तौर पर कोई हलाक हुआ हो।

8 हर कबीला लावियों को अपने इलाके के रकबे के मुताबिक शहर दे। जिस कबीले का इलाका बड़ा है उसे लावियों को ज़्यादा शहर देने हैं जबकि जिस कबीले का इलाका छोटा है वह लावियों को कम शहर दे।”

9 फिर रब ने मूसा से कहा,

10 “इसराईलियों को बताना कि दरियाए-यरदन को पार करने के बाद

11 कुछ पनाह के शहर मुकर्रर करना। उनमें वह शख्स पनाह ले सकेगा जिसके हाथों गैरइरादी तौर पर कोई हलाक हुआ हो।

12 वहाँ वह इंतकाम लेनेवाले से पनाह ले सकेगा और जमात की अदालत के सामने खड़े होने से पहले मारा नहीं जा सकेगा।

13 इसके लिए छः शहर चुन लो।

14 तीन दरियाए-यरदन के मशरिक में और तीन मुल्के-कनान में हों।

15 यह छः शहर हर किसी को पनाह देंगे, चाहे वह इसराईली, परदेसी या उनके दरमियान रहनेवाला गैरशहरी हो। जिससे भी गैरइरादी तौर पर कोई हलाक हुआ हो वह वहाँ पनाह ले सकता है।

16-18 अगर किसी ने किसी को जान-बूझकर लोहे, पत्थर या लकड़ी की किसी चीज़ से मार डाला हो वह कातिल है और उसे सज़ाए-मौत देनी है।

19 मकतूल का सबसे करीबी रिश्तेदार उसे तलाश करके मार दे।

20-21 क्योंकि जो नफ़रत या दुश्मनी के बाइस जान-बूझकर किसी को यों धक्का दे, उस पर कोई चीज़ फेंक दे या उसे मुक्का मारे कि वह मर जाए वह कातिल है और उसे सज़ाए-मौत देनी है।

22 लेकिन वह कातिल नहीं है जिससे दुश्मनी के बाइस नहीं बल्कि इतफ़ाक से और गैरइरादी तौर पर कोई हलाक हुआ हो, चाहे उसने उसे धक्का दिया, कोई चीज़ उस पर फेंक दी

23 या कोई पत्थर उस पर गिरने दिया।

24 अगर ऐसा हुआ तो लाज़िम है कि जमात इन हिदायत के मुताबिक उसके और इंतकाम लेनेवाले के दरमियान फ़ैसला करे।

25 अगर मुल्ज़िम बेक़ुस्र है तो जमात उस की हिफ़ाज़त करके उसे पनाह के उस शहर में वापस ले जाए जिसमें उसने पनाह ली है। वहाँ वह मुक़द्दस तेल से मसह किए गए इमामे-आज़म की मौत तक रहे।

26 लेकिन अगर यह शख्स इससे पहले पनाह के शहर से निकले तो वह महफूज़ नहीं होगा।

27 अगर उसका इंतकाम लेनेवाले से सामना हो जाए तो इंतकाम लेनेवाले को उसे मार डालने की इजाजत होगी। अगर वह ऐसा करे तो बेकसूर रहेगा।

28 पनाह लेनेवाला इमामे-आज़म की वफ़ात तक पनाह के शहर में रहे। इसके बाद ही वह अपने घर वापस जा सकता है।

29 यह उसूल दायमी हैं। जहाँ भी तुम रहते हो तुम्हें हमेशा इन पर अमल करना है।

30 जिस पर क़त्ल का इलज़ाम लगाया गया हो उसे सिर्फ़ इस सूत में सज़ाए-मौत दी जा सकती है कि कम अज़ कम दो गवाह हों। एक गवाह काफ़ी नहीं है।

31 कातिल को ज़रूर सज़ाए-मौत देना। ख़ाह वह इससे बचने के लिए कोई भी मुआवज़ा दे उसे आज़ाद न छोड़ना बल्कि सज़ाए-मौत देना।

32 उस शख्स से भी पैसे क़बूल न करना जिससे ग़ैरइरादी तौर पर कोई हलाक हुआ हो और जो इस सबब से पनाह के शहर में रह रहा है। उसे इजाज़त नहीं कि वह पैसे देकर पनाह का शहर छोड़े और अपने घर वापस चला जाए। लाज़िम है कि वह इसके लिए इमामे-आज़म की वफ़ात का इंतज़ार करे।

33 जिस मुल्क में तुम रहते हो उस की मुक़द्दस हालत को नापाक न करना। जब किसी को उसमें क़त्ल किया जाए तो वह नापाक हो जाता है। जब इस तरह खून बहता है तो मुल्क की मुक़द्दस हालत सिर्फ़ उस शख्स के खून बहने से बहाल हो जाती है जिसने यह खून बहाया है। यानी मुल्क का सिर्फ़ कातिल की मौत से ही कफ़फ़ारा दिया जा सकता है।

34 उस मुल्क को नापाक न करना जिसमें तुम आबाद हो और जिसमें मैं सुकूनत करता हूँ। क्योंकि मैं रब हूँ जो इसराइलियों के दरमियान सुकूनत करता हूँ।”

36

एक क़बीले की मौस्सी ज़मीन शादी से दूसरे क़बीले में मुंतकिल नहीं हो सकती

1 एक दिन जिलियाद बिन मकीर बिन मनस्सी बिन यूसुफ़ के कुंभे से निकले हुए आबाई घरानों के सरपरस्त मूसा और उन सरदारों के पास आए जो दीगर आबाई घरानों के सरपरस्त थे।

2 उन्होंने कहा, “रब ने आपको हुक्म दिया था कि आप कुरा डालकर मुल्क को इसराईलियों में तकसीम करें। उस वक़्त उसने यह भी कहा था कि हमारे भाई सिलाफ़िहाद की बेटियों को उस की मौरूसी ज़मीन मिलनी है।

3 अगर वह इसराईल के किसी और क़बीले के मर्दों से शादी करें तो फिर यह ज़मीन जो हमारे क़बीले का मौरूसी हिस्सा है उस क़बीले का मौरूसी हिस्सा बनेगी और हम उससे महरूम हो जाएंगे। फिर हमारा क़बायली इलाका छोटा हो जाएगा।

4 और अगर हम यह ज़मीन वापस भी ख़रीदें तो भी वह अगले बहाली के साल में दूसरे क़बीले को वापस चली जाएगी जिसमें इन औरतों ने शादी की है। इस तरह वह हमेशा के लिए हमारे हाथ से निकल जाएगी।”

5 मूसा ने रब के हुक्म पर इसराईलियों को बताया, “जिलियाद के मर्द हक़-बजानिब हैं।

6 इसलिए रब की हिदायत यह है कि सिलाफ़िहाद की बेटियों को हर आदमी से शादी करने की इजाज़त है, लेकिन सिर्फ़ इस सूरत में कि वह उनके अपने क़बीले का हो।

7 इस तरह एक क़बीले की मौरूसी ज़मीन किसी दूसरे क़बीले में मुंतकिल नहीं होगी। लाज़िम है कि हर क़बीले का पूरा इलाका उसी के पास रहे।

8 जो भी बेटा मीरास में ज़मीन पाती है उसके लिए लाज़िम है कि वह अपने ही क़बीले के किसी मर्द से शादी करे ताकि उस की ज़मीन क़बीले के पास ही रहे।

9 एक क़बीले की मौरूसी ज़मीन किसी दूसरे क़बीले को मुंतकिल करने की इजाज़त नहीं है। लाज़िम है कि हर क़बीले का पूरा मौरूसी इलाका उसी के पास रहे।”

10-11 सिलाफ़िहाद की बेटियों महलाह, तिरज़ा, हुजलाह, मिलकाह और नुआह ने वैसा ही किया जैसा रब ने मूसा को बताया था। उन्होंने अपने चचाज़ाद भाइयों से शादी की।

12 चूँकि वह भी मनस्सी के क़बीले के थे इसलिए यह मौरूसी ज़मीन सिलाफ़िहाद के क़बीले के पास रही।

13 रब ने यह अहक़ाम और हिदायत इसराईलियों को मूसा की मारिफ़त दी जब वह मोआब के मैदानी इलाके में दरियाए-यरदन के मशरिफ़ी किनारे पर यरीह के सामने ख़ैमाज़न थे।

किताबे-मुकद्दस

**The Holy Bible in the Urdu language, Urdu Geo
Version, Hindi Script**

Copyright © 2019 Urdu Geo Version

Language: उर्दू (Urdu)

This translation is made available to you under the terms of the Creative Commons Attribution-Noncommercial-No Derivatives license 4.0.

You may share and redistribute this Bible translation or extracts from it in any format, provided that:

You include the above copyright and source information.

You do not sell this work for a profit.

You do not change any of the words or punctuation of the Scriptures.

Pictures included with Scriptures and other documents on this site are licensed just for use with those Scriptures and documents. For other uses, please contact the respective copyright owners.

2024-09-20

PDF generated using Haiola and XeLaTeX on 1 Jul 2025 from source files dated 20 Sep 2024

a1ee0020-7263-5fce-8289-9d7a7ac2d299